हिन्दू-मुस्लिम हिन्दुस्तानी

(समस्या का एक मात्र रचनात्मक हल)

ले०: 'रामकृष्ण'

मूल्य २)

प्रथम बार—२ जून, '४७

प्रकाश-मन्दिर
काशी (बनारस)
के लिए
साहित्य-सेवक-कार्यालय, जालपादेवी रोड, बनारस
ने प्रकाशित किया।

मुद्रक—
बजरंगबली 'विशारद'
श्रीसीताराम प्रेस, बनारस।

एक बात !

'हिन्दू-मुस्लिम-हिन्दुस्तानी' को किसी भूमिका या प्रस्तावना की अपेक्षा नहीं है। यह सारी पुस्तक ही उस जलती हुई आग की भूमिका है जिसमें आज सारा भारतवर्ष भस्मीभूत हो रहा है। इसमें केवल उन घटनाओं और विचारों को सूत्र-बद्ध कर दिया गया है जो आज हम मे से प्रत्येक के अनुभव का किषय बन रहा है।

परंतु प्रत्येक बात को, प्रत्येक घटना को भिन्न-भिन्न लोग भिन्न-भिन्न दृष्टि से देखते हैं। स्वभावतः मैं भी समस्या को अपने ही दृष्टि-कोण से देखता हूँ। फिर भी मुझे विश्वास है कि यदि पाठक गण निष्पक्षता पूर्वक विचार करेंगे तो अंत में वे उसी मंजिल पर पहुँचेंगे जहाँ मै पहुँचा हूँ। कम से कम, जबानी दलीलों को छोड़ कर, व्यावहारिक कार्य-क्रम के लिए तो मुझे दूसरा कोई मार्ग नजर आता ही नहीं। किसी को भी नहीं आयेगा। अतः मुझे कहना केवल इतना ही है कि आप अपनी 'धारणाओं (प्रेजुडिसेज) को छोड़ कर कृपया सारी पुस्तक को एक बार आद्योपांत पढ़ जाइये।

पुस्तक को आद्योपांत पढ़ना परम आवश्यक है क्योकि सारी समस्या पर तीन विभिन्न दृष्टि-कोणों से विचार किया गया है—हिन्दू, मुस्लिम, हिन्दुस्तानी। इनमे से किसी एक को अकेले पढ़ लेने से गलत फहमी पैदा होने का भय है। तीनों उसी एक

तार की लड़ियाँ हैं। इन तीनों को एक साथ रख कर देखने से ही कोई एक सच्चा चित्र बन सकता है।

पुस्तक बड़ी तेजी में लिखी गयी है। और छपी भी उतनी ही तेजी में है। मुझे जो कुछ कष्ट या परिश्रम हुआ है, उससे अधिक कष्ट श्री बजरंगबली गुप्त को हुआ है। उनके सम्पूर्ण सहयोग बिना इतनी तत्परता-पूर्वक पुस्तक को समाप्त करना असम्भव था। अतः मैं उनका आभारी हूँ। पुस्तक में प्रूफ-सम्बन्धी या जो भी अन्य दोष रह गये हैं, उनके लिए मैं स्वयं ही जिम्मेदार हूँ।

अंत में, यह पुस्तक किसी व्यक्ति विशेष से कत्तई सम्बन्ध नहीं रखती। इसमें जो कुछ भी है सारे देश के सम्बन्ध से ही आया है। अतः मुझे भरोसा है कोई भी सज्जन इसमें अपना अकेला चित्र देखने की चेष्टा न करेंगे।

काशी,
२-६-४७.

विनीत—
रा० कृ० श०

हिन्दू

१

मार्च '४७ की बात है। भोजन और वस्त्र की तंग-दस्ती होते हुए भी काशी भारत के अन्य अनेक स्थानों के समान ही, अभी-अभी होली मनाकर निवृत हुई थी। धूप ढल चली थी; लगभग ४-५ बजे का समय रहा होगा। मैं कुछ आवश्यक बात-चीत से फुर्सत पाकर निश्चित-सा बुलानाला की चौमुहानी से होते हुए शहर की मुख्य सड़क द्वारा चौक की ओर बढ़ा ही था कि दूकाने धड़ाधड़ बन्द होती नजर आयीं और लोग ऐसा भागे आ रहे थे मानो दर्जनों शेर उन्हें फाड़ खाने के लिए पीछे-पीछे दौड़ते चले आ रहे हैं। पैदल, एक्के पर, रिक्शे पर—जो जिस दशा मे था, उसी प्रकार भागने लगा था। लोग अपने ही आप भाग रहे थे, सो बात नहीं; हाथों के संकेत से, मुँह से चिल्ला-चिल्ला कर, दूसरों को भी भगा ले जाने की चेष्टा करते जा रहे थे। अजीब भगदड़ थी! हट्टे-कट्टे, जवान, पहलवान, मर्द ही मर्द तो थे सब के सब। बहुत मैंने पूछना चाहा कि आखिर बात क्या है पर वहाँ सुनता कौन था? लोगों के पाँव उखड़ चुके थे।

मैं हिन्दू हूँ, हिन्दुस्तान का निवासी हूँ, इसलिए हिन्दुस्तानी भी हूँ। उस भगदड़ में मेरे बहुत से हिन्दू मित्र और परिचित जन दिखलायी पड़े; बात को समझने के लिए ध्यान में रखना होगा कि इस भगोड़ी और आतंक ग्रस्त भीड़ में ९९ प्रतिशत हिन्दू ही थे। खैर, कइयों ने घबड़ा घबड़ा कर मुझसे पूछा—"कहाँ जा रहे हो?" मैंने उत्तर दिया—"जरा चौक तक जा रहा हूँ, क्यों, क्या बात है?" लोग बोले—"चौक में क्या धरा है? घर जाओ।" फिर वही प्रश्न—"आखिर, भाई बात क्या है?" बात मुझे यही बतायी गयी कि चौक में "खचाखच मच गयी थी", लोग भागे आ रहे थे, चौक की दूकानें बन्द हो चुकी थीं, चौक जाना बेकार था। खचाखच का मतलब हिन्दू-मुसलमान भिड़ गये थे। मैंने कहा—"नहीं जी, साँड़ लड़े होंगे।"

बात ऐसी ही थी; अभी दो-तीन मास पहले काशी लुक-छिप कर छुरे बाजी का मजा ले चुकी थी। यों तो देश भर में अँग्रेजी जादू ने आग लगा रखी थी, अनेकों स्थान पर 'खचा-खच' मची हुई थी, पर काशी में फिर वही धन्धा शुरू हो जायगा, मुझे ऐसा गुमान न था। इसी लिए मैंने कह दिया था कि साँड़ लड़े होंगे। सच पूछिये तो ऐसा कई बार देखा जा चुका है कि साँड़ लड़े हैं, लोग भागे हैं, और शोर मचा है कि—"हो गयी, हो गयी, चल गयी, चल गयी।"

खैर, इतना तो निश्चय हो ही गया कि साँड़ लड़े या आदमी, कुछ न कुछ बात अवश्य थी और मैं उसका पक्का पता पाने के लिए चौक की ओर झपटा। ज्यों-ज्यों मैं चौक के निकट पहुँचता गया भीड़ घनी होती गयी, क्योंकि चौक से तो लोगों ने

भागना शुरू किया था। चौक मे पहुँच कर मैने अजीब ही तमाशा देखा। एक्के, ताँगे और रिक्शे वालों की बन आयी थी। लोग पूछते कि चलोगे जी अमुक स्थान को; सवारी वाला झट तीन गुना, चार गुना करके दाम बोलता और लोग उछल कर बैठ जाते। सवारी वाला हवा हो जाता। यह सब हिन्दू थे। मुझे अब तक एक मुसलमान भी नही दिखलायी पड़ा जो तलवार लिए इन्हें मारने आ रहा हो। परन्तु 'अखण्ड हिन्दुस्तान' का दम भरने वाली वीर हिन्दू जाति तो भागने पर उतर आयी थी और चौक छोड़कर अपने-अपने घरो को भागी जा रही थी। मेरे ही समान कुछ और भी मूर्ख वहाँ थे और कह रहे थे—"भागो नही, घबड़ाओ नही, जरा थम कर, होश-हवाश से, जरा शान्तिपूर्वक।" परन्तु सुनने और समझने के लिए इनके पास दिमाग ही कहाँ रह गया था?

ध्यान पूर्वक सुनिये; हँसियेगा नही। मेरी नजर सामने ही चौक थाने पर गयी। वहाँ सैकड़ों मुसलमान एकत्र हो गये थे। देख-भाल और पूछ-ताछ करने से पता चला कि सबके सब घबड़ाये हुए थे और इस चिन्ता मे, इस कोशिश में, थे कि पुलिस वालो की मदद लेकर किसी तरह घर पहुँचें। उनके रास्ते भर में हिन्दुओं की बस्ती थी और उन्हें रत्ती भर भी हिम्मत नहीं थी कि वह हिन्दुओं के बीच से गुजरे। इन्ही डरे हुए लोगों से डर कर लोग भाग रहे थे। मेरे मुंह से अनायास निकल पड़ा—"वाह रे वीरो!"

चौक थाने से जरा और आगे बढ़ा। दालमण्डी का नुक्कड़ आया। वहाँ देखा कि इस ओर से उस छोर तक मुसलमानो की

भीड़ ठसाठस भरी हुई थी। यह सब भागनेवाले थे या लड़ने वाले, ठीक नहीं कह सकता। परन्तु इतना तो कह सकता हूँ कि चौक थाने में या आस-पास पुलिस या पुलिस का एक भी बच्चा नजर नहीं आ रहा था; हिन्दू लोग टोपी और चप्पल छोड़ कर भाग रहे थे। फिर उन हट्टे-कट्टे मुसलमानों की जमी-जमायी भीड़ खड़ी-खड़ी क्या कर रही थी? क्या लोग भागनेवाले हिन्दुओं का तमाशा देख रहे थे? परन्तु मजा तो यह था कि मुसलमान दालमण्डी के नुक्कड़ से एक कदम भी आगे नहीं बढ़ रहे थे। इधर सब हिन्दू थे। सारी बातों को एक साथ तौल कर मैंने यही समझा कि ये सब भी डरे हुए थे और अधिकाधिक आत्म-रक्षा के भाव से एकत्र हो गये थे।

डरे हुए लोगों से डरकर भागनेवालों का तमाशा देखता हुआ मैं कुछ और आगे बढ़ा। उधर भी डरे हुए हिन्दुओं की भीड़ थी, पर इतनी तेज दौड़ नहीं रही थी। दस-दस, पाँच-पाँच की झुण्ड में लोग हिन्दू गलियों से होते हुए घर निकल जाने की धुन में थे। यहाँ कुछ बात करने का मौका अवश्य मिला। अन्य लोगों के अतिरिक्त एक प्रसिद्ध 'जनसेवक' मित्र से भी मेरी बात हुई। यों तो सभी कह रहे थे कि अमुक स्थान पर मार दिया, अमुक स्थान पर मार दिया, यद्यपि इनमें से देखा एक ने भी नहीं था. परन्तु मेरे "जनसेवक" मित्र ने तो कहा—"बस, बस, पीछे ही, गली में एक हिन्दू को मार दिया है।"

वास्तव में, जिसने जहाँ तक बताया, यहां तक कि 'जन-सेवक' मित्र की भी रिपोर्ट गलत निकली। कुछ छुरे बाजियों

अवश्य हुई थीं, पर ठीक पता किसी को नहीं था कि कहाँ, किसने, किसको, मारा। हिन्दू मरा या मुसलमान।

इस तमाशे मे सब डरपोक या भगोड़े ही थे, सो बात नहीं। कुछ सचमुच लड़ाकू वीर भी थे, इन्हें मै बहादुर कह सकता हूँ, परंतु "Foolishly brave" अर्थात् मूर्ख बहादुर कहना ही अधिक उपयुक्त होगा। मेरा अभिप्राय कृपाणधारी सिक्खों से है। मूर्ख इसलिए कि १०—५ सिक्खों को मैंने अपनी-अपनी तलवार और कृपाणों पर हाथ रखकर इधर से उधर झपट-झपट कर आते जाते देखा। युद्ध या मोरचा तो कहीं दिखलायी नहीं पड़ रहा था, उलटे उनका इस प्रकार घूमना सुरक्षा नहीं, आतंक की भावना उत्पन्न कर रहा था। कहीं लड़ने जा रहे हो, सो बात नहीं, अपने महल्ले पर चढ़कर आनेवालों के विरुद्ध सतर्क-सावधान पहरा दे रहे हों, सो बात भी नहीं। बात थी तो केवल इतनी कि भागनेवालों मे रगड़ खाते हुए वह भी तलवार और कृपाण पकड़कर चल-फिर रहे थे। हिंसा-अहिंसा अथवा ऐसी ही अन्य बातों को छोड़ भी दे तो भी सुरक्षित रूप से लड़ाई के कायदो के विरुद्ध था उनका इस प्रकार भीड़ मे घुसकर चलना-फिरना। आतंक को प्रेरणा अवश्य मिल रही थी।

यह था उस दिन का दृश्य। मै इसे देखता और समझता हुआ फिर उसी रास्ते घर वापस लौटा। हिन्दू-मुस्लिम-हिन्दुस्तानी के अनेकों प्रश्न मन को मथ रहे थे। घर में आकर बैठे अभी बहुत देर भी न हुई थी कि पुलिस की मोटरें भोंपू द्वारा 'कर्फ्यू-आर्डर' की घोषणा करती हुई दौड़ने लगीं।

दो-तीन महीने के हेर-फेर में ही यह दूसरी बार घर में बन्द होकर बैठने का अवसर मिला था।

दिमाग तेजी से काम कर रहा था; नेत्रों के सम्मुख तीन चित्र नाच रहे थे : हिन्दू-मुस्लिम-हिन्दुस्तानी !

२

दूसरे दिन 'कर्फ्यू-आर्डर' का समय समाप्त होते ही साइकिल लेकर शहर में घूमने निकला। काम-धन्धे की कोई आशा तो थी नहीं, घूमना ही अपना मुख्य लक्ष्य था। कई लोगों ने रोका कि व्यर्थ कहाँ घूमने जा रहे हो, परंतु मुझे ऐसी परिस्थितियों में बाहर निकल कर देखने और समझने में विशेष आनन्द आता है। यह मेरा स्वभाव है, मैं लाचार हूँ।

खैर, घूमते-फिरते हिन्दू-मुसलमान सभी मुहल्लों से गुजरा; आतंक और सनसनी का साम्राज्य था। जगह-जगह गलियों के नुक्कड़ पर, दूकानों की पटरियों पर, दस-दस, बीस-बीस आदमी एकत्र होकर सशंक दृष्टि से गप्पें लड़ा रहे थे। मालूम होता था कुछ हो गया है, कुछ होनेवाला है। जहाँ मौका मिला, उतर कर लोगों से बातें भी कीं। कोई कहता था २० मुसलमान मारे गये, कोई बताता था १२ हिन्दू काट डाले गये। समझने की बात यह है कि सभी कोई न कोई निश्चित संख्या बताते थे, मानों दुर्घटनाओं का रजिस्टर पुलिस ने उन्हें ही सौंप रखा था या वे टेलीफोन के एक्सचेंज आफिस में सोये आये थे।

दूकानदार अपनी-अपनी दूकानों के सामने मंडरा रहे थे, कारोबार शुरू करने मे उन्हें भय मालूम हो रहा था। किसी उखड़े हुए मेले के समान लोग जमा थे, यह नहीं कि आतंक या अफवाहों को कम करने की कोई चेष्टा कर रहा हो। यह सब हिन्दू थे। मुसलमानों की "शरारत" और 'पाकिस्तान' की नुक्ता चीनी की बहुत सी बातें हो रही थीं, परंतु मैंने एक भी हिन्दू को तो नहीं देखा जो हिन्दुस्तान को अखण्ड बनाने के उपाय सोच रहा हो। हिन्दुस्तान तो काशी से बहुत दूर है, उसके रास्ते कुछ टेढ़े-मेढ़े भी है, परंतु अफसोस तो यह होता था कि 'मुस्लिम लीग' की "गुण्डागरी" पर उबाल खानेवाले हिन्दू लोग अपनी और अपने महल्लेवालो की सुरक्षा की भी कोई तरकीब नहीं कर रहे थे।

इसी प्रकार के बेढंगे वातावरण मे सारा दिन समाप्त हो गया। रात आयी। आठ-साढ़े-आठ का समय हो रहा था; सहसा, सम्भवतः, अलईपुर की ओर से कुछ शोर सुनाई पड़ा। बहुत से लोगो का एक साथ बड़े जोरो का शोर था, परंतु दूर होने के कारण कुछ क्षीण हो गया था। नवाखोली और पंजाब की भयास्पद लीलाएँ दिमाग मे भरी हुई थीं। अलईपुर मे चूँकि मुसलमानो की संख्या अधिक है, कसाई भी रहते है और लीगी प्रभाव भी है, इसलिए झट मन सशंक हो उठा। मन व्याकुल हुआ कि कहीं मुसलमानो ने चढ़ायी तो नहीं की। परंतु ध्यान देने पर मालूम हुआ कि शब्द "हर-हर महादेव" के थे; "अल्लाहो-अकवर" के नारे भी सुनाई पड़े। धीरे-धीरे हमारे पास-पड़ोसवाली छतो पर भी इकट्ठा होकर लोग 'हर-हर-महादेव' की

पुकार करने लगे और इस प्रकार "हर-हर-महादेव" का तार बंध गया। 'हर-हर-महादेव' के अतिरिक्त और भी कई प्रकार का शोर चल रहा था—"का हो ?" "हाँ हो ?"

इस प्रकार के गुल-गपाड़ों से यही नहीं कि शान्ति-प्रिय लोगों को व्यर्थ उलझन और परेशानी हो रही थी, बल्कि शोर मचानेवालों का स्वयं भी भारी अहित हो रहा था। इस प्रकार के नारों से स्वभावतः आतंक फैलता है और आतंक ग्रस्त समुदाय में दुर्बलता का समावेश होना निश्चित है। एक भयंकर भूल लोग यह कर रहे थे कि यदि सचमुच किसी दल ने कहीं चढ़ाई कर दी तो आक्रान्त समुदाय की वास्तविक पुकार भी हमारे सम्प्रदाय-भक्त वीरों के "का हो ? हाँ हो !" में लुप्त हो जाने का भय था। वही भेड़िये वाले कहानी; "भेड़िया आया, भेड़िया आया" और जब सचमुच भेड़िया आया तो कोई मदद को भी नहीं पहुँचा। भेड़िया मजे से यार को लेकर चम्पत हो गया, वह चिल्लाते ही रहे।

खैर, रात भर के शोर-गुल के पश्चात् सवेरा हुआ। मैंने कई लोगों से पूछा "क्यों भाई, रात में इतना चिल्ला क्यों रहे थे ?" दो-चार तो हिन्दुत्व की पीड़ा से परेशान, बिल्कुल धर्म रक्षक वीर थे। कम से कम उनकी बातों से मैं उन्हें बहादुर ही समझता हूँ। मेरे प्रश्न पर बिगड़ कर बोले—तुम्हें क्या, तुम तो खद्दर पहनते हो, कांग्रेस और सरकार (उनका व्यंग्य कांग्रेस मंत्रिमण्डल पर था) का भरोसा है, परन्तु हम बेचारे हिन्दुओं को तो अपने ही बल का सहारा है। ..."

मैंने पूछा—"आपका मतलब ? क्या कांग्रेस हिन्दुओं की

शत्रु है ? खद्दर तो बहुतेरे पहनते हैं और उनमें से बहुतेरे आप लोगों के ही साथ, आप ही के समान शोर भी मचा रहे थे। इस प्रकार आप लोगों ने महल्ले को कितनी हिफाजत की ?"

परन्तु, सच पूछिये तो यहाँ हिफाजत की सोची ही किसने थी ? नुकताचीनी, गप-बाजी और शोर-गुल के सिवा हमने, यानी हिन्दू जाति ने, हिफाजत और संघटन की कोई स्कीम, कोई योजना बनायी ही कब ?

कांग्रेस या मुस्लिम लीग की बात छोड़िये। हिन्दुस्तान के सारे मुसलमान मुस्लिम लीग के ही सदस्य हैं, सो बात नही। कांग्रेस कोई ऐसी चीज है जिससे हिन्दुओं का कोई लगाव ही न हो, सो बात भी नहीं। परन्तु इन दोनो से अलग, बिल्कुल अलग होकर जब हम देखते हैं तो यह बात शीशे की तरह साफ नजर आ रही है कि इस समय हिन्दू-मुसलमान, दोनों के दिल मे एक दूसरे के प्रति शङ्काएँ उत्पन्न हो गयी है। दोनों के घर-बार, हाल-रोजगार, एक दूसरे के सहारे ही चलते है, फिर भी हम देख रहे है कि एक दूसरे की निर्मम हत्या कर रहा है। ठीक है कि बङ्गाल, पञ्जाब या कही और—सब जगह मुसलमानों ने ही ज्यादती और छेड़छाड़ की है (इसका यह मतलब हर्गिज नहीं कि सारे मुसलमान इसमें शामिल है। मुसलमानो का एक बहुत बड़ा भाग इन "पाकिस्तानी शरारतो" से बिल्कुल अलग है और वह देश की, मुल्क की, खातिर हिन्दुओ से ज्यादा कुर्बानियाँ कर चुका है और इनमे से बहुतेरे तो त्याग और बलिदान मे, कार्य और संघटन मे, हिन्दुओ के लिए उदाहरण बने हुए है) परन्तु बिहार और मेरठ मे हिन्दुओ ने कम अत्याचार नहीं

किया है। हो सकता है, जैसा कि कुछ लोग कहते हैं (इस सम्बन्ध में मेरी अपनी भी कुछ धारणाएँ है जिन्हें आगे चल कर व्यक्त करूँगा) आजिज आकर ही हिन्दुओं ने हाथ उठाया है (हालांकि अनाचार और वर्बरता, जवाबी ही क्यों न हो, न्याय और सुनीति का पद नहीं प्राप्त कर सकती) परन्तु, भाई, फिलहाल तो मैं इस अध्याय मे इतना ही दिखलाना चाहता हूँ कि हिन्दू और मुसलमान दोनो के दिल में, एक दूसरे के विरुद्ध, विष का बीज बो दिया गया है। एक साथ रहते हुए और एक का स्वार्थ दूसरे में लगा रहने पर भी, एक दूसरे का दुश्मन बनता जा रहा है। मन्दिर और मस्जिद के प्रश्नों से बिल्कुल अलग, अनायास, एक दूसरे की बुराई कर रहा है, एक दूसरे पर आघात कर रहा है। अब हम इस बात पर बिल्कुल पर्दा नही डाल सकते कि कोई बात है अवश्य और बात भी मामूली नही। यह भी मानना पड़ेगा कि बात अब मजहबी नहीं, राजनीतिक बन चुकी है। क्या कोई भी सही दिमाग वाला आदमी इस बात को मान सकता है कि इन जुल्म और बर्बरताओं से हिन्दुस्तान के सारे हिन्दुओं को मुसलमान बना दिया जायगा ? बिल्कुल असम्भव; फिर भी यह जोर और जुल्म जोर पकड़ता जा रहा है, सिन्ध और सरहद मे भी जहां मुसलमान ही मुसलमान हैं। कहने का अभिप्राय यह कि लड़ाई मजहबी नहीं राजनीतिक रूप धारण कर चुकी है और अब हमें उसे इसी पराये में समझना होगा, वैसे ही काम करना होगा। केवल गली के नुक्कड़ों, दूकान की पटरियों या बैठकों में नुकता-चीनी या गप बाजियों से काम नहीं चलेगा और न तो गान में छतों पर से

'हर-हर महादेव' के नारे लगा देने से ही मुसीबत दूर हो जायेगी
वास्तव में यदि आप सुख और शांति पूर्वक, सुरक्षित और व्यवस्थित ढंग से रहना चाहते है, यदि सचमुच आपको आजादी की फिकर है तो इन गुल-गपाड़ो के ऊपर उठिये और कुछ ठोस काम कीजिये।

३

अभी बिल्कुल हाल की बात है। मै प्रयाग से काशी लौट रहा था। काशी मे २१ घण्टे का 'कर्फ्यू-आर्डर' लगा हुआ था, इसलिए मै सीधा रास्ता छोड़कर मिर्जापुर और मुगलसराय की ओर से रवाना हुआ ताकि व्यर्थ स्टेशन पर पड़े-पड़े रास्ता खुलने की मुसीबत न झेलनी पड़े। गाड़ी मे भीड़ काफी थी; सारी गाड़ी मे कुल एक छोटा सा डेवढ़े दर्जे का 'कम्पार्टमेण्ट' था; इसी मे तीसरे दर्जे की भीड़ से बचने वाले अनेक लोगों को सफर करना था।

खैर, मै गाड़ी मे आकर बैठ गया, मै बहुधा सफर मे बातें कम करता हूँ, कुछ पढ़ने या लिखने मे ही समय बीत जाता है। परंतु भीड़ इतनी थी, धूप और गर्मी भी इस कदर थी कि पढ़ना-लिखना दूभर था। चुप-चाप मन मार कर बैठ रहा। इतने में एक हृष्ट-पुष्ट, सुशिक्षित, वयस्क और खादी धारी युवक ने प्रवेश किया और मेरे सामने वाली पटरी पर आसन जमाया। सफर की दुरावस्था और रेलवे की कुव्यवस्था से झट बात सरकारी

शासन पर पहुँच गयी। युवक की बातों में मुझे दिलचस्पी पैदा हो गयी; मालूम हुआ कि वह समाजवादी दल के सम्पूर्ण सदस्य अर्थात् एक अच्छे राष्ट्रीय कार्यकर्ता थे। वह कांग्रेस तथा सरकार की प्रचलित नीति से अन्य अनेक लोगों के समान ही ऊवे हुए से मालूम पड़े; इच्छा न होते हुए भी अंदर के उवाल के कारण बोलते जा रहे थे। मैं ध्यान से उनकी बातें सुन रहा था, बीच-बीच में प्रश्नों द्वारा बात को बढ़ाता हुआ मैं समाजवादी दल के वर्तमान कार्यक्रम को समझने की चेष्टा कर रहा था। इस पुस्तक से उन बातों का जहाँ तक सम्बन्ध है वे, सारांशतः, निम्न प्रकार से हैं—"आँख में धूल झोंकने से काम नहीं चलेगा। भारत को हिन्दू मुसलमानों की समस्या सुलझाना ही पड़ेगी। कांग्रेस को चाहिये कि अब अपने आपको शुद्ध हिन्दू संस्था घोषित कर दे। इसी में हित है, अन्यथा शक्ति और समय, दोनों का अप-व्यय होगा" उनका मतलब यह भी था कि अब मुसलमानों से लड़कर निपटे बिना समस्या हल न होगी। मैंने पूछा—"क्या सचमुच अब यही बात रह गयी है?" उन्होंने बड़े जोर के साथ कहा—"बिल्कुल यही बात है?" फिर मैंने प्रश्न किया—"तो आप लोग इस दिशा में क्या कर रहे हैं?" उत्तर मिला—"हम लोग तो अंग्रेजों से लड़ने के लिए अपना संगठन दृढ़ कर रहे हैं, हिन्दू-मुसलमान के झगड़ों में पड़कर शक्ति नहीं खोना चाहते क्योंकि हम इस खुराफात की जड़ अंग्रेजों को ही काट देना चाहते हैं।"

आप इस बात को ध्यान से समझें। बात करने वाले युवक एक संभ्रान्त ब्राह्मण परिवार के वयस्क एवं सुशिक्षित व्यक्ति और अपने इलाके के एक जिम्मेदार समाजवादी कार्य कर्ता थे।

आपका निश्चय था कि देश 'हिन्दू-मुसलमान' की विनाशक ज्वाला मे लिपट चुका है, यहाँ तक कि वह कांग्रेस को भी एक शुद्ध हिन्दू संस्था बनकर कार्य करने की सलाह दे रहे थे, परंतु साथ ही साथ आप यह भी कहते जा रहे थे कि "हमलोग इन झगड़ो मे पड़कर शक्ति नही खोना चाहते।" मै नही जानता कि उनकी बाते कहाँ तक समाजवादी दल की सरकारी नीति का प्रदर्शन करती थीं, परंतु इतना तो स्पष्ट ही हो जाता है कि भारत मे हिन्दू और मुसलमानों की समस्या खड़ी की जा चुकी है और अब इसे चाहे जैसे हो, सुलझाना ही होगा। परंतु अफसोस तो यह है कि समाजवादी दल के पास भी इस समस्या के हल के लिए कोई योजना दिखलायी नही पड़ती।

इस सिलसिले में दो तीन बातों पर गौर करना आवश्यक हो जाता है—

(१) हिन्दू-मुसलमानो का झगड़ा अब धार्मिक या सांस्कृतिक नही रहा। मन्दिर, मस्जिद, दशहरा और मुहर्रम से बिल्कुल अलग, अनायास, अकस्मात, यह देश भर मे भड़क रहा है। इसके पीछे देश के बटवारे की भावनाएँ कार्य कर रही है, इसलिए यह बिल्कुल राजनीतिक प्रश्न बन गया है।

(२) इस प्रश्न के आर्थिक पहलू को मै फिलहाल अगले अध्यायो के लिए छोड़ रहा हूँ। मै इस बात पर भी अभी विचार नही करूँगा कि भारत के अधिकांश मुसलमानो का आर्थिक स्वार्थ हिन्दुओं के सहयोग और सद्भावना पर ही निर्भर करता है। यहाँ मै केवल इतना ही कहूँगा कि इन खुराफातों में देश की

महान आर्थिक क्षति हो रही है और जान-बूझकर, निश्चय पूर्वक, लोग एक दूसरे के विनाश पर उतर आये हैं।

(३) स्त्री-बच्चों की निर्मम हत्या और अपहरण, बलात्कार, घरों को दल-बल सहित हमला करके भस्मसात् कर देना, सैकड़ों-हजारों को दूर-दराज पहुँच कर काट डालना—ये सारी बातें ऐसी हैं जो केवल घृणित पाशविकता की ही द्योतक नहीं, किसी भी दिल और दिमाग रखने वाले इन्सान को कुछ कर गुजरने के लिए विवश कर रही है।

(४) देश भर में वही दल-बादल हमले, उसी तेजाब और हथगोले, छुरे, बल्लम, गड़ासे और बन्दूकों का प्रयोग, सम्पत्ति और स्त्री-बच्चों का नाश, सर्वत्र वही मिलते-जुलते से तौर-तरीके सिद्ध करते हैं कि बात यों ही नहीं चल रही है। इनके चलानेवाले हैं और उनके अपने ढंग हैं, या यों कहिये कि अपने संगठन हैं, अपने उद्देश्य हैं।

ऐसी दशा में खोखले नारों और दीवानखानों की गप-बाजियों से कहाँ तक काम चलेगा ?

यदि जीना है तो कुछ करना होगा, यदि रोग से बचना है तो उसकी औषधि ढूँढनी ही होगी। यह कहना सरासर मूर्खता है कि हम अंग्रेजों से लड़ने के लिए शक्ति संचित कर रहे हैं, हिन्दू-मुसलमानों के दंगों में पड़कर अपनी शक्ति को खोना नहीं चाहते। आपकी स्त्रियों पर बलात्कार किया जाय, आपके बच्चे बेरहमी से काट डाले जायें, आपकी सारी सम्पत्ति जलाकर नष्ट कर दी जाने और आप कहें कि हम तो इन झगड़ों में पड़कर शक्ति नहीं खोना चाहते। आपकी शक्ति रह ही कहाँ

जाती है ? वास्तव मे आपके पास शक्ति है ही कहाँ ? शक्ति होती तो ये सारे अमानुषिक, असामाजिक कुकृत्य कब के ही रोक दिये गये होते । शक्ति तो आपको पैदा करनी है और जल्द से जल्द पैदा करनी है ताकि स्वतन्त्रता की ओर तेज कदम बढ़ाते समय हमारी पीठ मे छुरा भोंकने की कुचेष्टा करनेवालों का साहस सदा-सर्वदा के लिए मिट्टी मे मिल जाये ।

मैंने अभी कहा है कि देश भर मे जो अग्नि की शिखाएँ उठ रही हैं उनके पीछे संघटन और उद्देश्य छिपे हुए है और भला इसी मे है कि समय रहते ही आप चेत जाये, अन्यथा यह आग आपको आपके क्रान्तिकारी उद्देश्यो के सहित हड़प जायेगी, आपके मीठे-मीठे सपने धरे रह जायेगे ।

४

कांग्रेस मे हो, समाजवादी दल मे हो, हिन्दू महासभा में हो, कही भी, किसी संस्था मे हो, हिन्दुओं के सामने मुसलमानो का प्रश्न आ खड़ा हुआ है । यह प्रश्न भारत के सारे इतिहास मे कभी भी इस प्रकार नही उपस्थित हुआ था, जैसा कि आज है ।

मुसलमानो को भारत मे आये बहुत दिन हो गये, आज सदियाँ गुजर गयी है । पहले थोड़े से आये; कुछ तो लूट-पाट और जोर-जुल्म करके लौट गये और कुछ ने यही हुकूमत कायम कर ली । धीरे-धीरे यही बस गये और फिर बढ़ने लगे । अपनी

जनवृद्धि से या दूसरों को मुसलमान बना कर, आज जो हिन्दुस्तान की आबादी में लगभग चौथाई हिस्सा मुसलमान दिखलायी पड़ रहे हैं उनमें से अधिकांश में हिन्दुस्तान का ही खून है। इसी लिए अभी हाल तक मुसलमान अपने को उसी प्रकार हिन्दुस्तान का निवासी समझते रहे हैं जैसे हिन्दू। औरंगजेब और मुहम्मद शाह की कट्टर मजहबी हुकूमत में भी, जहाँ तक शुद्ध प्रजा का प्रश्न था, हिन्दू और मुसलमानों ने बड़े प्रेम से, बड़े मेल-जोल से जिन्दगी बसर की। मन्दिर टूट कर मस्जिदें बनीं, सैकड़ों हजारों को बलात मुसलमान बनाया गया—परन्तु यह सारे खेल शाही हुआ करते थे, मुस्लिम प्रजा उनमें लिप्त नहीं पायी गयी। इतिहास के पन्ने नवाखोली, बिहार और पंजाब काण्ड से तो बिल्कुल ही शून्य हैं।

परन्तु आज हम देख रहे हैं कि, सहसा इन १०-५ वर्षों में ही गंगा उलटी बहने लगी है। सरकार कहती है कि हम प्रजा के शान्तिप्रिय जीवन में बिल्कुल हस्तक्षेप नहीं करना चाहते; इतना ही नहीं, वह यह भी कहती है कि हिन्दू और मुसलमान, दोनों को मिल-जुल कर रहना चाहिये, परन्तु स्वयं इन दोनों का कहना है कि नहीं, हम एक हो ही नहीं सकते।

क्यों? क्योंकि इसके पीछे कुछ इतिहास है, कुछ परिस्थितियां काम कर रही हैं।

इतिहास—अंग्रेजों का पंजा हिन्दुस्तान के गले पर आ लगा था। दक्षिण से होता हुआ बङ्गाल के रास्ते दिल्ली और पंजाब तक इनका साया फैल चुका था। ज्यों-ज्यों इनकी हुकूमत मजबूत होती गयी इनका रक्त-शोषक रूप निखरता गया; देश का आर्थिक

विनाश तेजी से होने लगा; उद्योग-धन्धे नष्ट-भ्रष्ट होते जा रहे थे। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक—सारा शीराजा ही छिखरता जा रहा था। हिन्दुस्तान के निवासी इस पातक परिस्थिति का वेचैनी से अनुभव करने लगे; हिन्दू और मुसलमान, दोनों की वही दशा थी; दोनो का सुख-दुःख एक था, दोनों ने उसे उसी रूप में देखा और उसी प्रकार समझा। कुछ प्रेरणाएँ मिलीं, कुछ सहयोग मिला। पूरब से पश्चिम, उत्तर से दक्षिण, सर्वत्र हिन्दू और मुसलमानो ने एक छत्र के नीचे एक होकर अँग्रेजी दोहन और अँग्रेजी जुल्म को समाप्त कर देने की चेष्टा की। यह कोई सैनिक विद्रोह नहीं, भारत का स्वातन्त्र्य युद्ध था। परन्तु दुर्भाग्य ! गुलामी की जंजीरे टूटी नहीं। यह १८५७ ई० का पुण्य वर्ष केवल एक गदर का युग बनकर बीत गया।

अँग्रेजो की आँखे खुल गयीं; उन्होने देखा कि हिन्दू और मुसलमान एक साथ मिलकर सब कुछ कर सकते हैं। उन्होने सोचा और निश्चय किया कि हिन्दुस्तान पर सुरक्षित रूप से शासन करने के लिए हिन्दू और मुसलमानों को भूल कर भी एक नही होने देना था; इतना ही नहीं, उन्हें एक दूसरे का दुश्मन भी बना देना आवश्यक प्रतीत हुआ। चक्र चलने लगा और दोनों दूर-दूर होने लगे।

८०-९० वर्ष तक विधिवत कार्य किया गया है और अब जादू सिर पर चढ़कर बोलने लगा है; हिन्दुस्तान के नक्शे में पाकिस्तान का घेरा डाल दिया गया है और बहुत से मुसलमान लीग के "भोंपू" से पुकार रहे हैं—"हम लड़के लेंगे पाकिस्तान,

हम मर के लेंगे पाकिस्तान"। इन पाकिस्तानी कारनामों से भारत भूमि रक्तस्नात हो उठी है। यह तो हुआ इतिहास।

परिस्थिति—परिस्थिति अब यह है कि गत युद्ध ने अंग्रेजों के पंजर ढीले कर दिये हैं। संसार का शक्ति संतुलन उलट-पुलट गया है और अब अंग्रेजो की रण वाहनियाँ भारत को दासता की बेड़ियों में बाँध रखने मे असमर्थ सिद्ध हो रही है। अब यह बिल्कुल स्पष्ट है कि अंग्रेज लोग स्वयं हिन्दुस्तान पर हुकूमत नहीं कर सकते। अंग्रेज लोग भारत छोड़ रहे हैं, एक देश वाले दूसरे देश की छाती से उतर रहे है। परिणामतः लोगों को शिकंजों से छूटकर प्रभुओं के छोड़े हुए स्वत्वों पर साधिकार जम बैठने की चिंता ने घेर लिया है। यहाँ राज्यों, सलतनतों, के उलट-फेर का प्रश्न नहीं है। एक देश दूसरे देश से छूटना चाहता है, इसलिए झगड़ा देशवालों मे ही छिड़ गया है। हिन्दू और मुसलमान भारत के प्रमुख दावेदारों मे से है। मुसलमानों को यह सिख-लाया जा रहा है कि तुम जितना ही अधिक जोर दिखलाओगे उतना ही तुम्हें अधिक प्राप्त हो जायेगा। इस जोर में जुल्म भी शामिल कर दिया गया है और यह जुल्म हिन्दुओं पर ताकि वे डर-कर मुसलमानों के लिए जमीन खाली कर दें। मुसलमानों, मेरा मतलब मुस्लिम लीगियों, की इसी नीति से पाकिस्तान की शक्ल बनी है। यह कहाँ तक उचित एवं व्यावहारिक है, इसमें कहाँ तक सफलता की सम्भावना है, इन सारी बातों पर मैं अगले खण्ड मे विचार करूंगा।

फिलहाल मुझे इतना ही कहना है कि जोर और जुल्म का अंत होना ही होगा और यदि यह असम्भव है कि थोड़े से लोग बहुतों

की, सारे देश की मुसीबत का कारण न बने तो हमें जरा थम कर सोचना होगा कि वे कौन से तरीके है जिससे कुछ लोगो को गलती करने का अवसर ही न मिले।

मै कह चुका हूँ कि कुछ लोग परिस्थिति का भरपूर लाभ लेने पर तुले हुए है। आदमी भूला हुआ हो तो उसे सही रास्ता दिखलाया जा सकता है, परंतु यदि वह जान-बूझ कर गलत रास्ते पर चल रहा हो तो उसे सलाह-मश्विरा देना व्यर्थ है। लीगियों की आज यही नीति है और जहाँ तक हिन्दुओं से इसका सम्बन्ध है, हिन्दुओं को अपनी ताकत समेट कर कह देना होगा कि— "नहीं, हर्गिज नहीं, तुम गलत रास्ते पर नही जा सकते। तुम्हारी जबरदस्ती चलने नहीं पायेगी। जैसा कि गाँधीजी कहते है, पाकिस्तान जबरदस्ती नहीं मिल सकता। खुश और खुशहाल रहना चाहते हो तो आवो, हम-तुम मिलकर समझ लें कि हमारी-तुम्हारी भलाई किस बात में है और फिर उसी के अनुसार हम अपना-अपना रास्ता बना लें।"

यहीं यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि केवल अपने ही अस्तित्व के लिए नहीं, सारे देश के हित और स्वतंत्रता के लिए भी हिन्दुओं को शक्ति-शाली और समर्थ बन जाना है क्योंकि मैंने अभी कहा है कि हिन्दू-मुसलमानों को कसदन दुश्मन बनाया गया है ताकि दोनों की दुश्मनी से तीसरे का भला हो। मैंने यह भी कहा कि अंग्रेज लोग हिन्दुस्तान को खुशी से नहीं, मजबूरी से छोड़ रहे हैं। इसका स्पष्ट अर्थ यही होता है कि अंग्रेज लोग बिल्कुल ईमानदारी से चाहेंगे कि लीगियो की आड़ से दबाव डालकर भारत में अपने स्वार्थ को अधिकाधिक सुरक्षित बना सकें।

अंत में यह भी समझ लेना आवश्यक है कि अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से अंग्रेजो का स्वार्थ इसी बात में है कि सारे भारत की एक शक्ति शाली सेना हो जो अंग्रेजों की स्वार्थ रक्षा मे मित्रता पूर्वक सहायक सिद्ध हो। अंग्रेज लोग यह भी चाहते है कि भारत के आर्थिक एवं औद्योगिक साधन इस प्रकार छिन्न-भिन्न न हो जाये कि समय आने पर उन्हें उसका लाभ न मिल सके। इसलिए पाकिस्तान के पीछे जो कुछ भी अंग्रेजी हमदर्दी या समर्थन है वह केवल हिन्दुओ पर दवाव डालकर अपने पक्ष मे झुकाने के लिए अथवा पाकिस्तान में अपना गढ़ वनाने के लिए। अतएव यह कहने की आवश्यकता नहीं रह जाती कि अंग्रेज लोग लीगियो को अधिकाधिक वेवकूफ़ वनाकर अपना उल्लू सीधा करना चाहेंगे। अंग्रेजों को हिन्दुत्व की अपेक्षा इस्लाम से कोई विशेष प्रेम नहीं है। अरव और मिस्र मे मुसलमान ही मुसलमान हैं और दोनो अंग्रेजो से आजिज है। फिर भारत के मुसलमानों से यदि दोस्ती गाँठी जाती है तो इसका कोई खास मतलव होना ही चाहिये।

इस प्रकार हिन्दुओं को अपनी सुरक्षा के लिए, देश की सुरक्षा के लिए और मुसलमानो की रक्षा के लिए भी इतना शक्तिशाली बन जाना है कि अंग्रेजों के कुचक्र कारगर न हो सकें।

हिन्दुओं की ताकत में ही हिन्दुस्तान का भला है।

५

इस समय सारे भारत में क्या हो रहा है, किसी के अनुभव और अनुमान से बाहर की बात नहीं रही। कृषि और व्यापार नष्ट हो चले है; भोजन और वस्त्र का अभाव दिनो-दिन जघन्य होता जा रहा है; स्वास्थ्य और शिक्षा के तार टूट चले है; रोग और महामारी से सारा देश आक्रान्त है। कब किसे छुरा भोंक दिया जायेगा, किस शहर, गॉव या घर को जलाकर खाक कर दिया जायेगा—कुछ कहा नही जा सकता। हमे निर्भय होकर चलने-फिरने से भी बाधाएँ उत्पन्न हो रही है। दशा में यदि शीघ्र ही सुधार नही होता तो हमारा जीवित रहना भी दुष्कर हो जायेगा। बिना मारे ही हम मर जायेगे।

परंतु सुधार हो कैसे? सुधार-सुधार चिल्लाते रहने से तो सुधार होता नही। कुछ करना होगा; कुछ जिम्मेदारियॉ हैं, उन्हें ईमानदारी के साथ निभाना होगा। उनमे से जो परम आवश्यक है, संकट का सामना करने के लिए जिन पर हमे ध्यान देना ही होगा, मै केवल उन्हीं का यहॉ उल्लेख करूँगा।

भारत की आबादी ४० करोड़ बतायी जाती है, इसमे २४% मुसलमानो की संख्या मानी गयी है। कुछ इतर जातियॉ हैं। इस प्रकार मोटे तौर पर हम कह सकते है कि ३० करोड़ के लगभग हिन्दू है। झगड़ा आज इन हिन्दू मुसलमानो का ही है अर्थात् एक का अपने तीन गुने से संघर्ष छिड़ गया है। फिर भी हम देखते है कि हिन्दू मुसलमानों के तीन गुने होकर भी परेशान हैं।

मैंने प्रथम अध्याय में ही हिन्दुओं का एक भागता हुआ चित्र

दिखलाया है। अभी हाल की बात है। मैं प्रयाग में एक जिम्मेदार मित्र से बातें कर रहा था। उन्होंने बताया कि एक दिन (प्रयाग के जीवन में ऐसे कई एक दिन गुजर चुके है) छिवकी मे झगड़ा हो गया, कुछ हिन्दुओं ने कुछ मुसलमानो को पीट दिया था। ४-५ मील पर छिवकी प्रयाग का एक औद्योगिक केन्द्र बन गया है, यहाँ सैनिक कारखाने हैं। लोग जाते हैं, काम करके चले आते हैं। खैर, बात शहर के मुसलमानों तक पहुँची कि हिन्दुओं ने मुसलमानो को पीट दिया था। मुसलमानों ने इस घटना पर बैठकर गम्भीरता-पूर्वक विचार प्रारम्भ किया। एक ने कहा— "हिन्दू! मुसलमानों को पीट दें! बिल्कुल झूठ। अजी एक मुसलमान का बच्चा खड़ा होकर जरा हुर्रर्र कर दे तो हजारों हिन्दू भाग जायें, और तुम कह रहे हो कि हिन्दुओं ने मुसलमानों को पीटा है। अम्याँ, कैसी बातें कर रहे हो?"

परंतु बात सच थी कि हिन्दुओं ने मुसलमानो को पीटा था। सायंकाल जब मजदूरों की गाड़ी शहर की ओर वापस आयी तो प्रतीक्षा में खड़े हुए मुसलमानों ने देखा कि सचमुच कई मुसलमान घायल हैं, किसी के हाथ में पट्टी है, किसी के सिर में पट्टी है। उतरी हुई भीड़ में कितने हिन्दू थे, उनमें से कितने जा चुके थे, यह तो ठीक नहीं बताया जा सकता, परंतु इतना तो सबको मालूम है कि कुछ मुसलमानों ने छुरा लेकर बहुत से हिन्दुओं पर हमला किया और वास्तव में वही 'हुर्रर्र' वाली बात हुई। जो काटे गये वह तो कट ही गये, बाकी सिर पर पाँव रखकर भाग गये। किसीने मुड़कर भी न देखा कि उन्हींके भाई काटे जा रहे थे। यह है १० करोड़ और ३० करोड़ का फर्क। यह है हिन्दुओं की

बहादुरी और इसी से आप समझ सकते है कि थोड़े से मुसलमान अपने से तीन गुने हिन्दुओ पर क्योकर हावी है।

मेरा यह मतलब हर्गिज नही कि सभी मुसलमान इसी किस्म के हैं। मुसलमानो मे भी सरहदी गाँधी है, मुसलमानो मे भी मौलाना आजाद है जिन पर हमारी हिन्दुस्तानियत को नाज है। मुसलमानों मे भी जमायतुल-उलमा और खुदाई खिदमतगारो का गौरवपूर्ण अस्तित्व है। भारत के सभी मुसलमान पाकिस्तानी नहीं है, इनका बहुत बड़ा अंश शुद्ध राष्ट्रवादी है और अपने को फख्र के साथ हिन्दुस्तानी मानता है। परंतु उन लोगों का भी तो अस्तित्व है जिन्होने आज सारे देश के वातावरण, सारी फिजा को ही बिगाड़ रखा है। हिन्दुओ मे भी सारे हिन्दू कायर और भगोड़े है, सो बात नही। परंतु यह बात शीशे की तरह साफ है कि हिन्दू दब रहे है। बङ्गाल और पंजाब मे ही नही, हिन्दू सर्वत्र दब रहे हे हैं। काशी मे ही कितने मुसलमान हैं? सारे शहर की जिंदगी खराब हो रही है। बम्बई का भी वही हाल है। जहाँ देखो वही यह हाल है। बहुत से हिन्दुओ के बीच थोड़े से मुसलमान और सारे गाँव, सारे नगर का जीवन दूभर हो रहा है। मै नही कहता कि हिन्दू दूध के धोये हुए हैं, शरारत करते ही नही। बिहार काण्ड इन्ही का रचा हुआ है। परंतु बात तो ऐसी है कि हिन्दुओ मे एक दल, एक चित्त, होकर दृढ़-पद, साबित कदम, होने की ताकत नही और जब तक हम पाँव जमा कर खड़े नहीं होते हम बार-बार, हर जगह रौंदे जायेगे, काशी मे हो या नवाखाली मे।

जमाव जबानी बातो से नहीं होता। हमें ईमानदारी के साथ

अपनी पातक दुर्बलताओं को समझना होगा और उन्हें एक-एक करके उसी प्रकार निकाल फेंकना होगा जैसे विष उत्पन्न हो जाने से उस अंग को ही काट देना हितकर सिद्ध होता है। वास्तव में बात अब मरहम-पट्टी की हद से पार हो चुकी है। भला इसी में है कि हम शीघ्रातिशीघ्र अपने पापों का प्रायश्चित कर डालें, अन्यथा हँसकर नहीं तो रोकर, बहुत कुछ खोकर, हमें मुसलमान बनना पड़ेगा।

अब मैं प्रत्येक बात को एक-एक करके लूँगा। मूल बात तो यही है कि हिन्दुओं को अभेद्य रूप से संघटित होना पड़ेगा। परंतु संघटन होगा कैसे? कुछ बनिये और महाजनों के दान से बल्लम और गड़ासे लेकर पहरेदारी करने से? हर्गिज नहीं, बिल्कुल झूठ। यदि ऐसा होता तो हिन्दुओं में महाजनों की कमी नहीं थी, और और उन्होंने टुकड़े फेंक कर आपको पहरेदारी के लिए प्रेरित भी बहुत किया है। परंतु इन प्रेरणाओं में जान ही कब होती है? जान होती तो सम्पूर्ण हिन्दू जाति आज एक सबल सेना बन गयी होती।

आप पूछेंगे तो फिर करना क्या चाहिये? सबसे पहले, पहरेदारी से बहुत पहले आपको यही करना होगा कि आप रोग के जड़ को पकड़ें जो आपके अंदर सोते-जागते, बिलगाव का विष उत्पन्न कर रहा है। जरा ध्यान से समझिये। प्रत्येक जाति, प्रत्येक सम्प्रदाय को अपना धर्म प्यारा होता है। इन धर्मों के कुछ लक्षण भी होते हैं। ईसाइयों के लिए गिरजाघर, मुसलमानों के लिए मस्जिद, उसी प्रकार हिन्दुओं के लिए मन्दिर प्यारा है। हम जब तक हिन्दू हैं हम यह तो नहीं बर्दाश्त कर सकते कि

हमारे मन्दिरों को कोई नष्ट-भ्रष्ट कर दे। आप सनातनी हों या आर्य-समाजी, सबके अपने-अपने पूजा-गृह होते हैं, उन्हीं को सुबोध भाषा में मन्दिर कहते है। भला कौन कहेगा कि हमारा मन्दिर नष्ट-भ्रष्ट कर दिया जाय और हमारे दिल पर असर न हो। हिन्दू-मुसलमानों के बहुत से झगड़े इन्ही मन्दिरों के पीछे हुए है और आज भी मन्दिरो का महत्व कम नही हुआ है। अतएव हम सभी चाहते है कि सारी हिन्दू जाति मिलकर मन्दिरों की रक्षा करे।

इस मन्दिर को बीच मे रखकर देखिये। एक दल उसपर हमला करके नष्ट-भ्रष्ट करना चाहता है—इसे हम मुसलमान कहते है। दूसरा दल उसकी रक्षा पर तुला हुआ है। ये सब हिन्दू कहलाते हैं। जो रक्षा नही करता, जो खड़े-खड़े मन्दिरों को नष्ट-भ्रष्ट होते देखकर भी हिलता-डोलता नही, उसे हम हिन्दू ही क्यो कहें? चाहिये तो यह कि यदि मन्दिर हिन्दू धर्म में कोई स्थान रखते है तो हिन्दू कहे जाने वाले जिनका इनसे लगाव हो, वे सब इनकी रक्षा मे दिलचस्पी लें, कटिबद्ध हों। परंतु देखते हम यह हैं कि हिन्दू-समाज का एक बहुत बड़ा अंश हरिजन या अछूत के नाम से अलग कर दिया गया है! यथार्थतः हरिजन लोग हिन्दू-समाज की नीव के ईंट है और इन्हें हम मन्दिरो मे घुसने भी नहीं देते। हिन्दू आप इन्हें भले ही कहें; और है भी, परंतु मन्दिरों को ये लोग अपना क्यों समझें? उन्हीं मन्दिरों को जिसमे ये गरीब घुसने भी नही पाते? बहुत से हरिजनों को अपने हिन्दू होने मे भी शंका होने लगी है, उन हिन्दुओं से घृणा और ईर्ष्या भी होने लगी है जो इन्हें इन्हीं के

पूजा-गृहों में घुसने भी नही देना चाहते। परिणामतः यदि हरिजन लोग कहें कि मन्दिर रहें या तोड़ डाले जायें तो हमें आश्चर्य क्यों हो? हो भी यही रहा है। मन्दिरों की रक्षा मे यदि हरिजन भाग लेते भी हैं तो वह उनकी केवल अनमन्यस्क सी चेष्टा होती है जिसे अंग्रेजी भाषा में 'हाफ-हार्टेड मेजर' कहा जाता है। और यह बिल्कुल स्वाभाविक भी है; जब तक मन्दिरों में हरिजनो के प्रवेश को आप निषिद्ध रखेंगे, मन्दिरो की रक्षा 'हाफ-हार्टेड' ढंग से ही होगी।

हिन्दू-धर्म मे मन्दिरो की आवश्यकता या अनावश्यकता कुछ भी हो, हिन्दू-मुसलमानों का जहाँ तक प्रश्न है, मन्दिरों की रक्षा करनी ही होगी क्योकि जब तक मन्दिरों को नष्ट-भ्रष्ट किया जायगा; हिन्दू-मुसलमानों में संघर्ष होना अनिवार्य है। सरकारी पुलिस या सेना के भरोसे मन्दिरों की रक्षा हो नहीं सकती। मन्दिरों की रक्षा के लिए इन्हें अखिल हिन्दू जाति का पूजा-गृह, न कि ब्राह्मणों के रोजी और सेठ-साहूकारों के सामाजिक श्रेय का जरिया बनाना होगा।

मैं पूछता हूँ कि जिस देवता, जिस भगवान को ब्राह्मण और हरिजन, दोनों एक समान मानते हैं, और जो दोनों के लिए एकसमान हैं भी, उनकी छाया मे एक तो पल-पल कर मोटा हो, कृत्य-कुकृत्य सब कुछ करे और दूसरा बेचारा उनके दर्शनों से भी वंचित किया जाय—यह कहाँ का न्याय है, कौनसा विवेक है? मैं नित्य देखा करता हूँ कि मन, काया और वस्त्र, सब कुछ अपवित्र होने हुए भी केवल ऊंची जाति के होने के कारण लोग मन्दिरो में बे-धड़क घुस जाया करते है, परंतु एक मेहतर शुद्ध

मन, शुद्ध शरीर और शुद्ध वस्त्र धारण करके भी मन्दिर मे प्रवेश नहीं कर पाता। और फिर भी आशा की जाती है कि मन्दिरों की रक्षा हम सब करे, वह अछूत मेहतर भी।

जब तक मन्दिर-प्रवेश में हरिजनों के लिए बाधा रहेगी, मन्दिर टूटते ही रहेंगे। मन्दिरो के टूटने का ही प्रश्न नहीं है। मन्दिरों का फाटक हरिजनों के लिए खोलकर आप दुराव की एक भयंकर खाई को पाट देते हैं, हिन्दू जाति की शक्ति मे अपार वृद्धि हो जाती है।

वास्तव मे मन्दिरो मे हरिजन-प्रवेश को निषिद्ध करके आप हरिजनो का ही नही, स्वयं भगवान का भी अपमान करते है। हरिजन के अन्दर आ जाने से यदि मन्दिर भ्रष्ट हो जाता है तो वहाॅ बैठे हुए हमारे इष्ट-देव की महिमा ही क्या रही ? अग्नि और गंगाजल से पापी भी शुद्ध हो जाते है, उसी प्रकार मन्दिर मे आकर अशुद्ध हरिजन भी शुद्ध हो सकता है।

यह तो हुआ विवेक। व्यवहार के लिए केवल इतना ही आवश्यक है कि हिन्दू-संघटन और हिन्दू-जाति के कल्याण के लिए हमे तुरंत मन्दिरो को हरिजनों के लिए खोल देना चाहिये। यह हमारा पहला कदम होगा और इस कदम को झट-पट उठा ही देना चाहिये। इस कदम को उठाने के लिए किसी विशेष तैयारी की आवश्यकता नही है। यो तो मन्दिर-प्रवेश के पक्ष मे सरकारी कानून बन गये हैं या बनते जा रहे है, और जहाॅ नहीं भी है, वहाँ भी कोई बाधा सरकार की ओर से नहीं होगी। प्रॉतीय, केन्द्रीय, या रियासती—सभी सरकारे मन्दिर-प्रवेश के पक्ष मे है। इस लिए जिस मन्दिर का प्रश्न हो उस महल्ले, गॉव या

नगर वालों को एक दिन एकत्र होकर आपस में तै कर लेना चाहिये कि आजसे इस मन्दिर में हरिजनों का प्रवेश उसी प्रकार नीति-गत है जैसे ब्राह्मणों का। इस काम के लिए बहुत तैयारी, शिक्षा या प्रचार की आवश्यकता नहीं। एक दिन बैठकर तै कर लेने की बात है। जिस दिन तै किया जाय उस दिन सार्वजनिक उत्सव के रूप में किसी हरिजन भाई की ओर से सत्यनारायण की कथा का आयोजन होना चाहिये और उसी भाई की सामिग्री का भोग और प्रसाद होना चाहिये।

परंतु बात यहीं आकर समाप्त हो जाये, यह ठीक नहीं। मन्दिरों को सदुपदेश, सतसंग और संघटन का स्थल बना देना चाहिये। अन्यथा मन्दिरों का महत्व भी क्या है ? मैं काशी में गली-गली, कोने-कोने पर किसी न किसी देवी या देवता की मूर्ति देखता हूँ और अक्सर इन पर कुत्तों को पेशाब करते देखा है। क्या यही हमारी आस्था की हद है ? भाइयो ! चेतो, वरना सर्व-नाश के काले बादल सिर पर मँडरा रहे हैं, भस्मीभूत करके ही ये हमें छोड़ेंगे।

आप किसी भी धर्म को देखें और देखें उनके पूजा-गृहों को ! ईसाइयों के गिरजाघर में रविवार के दिन सभी साफ-सुथरे पादरी का बाइबिल पाठ सुनने पहुँचते हैं। शुक्रवार को जुमा की नमाज के लिए मुसलमानों का जमाव आप देखते ही हैं। सिक्खों के गुरुद्वारे में भी ग्रन्थसाहब के पाठ और प्रसाद के लिए लोग एकत्र होते ही हैं। आर्य-समाज मन्दिरों में भी हवन के लिए कुछ लोग एकत्र हो ही जाते हैं। उसी प्रकार आवश्यक है कि मन्दिरों में भी रीत्यानुसार सम्बद्ध देवी या देवता की पूजा और आराधना

के लिए, कम से कम महल्ले या गॉव वाले तो सामूहिक रूप से इकट्ठा हो ही। नियम यह हो कि दर्शन को आने वाले भोग के लिए फल-फूल, मिष्ठान, या अन्न-वस्त्र, जिसे जो कुछ भी मुयस्सर हो, कुछ न कुछ अवश्य लेता आये और उन सबका सम्मिलित रूप से प्रसाद बने, या जो वस्तु प्रसाद के योग नही है मन्दिर के भण्डार मे डाल दी जाय और फिर वहॉ से पुजारी का निश्चित अंश छोड़कर समाज-संघटन और गरीबो के भरण-पोषण मे व्यय हो।

बम्बई मे बम्बादेवी का मन्दिर परम पवित्र और अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। 'काशी मे विश्वनाथजी के समान ही बम्बादेवी के मन्दिर मे लोग जाते है। यहॉ के चढ़ावे पर किसी महन्त का पूर्णाधिकार नही है। पुजारी के निश्चित अंश के अतिरिक्त सारा बम्बई कारपोरेशन का हो जाता है। मै कोई अजीब या असम्भव बात नहीं कह रहा हूँ।

इसी प्रसंग में यह भी स्मरण रखने की बात है कि देवता, देवी, परमात्मा किसी की निजी सम्पत्ति नही हो सकता। इसलिए घर के अंदर वाले पूजा स्थलो को छोड़कर प्रत्येक मन्दिर सामूहिक और सार्वजनिक है, बनवाया चाहे किसी ने हो। किसी भी मन्दिर में (इसमें बौद्ध, जैन सभी हैं) किसी भी व्यक्ति का प्रवेश निपिद्ध नहीं हो सकता, नहीं होना चाहिये। यह हो सकता है उनके कर्म-काण्ड और पूजा-विधि मे रीत्यानुसार ही भाग लिया जाय और जो इन रीतों का पालन न करे, वह केवल दर्शन और भेंट से ही अपना संतोष कर ले॥

एक बात और—यदि किसी महल्ले मे, किसी गॉव मे कई मन्दिर है तो बारी-बारी प्रत्येक मे एक-एक दिन जमाव और

सतसंग, पाठ और उपदेश होना चाहिये। महल्ले या गाँव का जो व्यक्ति इन अवसरों पर उपस्थित न हो, उसे टोका जाये और उसकी, विशेषतः हरिजनों की, बाधाओं को दूर करके उसे मन्दिर में अवश्य लाया जाय।

मैं मूर्ति-पूजा का प्रचार नहीं कर रहा हूँ। मैं तो मन्दिरों को हिन्दू-जाति की शुद्धता और संघटन का सूत्र बना देना चाहता हूँ। आप भले ही मूर्ति-पूजक न हों, परंतु जाति और समाज-भक्त तो होंगे। मन्दिरों के पीछे लिपटे हुए मानवता के उत्थानमूलक नीति-शास्त्र को तो मानेंगे। आप मन्दिरों के अपने-अपने साम्प्रदायिक झगड़ों में न फँसें। मेरा उद्देश्य संक्षेप में निम्न प्रकार से है—मन्दिरों को सुरक्षित करके आप हिन्दू-मुसलमान के झगड़ों की जड़ को काटते हैं। मन्दिरों में हरिजन-प्रवेश के निषेध को मिटाकर अपने से टूट-टूटकर अलग गिरते हुए हरिजनों को आप सहज ही अपने में सुदृढ़ रूप से समेट लेते हैं। मन्दिरों के रक्षकों की इस प्रकार संख्या बढ़ती ही है, हिन्दू-जाति भी मजबूत होती है, बिलगाव के कीटाणु मरते हैं। सब मन्दिरों में सबका प्रवेश करके आप हिन्दू-धर्म की विभाजक रेखाओं को मिटाते हैं। मन्दिरों में सबका भोग और सबको प्रसाद—इस सूत्र को लेकर आप समाज-संघटन को सुदृढ़ करने का उपाय कर सकते हैं। आप इन बातों पर विचार करें, उचित हों मानें, अनुचित हों छोड़ दें, कुछ सुधार-बधार करके अपनायें।

मेरे कहने का मतलब केवल यही है कि यदि आप झट-पट, आनन-फानन, मन्दिरों की समस्या को हल नहीं कर लेते आपको अकबाल के इस शेर को मान लेना पड़ेगा—

सच कह दूँ ऐ ब्रह्मन, गर तू बुरा न माने,
तेरे बुत कदों के बुत हो गये पुराने।

और पुराने बुत (मूर्तियाँ) और बुत कदे (मन्दिर) यों ही टूटते रहेंगे। ऐसी दशा मे उनके पीछे रक्तपात, सामाजिक अशांति और अराजकता का बवण्डर खड़ा करना महा पाप होगा। आप मन्दिरो की ओर से या तो बिल्कुल आँखें ही बन्द कर लें, या उन्हें आप समाज का शक्ति-स्रोत बना दे। दो मे से एक मार्ग चुनना ही होगा।

अब आप समझ गये होंगे कि मन्दिरों मे हरिजन-प्रवेश से उठाकर आप मन्दिरो को हिन्दू-संघटन का अपूर्व गढ़ बना सकते है। मैं तो उन समाज-वादियो को भी ललकार कहता हूँ कि आप फिलहाल अपनी मार्क्सवादी दलीलो को अपने अन्दर ही रख छोड़ें और मजहब को "जनता की अफीम" कहना छोड़कर पहले लोगो को सुसंगठित और सबल तो बना डाले। लोगों की बिखरी हुई शक्ति को समेटने का इससे बड़ा बना-बनाया साधन कही न मिलेगा। भाइयो यह हिन्दुस्तान है, यह धर्म की भावना में ही पला है, इसे इसीके अपने चिर परिचित मार्ग से आगे बढ़ाये।

मन्दिरों मे ही हिन्दू-जाति और फिर सारे हिन्दुस्तान की उन्नति के बीज गड़े हुए है।

६

हिन्दू-मुसलमानो मे पहले भी झगड़े हुआ करते थे, परंतु वे वैसे ही होते थे जैसे जमींदारों और काश्तकारों के बीच या स्वयं हिन्दू जाति के ही दो दलों के बीच अथवा दो पट्टी-दारों के बीच। पहले हम सुनते थे कि अमुक स्थान पर दशहरे का जलूस जब बाजे के साथ अमुक मस्जिद के सामने से निकला तो मुसलमानों ने विरोध किया कि उनकी नमाज मे बाधा पड़ रही थी और हमला कर दिया, दंगा शुरू हो गया। इस मनोवृत्ति की यद्यपि बीसवीं सदी में कृत्रिम रूप से उत्पत्ति एवं अभिवृद्धि की गयी थी, फिर भी इतनी तो गनीमत थी कि झगड़ों के कुछ गौण से कारण थे जिन्हें समझा और समझाया जा सकता था, परंतु अब तो अकारण ही, अनायास, अकस्मात शोर मच जाता है—"चल गयी, चल गयी" और चल जाती है। चारों ओर सनसनी छा जाती है, लोगों का चलना-फिरना भी दुष्कर हो जाता है, छुरेबाजियाँ होने लगती हैं।

काशी मे इन दिनों इसी प्रकार चला करती थी। परंतु इस बार, अप्रेल '४७ (ध्यान रहे जून ७-८ मे अंग्रेजों ने भारत छोड़ देने की घोषणा कर रखी है) में, शायद बंगाल और पंजाब की भी हवा आ पहुँची थी। ५-७ दिन से सारे शहर में यह हवा गर्म थी कि "बड़ा भयंकर दंगा होनेवाला है।" दंगा होने का कोई भी कारण तो नहीं नजर आ रहा था परंतु दंगा होगा अवश्य, ऐसा लोगों के मन में बस गया था। बहुत छान-बीन करने पर कुछ लोगों ने बताया कि "शहर में बाहर से पठान लाये जा रहे हैं, लीगियों ने एक मोटर लारी खरीदी है, पेट्रोल इकट्ठा किया गया है, छोटे-बड़े, सब

मुसलमानों ने १०-१०), ५-५) चंदा दिया है और संघटित रूप से हमला करने की तैयारी कर रहे हैं।" मैने इन बातो को सुना तो ध्यान से, परंतु कोई विशेष महत्व दिया नहीं। करता भी क्या? क्या कहता कि हिन्दू भी वैसा ही करने लगें?

खैर, बात सच निकली। दो दिन तक तो यो ही "चल गयी, चल गयी" की सनसनी पर दूकानें बन्द हो-होकर रह गयीं और तीसरे दिन सुबह, दिन-दहाड़े शोर मच गया। सारा शहर गर्म हो उठा; मालूम हुआ कि मुसलमानो के एक दल ने हिन्दुओ के महल्ले पर चढ़ायी कर दी थी। जरा ध्यान से सोचिये, मै सरहद के पठानी हमले की बात नही कर रहा हूँ। मै बात काशी की कर रहा हूँ जो हिन्दुओं का पवित्र तीर्थ-स्थान है और जहाँ हिन्दू बहु
यही मुसलमानो के एक दल ने हिन्दू महल्ले पर चढ़ायो भी की। इसी सिलसिले मे एक बात और सुनने मे आयी कि इस आततायी दल ने, आजकल इन दंगो मे चलने वाले, शीशे का एक तेजाबी हथगोला भी फेंका था, परंतु दैवयोग से वह फूटा नहीं। इन सारे मामलों मे हिन्दू कहाँ तक निर्दोष है, मै नही जानता और सारी बाते, अक्षरशः, कहाँ तक सत्य है, इसे भी मै अधिकार पूर्वक नही कह सकता। परंतु मेरा मतलब तो केवल दो-तीन बातों से है:—(१) हफ्तो पहले से यह हवा गर्म थी कि पाकिस्तानी लोग हमले की तैयारी कर रहे है और वह सच निकली। (२) दल-बद्ध होकर हमला करने की कोशिश की गयी। (३) काशी में अब बात छुरेबाजी तक ही नहीं रही, सदल-बल, दिन-दहाड़े, सारे महल्ले पर चढ़ दौड़ने की चेष्टा हुई। (४) यहाँ भी कलकत्ते के समान ही तेजाबी गोले का प्रयोग हुआ।

इन बातों से पता चलता है, जैसा कि मैंने प्रारम्भ में ही कहा था, कि इन दुर्घटनाओं के पीछे एक निश्चित उद्देश्य, एक निश्चित ढंग है और उसे बड़ी तेजी से संघटित किया जा रहा है। जो भी हो, मैं आप लोगों को इन बातों से भी अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न पर ले चलना चाहता हूँ—

उपर्युक्त घटना के दो-तीन घण्टे के पश्चात् ही सारी काशी को लगातार २४ घण्टे के लिए "कर्फ्यू आर्डर" लगाकर घरों में कैद कर दिया गया। आज कल हमारे अधिकारियों को 'कर्फ्यू-आर्डर' के द्वारा दंगों को शांत कर देने का एक अच्छा-खासा मर्ज पैदा हो गया है। हवा चली कि जुकाम पैदा हुआ; थोड़ा-बहुत कुछ भी हो, 'कर्फ्यू-आर्डर' लग जाता है। गुनाह-बे-गुनाह, शांत-अशांत, सभी लोग, सभी वर्ग और सारा गाँव, सारा नगर, लपेट में आ जाता है। काशी में भी यही हुआ। कुछ आतंक था, कुछ बढ़ा दिया गया। घर में बैठे-बैठे लोगों ने प्रस्तुत परिस्थिति पर विचार करना भी शुरू किया। आस-पास के कुछ पढ़े-लिखे, और मैं इन्हें जिम्मेदार व्यक्ति ही कहूँगा, हिन्दू लोग एक घर में बैठकर बात करने लगे। इनमें थे तो सभी हिन्दू परंतु थे कांग्रेस कॅमिटी के पदाधिकारी, वकील और महल्लेदार लोग। उन्होंने क्या बातें कीं सो तो मैं नहीं कह सकता, परंतु उसकी रिपोर्ट मुझे निम्न लिखित रूप से सुनायी गयी—"मुसलमानों का यदि यही रवइया रहा तो हिन्दुओं को शीघ्राति शीघ्र कुछ करना ही होगा, अन्यथा जान और जहान, दोनों की खैर नहीं। इसलिए हिन्दुओं को भी झट-पट संघटित हो जाने की आवश्यकता है। कुछ चुने हुए लोगों को लेकर

१०-२०, १००-५० रुपये, जो जैसा हो, कुछ चंदा एकत्र करके कार्य शुरू कर देना चाहिये।" इन मित्रों की गलत धारणाओं पर, गलत तरीको पर मुझे जितना दुख नही है, उससे अधिक दुख इस बात का है कि उन्होंने जो कुछ सोचा-विचारा या करने का इरादा किया, वह सब, जहाँ तक मै समझता हूँ, उद्वेग शांत होते ही हवा मे उड़ चुका है। सम्भव है, काशी की स्थिति फिर खराब हुई तो, ये लोग एक बार फिर उसी प्रकार घबड़ाकर बाते करें और कुछ करने का इरादा करे। आज अधिकांश हिन्दुओ का यही हाल है; अधिकांशतः आज के एक साधारण हिन्दू और एक अफीमची मे अधिक अंतर नही होता। दोनो पिनक के वशीभूत रहते है, एक नशे की पिनक में, दूसरा अपनी धारणाओ, अपने दिमागी ज्वार-भाटे के चढ़ाव-उतार मे।

बात आपको कड़ी लग रही होगी, परंतु है कुछ ऐसी ही। और जब तक ऐसी है, चंदे द्वारा पहरेदारो की व्यवस्था से जान नही बचेगी। आप संकट का सचमुच सामना करना चाहते है तो ईमानदारी के साथ आगे आइये। अपने को, अपनी जाति को, अपने देश को, धोखा मत दीजिये।

आप पूँछेगे कि करना क्या होगा? करना आपको सब से पहले यह होगा कि प्रत्येक महल्ले, गॉव, या नगर के समस्त हिन्दुओ, हरिजन या ब्राह्मण, सभी को सार्वजनिक रूप से एकत्र करें, किसी पवित्र स्थान पर—आर्यसमाज का मन्दिर हो, शङ्कर महादेव का मन्दिर हो, दुर्गा का मन्दिर हो, या गंगा जी का तट हो। यहाँ प्रत्येक व्यक्ति—स्त्री, पुरुष, बच्चा,

जवान या बूढ़ा—सभी से पृथक्-पृथक्, देवता को साक्षी करके, हाथ में गंगा जल या वेद को लेकर निम्न प्रकार से शपथ लें:—
"मै शपथ लेता हूँ कि आजसे अपने महल्ले (या गॉव) की रक्षा एवं समृद्धि के लिए सत्य और विवेक पूर्वक महल्ले के साथ तन, मन, धन से सक्रिय और सचेष्ट रहूँगा, चाहे मुझे इसमें अपने आपको ही, क्यों न भेंट कर देना हो। यह शपथ, बिल्कुल कड़ाई के साथ, छोटे-बड़े, अमीर-गरीब, वकील या महाजन, सबसे, सबके सामने ली जानी चाहिये।

अब इस शपथ के महत्व पर विचार कीजिये। जो सचमुच हिन्दू है, जिन्हें अपने हिन्दुत्व में आस्था और अभिमान है, वे बिल्कुल साफ सामने आ जायेंगे और जो ढुलमुल-यकीन हैं वह अलग हो जायेंगे। परिणामतः कौन हिन्दू नहीं है, इसका निर्णय हो जाने के पश्चात् आप भरोसे के साथ, अनुशासन पूर्वक कार्य कर सकेंगे। ढुलमुल-यकीनी कायरता का सबसे बड़ा लक्षण है। संकट-काल में कायरों को लेकर आगे नहीं बढ़ा जा सकता। मेरा यह मतलब कभी नहीं कि आप इन ढुलमुल-यकीनो से द्वेष करने लगें। यह विवेक और और सत्य, दोनों के विरुद्ध है। जहॉ सत्य नहीं, वहॉ शक्ति या सामर्थ्य, हो ही नहीं सकता। शक्ति केवल शारीरिक बल में नहीं उत्पन्न होती, इसके लिए विकसित आत्मा की आवश्यकता है। आत्मा के विकास बिना मनुष्य निर्भय हो ही नहीं सकता। जो निर्भय नहीं है, अर्थात् जिसके मन में भय निवास करता है वह दूसरों की क्या, अपनी भी रक्षा नहीं कर सकता। उसके पॉव सदा उखड़े ही उखड़े से रहते हैं। ऐसे भीरु लोगों से

हिन्दू जाति की रक्षा हो ही नहीं सकती। ठीक है कि हिन्दू जाति के बीच, जैसे किसी भी जाति के बीच, ये भीरु लोग भी रहेंगे उसी प्रकार जैसे परिवार मे हृष्ट-पुष्ट सदस्यों के बीच रोगी प्राणी भी पला करते हैं, परंतु हम इनके भरोसे गार्हस्थ्य का बोझ वहन नहीं करते। इन्हें आश्रित समझकर हम इनकी रक्षा कर सकते है, परंतु इन्हें लेकर हम अपने मोर्चे नहीं तैयार कर सकते। मान लीजिये एक महल्ले मे १०० घर हिन्दुओं के बीच ५ घर मुसलमान है। हिन्दू संघटन का मतलब तो यह नही कि हम इनका वध कर डालें या इन्हें उखाड़ फेके। यह धर्म के विरुद्ध है, नीति के विरुद्ध है, सामाजिक और राष्ट्रीय शांति के विरुद्ध हैं और जहाँ सम्पूर्ण शांति नहीं वहाँ सुख और शक्ति का निवास हो ही नही सकता। महल्लेदारी का भी यही तकाजा है कि आप इन मुसलमानों को सुखी और सुरक्षित रखे। और तभी आप निश्चित होकर आगे बढ़ सकेगे, वरना ये ५ घर मुसलमान ही आपके घर में आग की चिनगारी बन जायेंगे। आप आगे बढ़ने के बजाय अन्दर की ही आग बुझाने मे लगे रहेंगे। ठीक यही व्यवहार आपको उपर्युक्त अपने ढुलमुल-यकीन भाइयो के साथ करना होगा।

खैर, मैं कह रहा था कि मोटा-तगड़ा शरीर होते हुए भी जब तक आत्मा निर्भय नही है आप में शक्ति आ ही नहीं सकती। मैने कई पहलवानों को देखा है जो अंधेरी रात में भूत-प्रेत के भय से परेशान रहते हैं। उसीके विरुद्ध मैने बिल्कुल दुबले-पतले आदमियो को सदा, सर्वत्र, निर्भय विचरते देखा है। फिर शारीरिक बोझ किस काम का? एक दूसरा उदाहरण

देखिये। अभी तीन-चार दिन की बात है। सरकार की चौकी, ताड़कोल वाली सड़क से दो बैल गाड़ियाँ चली आ रही थीं। किसी सुनसान जङ्गल की बात नहीं, सावन-भादों की अँधेरी रात भी नहीं थी। दिन-दहाड़े, बिल्कुल बस्ती के पास, लम्बी सड़क से दो बैल गाड़ियाँ चली आ रही थीं। दोनों पर दो हट्टे-कट्टे हिन्दू गाड़ीवान थे। इतने में मुसलमान का एक मरियल-सा छोकरा छुरा लेकर ललकारते हुए उन पर वार करने के लिए झपटा। इन दोनों गाड़ीवानों में से एक भी चाहता तो उस छोकरे को मसल देता परंतु आप जानते है कि क्या हुआ? दोनों भाग निकले, एक नहीं, दोनों। एक तो भाग गया, दूसरा अपनी ही गाड़ी के इर्द-गिर्द चक्कर काटता हुआ आखिर छुरे की झपेट में आ ही गया। जरा इस घटना पर विचार कीजिये। एक नहीं, दो हृष्ट-पुष्ट आदमी पर एक मरियल-सा छोकरा झपट रहा था। चाहिये यह था कि जब तक वह एक के पीछे झपटता दूसरा उसे धर दबोचता। अधिक से अधिक यही होता कि इस छीना-झपटी में छुरे से थोड़ा बहुत घाव लगता। दोनों में से एक के प्राण भी जाते तो क्या, वीरता से तो जाते, परंतु नहीं, यहाँ तो जान का भय था और दोनों कायरता पूर्वक भागे। फिर भी वही हुआ जो शायद मुकाबला करने पर न होता—उस छोकरे ने एक को छुरा मार ही दिया। मुझसे पूछें तो मुझे उस छुरा मारने वाले मुसलमान छोकरे से अधिक क्षोभ उन कायरों पर है जो कुत्ते के सामने गीदड़ के समान भागे, और उस पतित पर तो बड़ा ही क्षोभ है जो अपने साथी को छुरे का शिकार होते देखकर भी भाग गया। धिक्कार है ऐसे हिन्दू बनने वालों पर।

और हमारे समाजवादी भाई इन्हीं को लेकर पाकिस्तानियो के छुरे से नहीं, अंग्रेजों की सेना और शस्त्रों से भिड़ने की कल्पना कर रहे है।

इसीके साथ एक और उदाहरण लीजिये। एक कुल्फी बेचने वाले हिन्दू को कुछ मुसलमान भटियारों ने पीटा और छुरा लेकर मारने भी दौड़े परंतु दैवयोग से वह भाग निकला। इस घटना को कई हिन्दुओ ने देखा। इतना ही नहीं कि कोई उसकी रक्षा को नहीं आया, बल्कि यह भी हुआ कि जिन हिन्दुओं ने इस घटना को देखा था, पुलिस को दुष्टों का नाम भी बताने मे बगले झाँकने लगे। क्या इन्हीं कायरों से हम हिन्दू जाति की रक्षा करने के मन्सूबे बाँध रहे हैं। हो नहीं सकता।

अब आप समझ गये होंगे कि भीरुता और कायरता का बहुत बड़ा सम्बन्ध शरीर से नही, मन से होता है, अर्थात् मन के दोष को दूर करने के लिए मनोविज्ञान का ही सहारा लेना होगा। उपर्युक्त सामूहिक शपथ उसी का प्रथम चरण है।

इस विषय को अधिक तूल न देकर इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि अब आपके महल्ले में प्रतिज्ञा-बद्ध हिन्दुओं का जत्था तैयार हो गया है जो एक दूसरे की रक्षा मे मरने-मिटने के लिए तैयार हैं। मै आपको विश्वास दिला सकता हूँ कि उपर्युक्त रीति से शपथधारी हिन्दुओं मे से शायद ही कोई कर्तव्य-च्युत हो और जो होगा उसे आप जिंदा ही मुर्दा समझे।

एक कदम और आगे बढ़िये। यदि महल्ले में पहरेदारी की आवश्यकता है तो इसी शपथधारी समाज से हृष्ट-पुष्ट लोगों को चुनिये। परंतु ध्यान मे रखने की बात यह है कि यहाँ ऊँच-

नीच अथवा अमीर-गरीब का भेद हर्गिज नहीं होना चाहिये। इन पहरेदारों में सबसे पहले वकील, महाजन, जमींदार तथा पण्डित और पुजारियों को रखिये, यह नहीं कि पहरे का काम मेहतर-चमारो को सौंपकर वकील साहेब अपने बंगले मे और पण्डित जो मन्दिर मे मौज करते रहें। अब तक जहाँ भी कुछ काम करने की चेष्टा की गयी, इसी प्रकार काम हुआ है और नतीजा शून्य रहा। हम चाहते हैं कि ऊँच-नीच की झूठी और विनाशक धारणाओं को त्याग कर लोग हिन्दू मात्र के समान, एक रस, एक चित्त, मैदान मे उतर पड़ें। यदि टुकड़ियों में बंटकर लोग कार्य करते है तो यथासम्भव ब्राह्मणों के साथ हरिजन और वकीलसाहेब के साथ भंगी, प्रत्येक टुकड़ी का इस प्रकार संगठन हो कि सब कुछ होते हुए भी एक-रस होने का उद्देश्य असफल न रह जाये। एक बारीक बात पर सतर्कता पूर्वक ध्यान रखना होगा। आप टुकड़ियों मे वकील साहेब और भंगी का मेल तो कर देंगे परंतु वकील साहेब अपनी टुकड़ी के नायक बनकर भंगी पर उसी प्रकार धौंस जमाने की चेष्टा करेंगे जैसे वह अपने बंगले या अदालत मे लोगो को छोटा समझ कर रोब गाँठा करते हैं। इस लिए आवश्यक यह है कि टुकड़ियों के नायक अमीरी या वकालत के हिसाब से नहीं, अनुभव, ईमानदारी, जाति-प्रेम, और कर्मशीलता के आधार पर ही बनाये जायें। यह देखना होगा कि सेठ साहेब या वकील साहेब भी रात में या दिन में, पहरे पर उसी प्रकार सतर्क हैं जैसे उनका भंगी साथी। यहाँ मुरव्वत की बिल्कुल आवश्यकता नहीं। हिन्दू जाति सन्यपात रोग से आक्रान्त है, इसका इलाज हाथ में लेने के लिए वैद्य को कडुयी से कडुयी

औषधि देने में भी संकोच नहीं करना होगा। रोगी यदि इस औषधि को स्वीकार नहीं करता तो साफ-साफ कह देना होगा कि "हम तुम्हारी जान-माल के जिम्मेदार नही।"

हमने चंदों के बल पर गरीब या छोटी जातिवालों द्वारा बहुतेरी पहरेदारी देखी है। ऐसे पहरेदारों और वेतन-भोगी दरबानों में अधिक अंतर नहीं होता। और उसका फल भी बहुधा वैसा ही होता है जैसा कि होना ही चाहिये। इस लिए यदि पहरेदारी करना ही है तो नींच-ऊँच का भाव त्याग कर चंदो के सहारे नहीं, जाति-रक्षा और आत्म-रक्षा की भावना से, एक दल, एक रस, एक चित्त, होकर मैदान में उतर पड़ें।

वस्तुतः, यदि हिन्दू-मुसलमानो की समस्या उपस्थित ह तो उसके निराकरण के लिए सारे हिन्दुओं को एक ही साँचे में ढाल कर ठोस जमा देना होगा ताकि जिना को हरिजनो को फुसलाने का हौसला ही न हो, उन्हें आपमें से ही मण्डल (अंतरिम सरकार के कानून सदस्य) जैसे हरिजन हिन्दू न मिल जाये या अम्बेडकर को बार-बार यह धमकी देने का अवसर न लिले कि—"हम लोग मुसलमान हो जायेंगे।"

जब तक ये हरिजन लोग आपके कुष्ट-ग्रस्त शरीर से गल-गलकर झड़ते रहेंगे, आप कहीं भी, किसी के सामने टिक नहीं सकते।

अभी बहुत कुछ बाकी है, अब भी सचेत हो जाइये।

७

मैंने अभी कहा हैं कि हिन्दुओं की ताकत में ही हिन्दुस्तान का भला है। जब तक हिन्दू जाति दुर्बल और बिखरी हुई है, हिन्दुस्तान कभी आजाद हो ही नहीं सकता। अंग्रेज लोग भले ही भारत छोड़ जायें, परंतु हिन्दुस्तान मे आजादी का पौधा पनप नहीं सकेगा। इसलिए आवश्यक है कि हम जरा आँखें खोलकर देख लें कि इस समय हम वास्तव में खड़े कहाँ हैं, हमारे साथ चलने वाले लोग हैं कौन, हमारा सफर कैसा है और फिर इसके पश्चात ही हम यह समझ सकेंगे कि इस दुरूह यात्रा को हमें ते कैसे करना होगा।

हिन्दू-मुसलमानों के झगड़े यों तो कुछ पुराने से हो चले हैं, परंतु तत्काल इसने जो रूप धारण कर लिया है वह बिल्कुल नया है और इसका इतिहास कुल ८-९ वर्ष का ही है।

'३९ में विश्व-युद्ध की घोषणा हुई। भारत की अपनी मर्जी के बिल्कुल खिलाफ अंग्रेजों ने अनायास, बिना किसी सलाह-मशिवरे के, उस नरमेध का खूनी बोझ इसके कंधों पर लाद दिया। आपको स्मरण होना चाहिये कि उस समय सारे भारत में जनता के प्रतिनिधि मंत्रि-मण्डल शासन-सूत्र संभाले हुए थे। प्रांतों के अतिरिक्त, केन्द्र मे भी केन्द्रीय असेम्बली मौजूद थी। इन सारी बातों के बावजूद बेचारे गुलाम हिन्दुस्तान को अंग्रेजों ने युद्ध के पातक दलदल में घसीट ही लिया। ऐसी परिस्थिति में किसी प्रतिनिधि शासन की बात ही कहां रह जाती थी? परिणामत

कॉंग्रेस सरकारों ने शासकीय मखौल से पल्ला छुड़ा लिया और पद त्याग कर जनता के बीच एक बार पुनः वापस लौट आयी।

कॉंग्रेस का पल्ला छुड़ाकर अलग खड़े होते ही ब्रिटिश सरकार के कंगूरे हिलने लगे। उसे यह समझने मे देर न लगी कि धारा सभाओं से निकलकर कॉंग्रेस चुप नहीं बैठी रह सकती। अंग्रेजो के पास साधन थे, चक्र चलने लगा। सारे देश मे लीग की ओर से मुक्ति दिवस मनाया गया। मुक्ति दिवस का अभिप्राय था कि भारत के मुसलमानो को जालिम सरकारो से छुटकारा मिला। बात यही तक नही समाप्त हुई। '४० मे सर्व प्रथम, लीग से, लाहौर मे, 'पाकिस्तान' का प्रस्ताव पास कराया गया। यह 'पाकिस्तान' है क्या? हमे इसकी कोई व्यावहारिक परिभाषा, अब तक नही दी गयी है; परंतु इसका मतलब हमे यही बतलाया गया है कि हिन्दू और मुसलमान दो पृथक् राष्ट्र है। "राष्ट्र" शब्द पर गौर कीजिये। भारत मे हिन्दू और मुसलमान, गॉव-गॉव मे, गली-गली मे, एक दूसरे से गुंथे हुए आबाद है, उनकी रहन-सहन, उनकी भाषा और भेष-भूषा, उनका हाल-रोजगार एक है और एक दूसरे से ही चलता है, परंतु जिना साहेब ने इन्हें दो राष्ट्र बताना शुरू कर दिया है।

खैर, दो राष्ट्र बताकर कहते क्या हैं? कहते यह हैं कि मुस्लिम राष्ट्र का देश होगा पाकिस्तान। "होगा" शब्द को भी समझिये। अब तक देश नहीं था, परंतु राष्ट्र मौजूद था; कहॉ?—हिन्दुस्तान के गॉवों मे, शहरो में, गली-कूचों मे। और अब इस राष्ट्र के लिए जिना साहेब अपना देश कायम कर देना चाहते हैं जिसका नाम उन्होंने "पाकिस्तान" रखा है। "पाकिस्तान" अर्थात्

"पवित्र भूमि"। मान लिया भाई कि राष्ट्र भी बनेगा और उस राष्ट्र के लिए देश भी कायम होगा। परंतु उत्तर मे दक्षिण मे, बीच में, किनारे, आखिर कहाँ होगा। जिना साहेब कहते है कि पाकिस्तान हिन्दुस्तान के चारों ओर होगा। जरा कान खोलकर सुनिये। एक राष्ट्र का एक देश नहीं, कई देश होंगे और राष्ट्र एक ही रहेगा। उत्तरीय-पूर्वीय सरहद पर एक देश होगा जो बंगाल और आसाम के टुकड़ो से मिलकर बनेगा। एक देश उत्तरीय-पश्चिमीय सरहद पर होगा जो पंजाब, सीमा प्रॉत और शायद काश्मीर की रियासत को भी लेकर बनेगा क्योंकि काश्मीर रियासत मे ही अंग्रेजों का दृढ़तम सैनिक अड्डा है जो गिलगिट की एजेन्सी के नाम से रूसी सरहद को छूता है। तीसरा देश होगा पश्चिम मे समुद्र के किनारे जो सिंध का प्रॉत है।

समझिये और गौर से समझिये कि पाकिस्तान की स्थापना केवल ब्रिटिश भारत में ही होगी, देशी राज्यो में नहीं (देशी रियासतों से पाकिस्तान का क्या सम्बन्ध हैं और यहाँ पाकिस्तानी कार्य्यवाही कैसे चल रही है, इस पर फिर विचार करूँगा)। ब्रिटिश भारत में भी कहाँ? उन सरहद्दो पर जहाँ से विदेशों का सम्बन्ध है, जहाँ सैनिक अड्डे बनाकर भारत को घेरे में रखा जा सकता है या विदेशों से सैनिक नाता जोड़ा जा सकता है, या भारत को विदेशो से मिलकर बलवान होने से रोका जा सकता है या जहाँ से भारत में बाह्य-प्रभाव के प्रवेश पर नियंत्रण रखा जा सकता है।

मैं अभी पाकिस्तान पर विचार नहीं कर रहा हूँ। पाकिस्तान के सम्बन्ध में मैंने जो इतना लिखा है केवल इसलिए कि आप

यह समझ जाये कि पाकिस्तान के मूल मे जो तत्व निहित है वह भारतीय स्वातंत्र्य के प्रतिकूल है और इसका जन्म भी उसी समय हुआ जब कि इसके प्रणेताओं ने देखा कि कॉग्रेस धारा सभाओं की आराम-कुर्सियो को छोड़कर एक बार पुनः देश को आजादी की ओर बढ़ाने पर उतर आयी थी। पते की बात यह है कि ज्यों-ज्यों अंग्रेज कमजोर होने लगे, पाकिस्तान मजबूत होने लगा। '४२ मे देश ने एक स्वर से "भारत छोड़ो," की आवाज उठायी। अंग्रेजो ने प्राण-पण से इस आवाज को गले में ही घोंट देने की चेष्टा की। देश मे स्वभावतः एक बार शिथिलता आ गयी और लोगो ने समझा कॉग्रेस मर गयी और आजादी की लहर ठण्ढी कर दी गयी। परिणामतः पाकिस्तानी कारनामे भी शिथिल पड़ गये।

परंतु क्या आजादी की लड़ाई भी कही बीच में ही खतम हुई है? समय फिर आया; मुर्दों में फिर जान पैदा हुई। भारत की जल सेना, स्थल सेना, नभ सेना, सर्वत्र विद्रोह की आग भड़कने लगी। इससे यही सिद्ध हुआ कि अंग्रेज सरकार सच-मुच जीर्ण-क्षीण हो चुकी थी और उसके लिए अपने बूते पर भारत को गुलाम बना रखना असम्भव था। इसका नतीजा? इसका नतीजा यह हुआ कि एक ओर तो विधान-परिषद, अंतरिम सरकार तथा अन्य किसी भी प्रकार सत्ता भारतीयो को देने की बात होने लगी, दूसरी ओर लीग ने 'डाइरेक्ट ऐक्शन' अर्थात् आन्दोलन दिवस या यो कहिये कि सीधा कदम उठाने की घोषणा की।

१६ अगस्त, '४६ को कलकत्ते में सीधा कदम उठाया ही गया। कलकत्ते से सारे बंगाल मे और अब पंजाब तथा सीमा प्रांत मे फैल गया है। यों तो सारे देश मे सीधा कदम उठाने की चेष्टा

हो रही है। अभी दस-पाँच दिन की बात है, संयुक्त प्रांत में 'गाँव हुकूमत बिल' से चिढ़कर लीग के प्रांतीय सरदार ने धमकी दी है कि यहाँ भी हम सीधा कदम उठायेंगे। क्यों? क्योंकि 'गाँव हुकूमत बिल' में जनता को शासन शक्ति सौंपने की योजना है। जनता में हिन्दू-मुसलमान दोनों हैं। परंतु लीग कब चाहती है कि जनता को वास्तविक शक्ति और आजादी मिले?

संक्षेप में, यह जो कुछ भी है केवल आपकी आजादी के मार्ग में अड़ंगा है। आजादी को जब हम दृष्टि में रखकर सोचते हैं तो हमें पाकिस्तानियों के अतिरिक्त और भी कई अड़ंगे नजर आ रहे हैं और उनको समझे बिना हमारा मार्ग प्रशस्त हो ही नहीं सकता। हम धोखा खायेंगे, हिन्दू जातिका उद्धार और हिन्दुस्तान की आजादी—सब झूठा साबित होगा।

आज बड़े जोरों से आवाज उठायी जा रही है कि हिन्दुओं पर मुसलमान लोग अत्याचार कर रहे हैं। इस आवज के उठानेवाले सबसे बड़ी गलती यह कर रहे हैं कि वह इसमें बिना किसी भेद के सारे मुसलमानों की ओर लक्ष्य कर बैठते हैं। वे अहरारों को भूल जाते हैं, वे मोमिन लोगों को भूल जाते हैं; वे खुदाई खिदमतगारों और जमायतुल-उलमा को भी भूल जाते हैं, वे बिल्कुल भूल जाते हैं कि अब भी भारत के अधिकांश गाँवों में हिन्दू-मुसलमानों का सम्मिलित जीवन पूर्ववत चल रहा है। भूलते हैं और कम्यूनल भूलते हैं; खुद भूलते हैं और सीधी-सादी हिन्दू जनता को भी भुलावे में डालते हैं। इस भूल-भुलइयों का चक्र आज सारे देश को ही हड़प जाना चाहता है।

हम इस बात से बिल्कुल इन्कार नहीं करते कि इस समय भारत मे हिन्दू-मुसलमानो की समस्या उपस्थित कर दी गयी है, परन्तु इस बात को भी हमें समझ लेना चाहिये कि इस समस्या मे इतना जोर कहाँ से पैदा होता जा रहा है।

'४२ की बात है। भारत में सरकारी दमन अपनी पाशविक नग्नता की हद को पहुँच चुका था। यह सारा दमन, सारा अत्याचार हिन्दू जाति पर किया गया। इस दमन के कर्णधार कौन थे? मुझे विश्वास है कि इन सारी वर्बरताओं में हिन्दू पुलिस, हिन्दू अफसर और मजिस्ट्रेट, हिन्दू जमींदार और राय बहादुरों ने खुल कर खेल किया था। और आज यही अफसर और यही जमींदार, भूख और रोग से तड़पती हुई हिन्दू जनता को चूस-चूस कर, ऐठ-ऐठ कर युद्ध कोप को भरनेवाले यही खैर-ख्वाह हिन्दू वकील और राय बहादुर लोग हिन्दुओं को मुसलमानों से भिड़ जाने के लिए ललकार रहे है। कुत्ता भी ठोकर खाकर लात मारनेवाले के पाँव को पहचान लेता है परन्तु हम कमबख्त हिन्दू ऐसे मूर्ख है कि इन जालिमों को ही आज अपना हमदर्द समझने लगे हैं। जिसे हमे वर्बाद करने और हमारी माँ-बहनो की लाज लूटने मे भी शर्म नही आयी, वही आज हम हिन्दुओं के साथ हिन्दू और हमारा भाई बनने का दावा कर रहा है, यह कुछ कम रहस्य की बात नहीं है। हिन्दुओ के शरीर और आत्मा का हनन करनेवाले व्यक्ति को हम कैसे हिन्दू मान ले? आज यदि वह अपने को हिन्दू कह कर आप हिन्दुओ को मुसलमानो से भिड़ जाने के लिए ललकार रहा है तो निश्चय ही इसमें उसका गहरा स्वार्थ छिपा हुआ है और

आपको इस आदमी से होशियार रहना चाहिये; वरना आप इस बार ऐसा धोखा खायेंगे कि भूतल से हिन्दू जाति का नाम व निशान भी मिट जायेगा !

हिन्दू जाति के इन हिमायतियों को जरा गौर से पहचानिये। एक ओर तो यह चिल्लाकर पुकार कर रहे हैं कि कांग्रेस हिन्दुओं की शत्रु है, मुसलमानों की बेजा हिमायत करके हिन्दू धर्म का नाश कर रही है। इस लिये हम हिन्दुओं को कॉग्रेस को ठुकरा देने की राह दे रहे है। परन्तु दूसरी ओर इनका रुख यह है कि ये हिन्दू जाति का दर्द ढोने वाले जमींदार और तालुकेदार लोग मुस्लिम लीग के साथ मिल कर हमारी बेड़ियों को मजबूत बना रहे हैं। संयुक्त प्रान्त की जमींदार पार्टी में बड़े कट्टर और हिन्दू धर्म की ध्वजा फहरानेवाले वीर योद्धा भरे हुए है और इसी मे मुस्लिम लीग के सरदार लोग हैं। इन दोनो का भाईचारा चल रहा है और दोनों मिल कर हम गरीब हिन्दू किसानो के विरुद्ध मोर्चे तैयार कर रहे हैं। यह ईमानदारी और ठंढे दिल से सोचने की बात है कि जो व्यक्ति लीगियों के साथ मिलकर हमारे सुख और स्वातन्त्र्य के मार्ग मे बाधाएं उपस्थित कर रहा है, जो हमें बर्बाद कर देने के लिए लीगियों के साथ मिल रहा है, वह क्या सचमुच हिन्दू है ? वह भले ही अपने को हिन्दू कहता हो परन्तु हमें तो ऐसे हिन्दू पर बिल्कुल भरोसा नहीं। वह हर्गिज हिन्दू जाति का सहायक और संरक्षक नहीं हो सकता। हो भी कैसे सकता है ? जिसने जिन्दगी भर हमें निचोड़ा है क्या वह हिन्दू जाति के नारे लगा देने से ही हिन्दुओं का अभिभावक बन जायेगा ?

यह भी होता कि वह, अब भी एक तरफ होकर हमारे साथ आ मिलता, तो हम मान लेते। परन्तु नहीं; वह तो अपने पुराने अस्तित्व को मजबूत बनाने की फिकर में है, इसी लिए वह उन लीगियो के साथ मिला हुआ है जिन्हें हम हिन्दू जाति का शत्रु बता रहे है। हिन्दू जाति के नारे लगाने में, हिन्दुओ को मुसलमानों के खिलाफ भड़काने में भी वह हिन्दू जाति का नहीं, अपने स्वार्थों की रक्षा कर रहा है। आप समझ रहे है कैसे? बिल्कुल सीधी सी बात है। इस समय देश के दुर्भाग्य से हिन्दू-मुसलमानो के बीच कुछ बात पैदा कर दी गयी है और इस सुनहले मौके का फायदा उठाकर वह हिन्दू-मुसलमानो को बुरी तरह से आपस मे लड़ा देना चाहता है ताकि इन दोनों की सम्मिलित शक्ति नष्ट-भ्रष्ट हो जाय और फिर उसकी जालिम जमींदारी के खिलाफ आवाज उठानेवाला भी कोई न रहे। वास्तव मे यह हिन्दू बननेवाला जमींदार वही कार्य कर रहा है जो अँग्रेज चाहते है। स्मरण रखिये कि इस प्रकार के सभी हिन्दू जमींदार जो जमींदार पार्टियो का संघटन बनाकर किसानो का विरोध कर रहे है, हिन्दू जाति के, हिन्दुस्तान की आजादी के, सबसे बड़े शत्रु है, लीगियों से भी अधिक खतरनाक है क्योंकि ये लोग आस्तीन के साँप के समान हमारे बीच मे घुसे हुए हैं। ऐसे जमींदार या इलाके वाले महन्त और मठाधीश, सभी उस श्रेणी के लोग है जिनका स्वार्थ जमींदारी की रक्त-शोषक प्रथा मे निहित है और इसी लिए ये सब के सब एक मुँह से कॉंग्रेस को कोस रहे है, जवाहरलाल को हिन्दुओ का शत्रु सिद्ध करने की कुचेष्टा भी कर रहे हैं। वह चाहते है कि कांग्रेस मर जाय; हमारी आजादी की

लड़ाई खतम हो जाय और उनकी जमींदारी ज्यों की त्यों कायम रह जाय। इस बात के लिए सबसे बड़ा हथियार उनके पास हिन्दू-मुस्लिम तनाजों को अनुचित रूप देना है। मतलब यह कि हिन्दू जाति को एक अडिग स्थिति प्राप्त करने के लिए इन जमींदार, महन्त और मठाधीशों को भी समझना होगा।

इसके पश्चात एक दूसरे प्रकार के हिन्दू और हैं। ये हैं नफाखोर और चोर बाजार वाले बनिये और सेठ-साहूकार। हमारे नन्हे-नन्हे बच्चे अन्न के बिना तड़प-तड़प कर ऐंठ गये, परन्तु इन राक्षसों को अपने मुनाफे की ही लगी रही। इनके भण्डारों का मुँह नहीं खुला। हमारी माँ-बहनें नंगी रह गयीं, परन्तु इन बे-रहमों ने कपड़ा रहते हुए भी हमें नहीं दिया। इन लोगों ने जब भी, जो कुछ भी हमें दिया बड़े टेढ़े-मेढ़े तरीकों से, एक के कई गुना लेकर ही दिया है। इन कुकृत्यों से कितने हिन्दू मौत के घाट उतर गये, कितनी हिन्दू ललनाओं की लाज लुट गयी, क्या इसका कोई हिसाब है? और आज यह भी बड़े जोर से हिन्दू बन रहे हैं; हम इन पापियों को कैसे सच्चा हिन्दू मान लें? दिल गवाही नहीं देता।

दिल का ही प्रश्न नहीं है। वस्तुस्थिति भी इसके विरुद्ध है। जिन लोगों का उद्देश्य हमें गरीब और गुलाम बनाकर अपनी सत्ता को कायम रखना है, जिन लोगों का स्वार्थ हमें निचोड़ कर अपना मुनाफा और पूंजी जोड़ने में है, वह कब हमारे शक्ति का कारण बन सकते हैं? ऐसे लोगों को लेकर हमारे मोर्चे मजबूत नहीं, कमजोर होंगे। ये लोग हिन्दू जाति को बूंद-बूंद करके कमजोर बना रहे हैं। इसलिए हिन्दू जाति को ठोस और मजबूत

साँचे मे ढालने के लिए आवश्यक है कि सबसे पहले हम इन्हीं का फैसला कर लें। या तो ये लोग अपने पापों का प्रायश्चित्त करके सार्वजनिक रूप से कसम खा ले कि अब आगे ये सचमुच हिन्दू बनकर कार्य करेंगे, अन्यथा अब इन्हें भी अहिन्दू समझकर, इनसे बिल्कुल अलग, इनकी किसी बात पर कान दिये बिना ही हमे कार्य करना होगा।

आप यह भली भाँति समझ रहे होंगे कि इस समय आप किन परिस्थितियों मे, कहाँ खड़े है, आपको किन लोगो को लेकर, किन पर भरोसा करके कार्य करना है। इस प्रकार आपको अपनी वास्तविक शक्ति का सही अन्दाज लग गया होगा। आप यह भी समझने लगे होंगे कि भारत की आजादी और हिन्दू जाति का उद्धार—दोनों परापेक्षित (Relative) शब्द हैं। आखिर इसी लिए तो हम अखण्ड हिन्दुस्तान की बात कर रहे है। अखण्ड हिन्दुस्तान के लिए आवश्यक है कि समस्त हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तान के लिए परम आवश्यक है कि समस्त हिन्दू जाति अखण्ड रूप से एक हो जाये, उसके बीच जालिम जर्मीदारो और निर्दय नफाखोरों का विध्वंसक अस्तित्व ही न रह जाय।

सारांश यह कि जो लोग अपने कुकृत्यो से हमें कमजोर बना रहे है और हिन्दुस्तानन की आजादी के खिलाफ पड़ रहे हैं वे हिन्दू हों या मुसलमान, कांग्रेस मे हों या हिन्दू सभा या मुस्लिम लीग मे हो, हिन्दू संघटन को उनसे बिल्कुल अछूता रखना होगा।

हिन्दुओ के अन्दर एक और महत्वपूर्ण फिरका है जो अपने

'मुफ्तखोर' अस्तित्व को सामाजिक और सामूहिक रूप से संघटित करके बैठा हुआ है। इनसे वे सारे महन्त और पुजारी लोग आ जाते हैं जिनका उद्भव हिन्दू जाति के पारस्परिक बिलगाव से ही होता है। यह अमुक सम्प्रदाय के गुरु या पुरोहित हैं, यह अमुक वर्ग के सरदार या सरगना है, और इन गुरु, महन्त पुरोहित और पुजारियों का, इन सरदारों और सरगनों का अपना-अपना दल और अपना-अपना वर्ग है। अपने-अपने वर्गों से उनके अपने-अपने 'रसूम' बधे हुए हैं; उनकी विधिवत पूजा होती रहती है और ये लोग मौज लिया करते हैं। हिन्दू जाति यदि आज मिलकर एक हो जाय अर्थात दल के अन्दर जो बहुत से दल फैले हुए हैं यदि उनका अस्तित्व समाप्त करके सारी हिन्दू जाति को एक बना दिया जाय तो इन मुफ्तखोरों का अस्तित्व समाप्त हो जाता है, इन मुफ्तखोरों के वर्गीय कुकृत्य और "अखाड़े", इनके सारे विभाजक कारनामों का अन्त हो जाता है। इसी लिए ये मुफ्तखोर पुरोहित और सरदार लोग हर्गिज नहीं चाहते कि हिन्दू जाति एक सांचे में ढलकर ठोस बन जाये। मतलब यह कि इन मुफ्तखोरों को पैदा करके हमने अपनी ही एकता के मार्ग में कांटा बोया है। इस बात से तो कोई सही दिमाग वाला व्यक्ति इन्कार नहीं करेगा कि जब तक हिन्दू जाति टुकड़ों में बंटी हुई है, जब तक उसकी छाती पर कुछ विभाजक शक्तियां जमकर बैठी हुई हैं, हिन्दू जाति में सचमुच शक्ति उत्पन्न हो ही नहीं सकती, वह एक होकर, एक चित्त से किसी शक्ति या सङ्कट का सामना कर ही नहीं सकती। इसलिए आवश्यक है कि इन मुफ्तखोरों का हम सबसे पहले सफाया कर दें।

सफाया करने का यह मतलब नहीं कि तलवार लेकर आप उनके सिर को काट डालें। उनका सफाया तो केवल आपके मन से हो जाता है; आप उनकी झूठी पूजा करना छोड़ दें, उन्हें व्यर्थ के रसूम देना बन्द कर दें, उनकी सलाहो की ओर से कान फेर लें, वे अपने आप साफ हो जायेंगे।

मैंने आपके सम्मुख जमींदार, जागीरदार, चोर बाजार वाले, नफाखोर, मुफ्तखोर आदि आदि कई लोगो का नाम रखा है। ये सारे के सारे हिन्दू जाति के लिए आस्तीन के सॉप हैं, हमे इन सबसे अलग रहना होगा। परन्तु मैं यह भी स्वीकार करता हूँ कि अब हमारे पास लम्बी शिक्षा और प्रचार के लिए समय नहीं है। सङ्कट मुँह खोले हुए सामने खड़ा है। हमे इसका सामना करने के लिए झटपट कमर कस लेना होगा। अब वर्षों सुलह-समझौते और तैयारी करने का वक्त गुजर चुका है। अब तो डंके पर चोट देना है, जो बढ़ुर जाते है, उन्हें लेकर आगे बढ़ जाना है। रोग ने 'सन्यपात' का रूप धारण कर लिया है, अब 'क्युरेटिव' नहीं, 'पैलेटिव', औषधि नही इंजेक्शन की आवश्यकता है। अब तक मैंने जो भी प्रस्ताव रखे है वे इसी अनुभूति से ही प्रेरित हुए हैं और इसी अनुभूति से प्रेरित होकर मैं कहता हूँ कि आप लोग झटपट अपने-अपने महल्लों की, अपने-अपने गॉवों की, बिल्कुल निर्दल आधार पर, सुदृढ़ समितियॉ बना लें। इसमे आप उन लोगो को भी शामिल कर सकते है जिनका नाम मैंने अभी आपको गिनाया है, परन्तु निम्नलिखित शर्तों के साथ :—

(१) इन समितियों में उपर्युक्त रीति से शपथ लिए हुए लोगों को ही स्थान रहेगा।

(२) इन समितियों में प्रत्येक घर के पीछे एक शपथधारी सदस्य रहेगा। जिन्होंने शपथ लेने से इन्कार किया है, उन्हें इन समितियों में कोई स्थान न मिलेगा। हो सकता है कि आपके महल्ले में कुछ मुसलमान हों। वे लोग आपके ढंग से शपथ नहीं लेंगे। उनसे आप कहें कि वे महल्ले वालों के सामने अपनी मस्जिदों में कुरान शरीफ को लेकर कसम खायँ कि वे सदा महल्ले के साथ ही जियेंगे-मरेंगे। हो सकता है कि इन मुसलमानों में कुछ या बहुत से लीगी हों और शपथपूर्वक आपके साथ न हों, परन्तु ये सब उसी प्रकार छोड़े जा सकते हैं जैसे आपको अपने ही ढुलमुल-यकीन लोगों को छोड़ देना होगा। परन्तु साथ ही आपको पता भी हो जायगा कि कौन आपके साथ हैं और किनसे आपको होशियार रहना है।

(३) इन समितियों की सदस्यता के लिए किसी प्रकार के चन्दे की शर्त न होगी, इसकी सदस्यता में किसी प्रकार का भी जातीय, धार्मिक, सामाजिक या आर्थिक भेद बाधक न होगा।

(४) जो सामाजिक दृष्टि से अब तक हेय समझा जाता रहा है उसे यथा सम्भव ऊपर से ऊपर रखा जाय।

(५) इन समितियों में विशिष्ट और संघटित पदाधिकारियों का वर्ग नहीं होगा। महल्ले की प्रत्येक आवश्यकता और समस्या का निर्णय सारी समिति सम्मिलित रूप से करेगी। प्रति सप्ताह, प्रति पखवाड़े अथवा प्रति मास, जैसी भी आवश्यकता हो, एक बार सब लोगों को सुविधानुसार एकत्र करके निर्णीत बातों को

पूर्ति का भार सम्बद्ध व्यक्तियों को सौंप देना होगा। किसी की त्रुटि या गैर-जिम्मेदारी पर प्रत्येक सदस्य को टोकने का पूरा-पूरा अधिकार होगा। किसी जटिल समस्या के उपस्थित होने पर पूरी समिति विचार करेगी।

(६) समिति की बैठकों के लिए कोई अलग से सभा भवन नहीं होगा। ये बैठकें मन्दिरों में, मस्जिदों में, अछूतों के दरवाजों पर या मैदानों मे हुआ करेगी।

(७) कार्य और व्यवस्था के लिए जो भी खर्च हो वह आवश्यकतानुसार तत्काल एकत्र कर लिया जाय।

(८) इन समितियो का मूल और एक मात्र लक्ष्य महल्ले की रक्षा और सम्वृद्धि होगी। इसमे किसी पर आक्रमण की बात हर्गिज नहीं होगी, परन्तु यदि कोई आक्रमण करता है तो उसे विफल करने की सम्पूर्ण चेष्टा की जायगी।

(९) इन समितियो को एक बहुत बड़ा ध्यान इस बात का रखना होगा कि जमींदारों, चोर बाजार वालों तथा ऐसे ही अनेक मुफ्तखोर और विघातक शक्तियों पर नित्य, अनवरत् रूप से अंकुश लग रहा है।

(१०) जो व्यक्ति महल्ले की भलाई के विरुद्ध कार्य करे, जो व्यक्ति हम पर जमींदारी या अन्य रक्त-शोषक पंजा रखने की कुचेष्टा करे, जो व्यक्ति समर्थ होते हुए भी महल्लेवालों का दुख दूर करने से मुँह मोड़े—उससे हम पूर्णतः असहयोग कर दें। इस समिति का यदि कोई सदस्य किसी भी रूप मे कायर सिद्ध हुआ है, महल्ले या अपने साथी की जरूरत पड़ने पर रक्षा नहीं की है, मदद को नहीं पहुँचा है, अपनी जान बचा गया है,

अपने पैसे या सौदागरी के लोभ में आ गया है उसे सम्पूर्ण समिति के समक्ष उपस्थित करके, विना किसी वकालत के, अपराधी घोषित करना होगा, समिति से बिल्कुल बे-मुरव्वती के साथ निकाल देना होगा और महल्ले भर में डुग्गी पिटवा देना होगा कि 'अमुक व्यक्ति को अमुक अपराध के लिए महल्ला समिति ने निष्कासित कर दिया है इसलिए लोग इस आदमी से होशियार रहें। साथ ही साथ यदि किसी ने किसी व्यक्ति पर आघात किया है तो उसे तुरत बिना किसी दलील के, पुलिस के हवाले कर देना होगा।

आज हम अच्छी तरह देख रहे हैं कि एक आदमी छुरा भोंक कर आता है और हम सब उसे जानते-सुनते हुए भी छिपा लेते हैं। नतीजा यह होता है कि उसके बदले में चार जगह और छुरे भोंके जाते हैं, और इस प्रकार छुरे-बाजी का चक्र बढ़ता ही जा रहा है, चारों ओर अशान्ति और आतङ्क का वातावरण व्याप्त है। समाज का जीवन दिनोंदिन दूभर होता जा रहा है, रोजी-रोजगार बन्द होते जा रहे हैं, लोग बे-मौत के मर जाना चाहते हैं। इसलिए आवश्यक है कि लुक-छिपकर बे-गुनाह छुरा भोंकनेवालों को समाप्त कर दिया जाय।

आप यह अच्छी प्रकार समझ लें कि जो व्यक्ति छिप कर छुरा भोंकता है और फिर जान बचाकर भाग निकलता है वह हर्गिज बहादुर नहीं माना जा सकता। वह बुजदिल है, समाज-द्रोही है। सारे देश, सारे महल्ले की शान्ति का शत्रु है। ऐसे लोगों की उत्पत्ति और पोषण करके हम विद्वेष और विनाश की चिनगारियाँ बटोर रहे हैं।

यहाँ हिंसा-अहिंसा का नहीं, नीति का प्रश्न है। अँधेरे में खेल खेलनेवालों को हर्गिज बहादुर नहीं माना जा सकता। ऐसे लोगों को लेकर, ऐसे लोगों का पृष्ट-पोषण करके हिन्दू जाति शक्तिशाली नहीं बन सकती। हमें इस समय एक्के-दुक्के मार कर भागनेवालों की आवश्यकता नहीं, हमें तो अब दृढ़ पर प्रलय से भी टकराने वाले हिन्दू समुदाय की आवश्यकता है।

आप यह भी समझ लें कि जो मरना नहीं जानता वह कभी वीर नहीं हो सकता। जो लुक-छिपकर छुरे भोंकता है, और फिर भाग निकलता है, वह हिन्दू हो मुसलमान, निश्चय ही उसके मन में यह भाव रहता है कि जातिवाले, महल्लेवाले था खुद सुन-सान परिस्थितियाँ, उसकी मदद करेंगी और वह साफ बच जायगा। जिसके मन में मारने के पहले अपने बचाव का ख्याल सता रहा है, वह हर्गिज बहादुर नहीं हो सकता। ऐसे वीरों से हिन्दू जाति आगे नहीं बढ़ सकती।

आज कितने ऐसे मारनेवाले हैं जो मैदान में मारने के लिए निकल पड़े हैं और मारते ही जाते हैं जब तक कि स्वयं न मार दिये जायें ?

इस प्रकार की छुरेबाजी, गँड़ासे बाजी, बम या तेजाब बाजी को हम रण नीति का अङ्ग भी नहीं मान सकते। रण-नीति तो वही है जो विधिवत चलनेवाले किसी युद्ध की नीति हो। क्या हिन्दू जाति ने कोई रण घोषित कर दिया है ? उत्तर मिलता है बिल्कुल नहीं।

अभिप्राय यह कि हमें सबसे पहले आक्रमणकारी के रूप

में नहीं, आत्म-रक्षक भाव से, एक साँचे में ढलकर ठोस और अडिग बन जाना होगा।

इन सारी बातों पर सतर्कतापूर्वक ध्यान रखते हुए, इसी प्रकार का तुरत कुछ कार्य किये बिना अब हमारी रक्षा, हमारा उद्धार असम्भव है।

८

मैंने अभी कहा है कि अँगरेजी शासन भारत में समाप्त होना चाहता है, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि अँग्रेजों का स्वार्थ भी भारत से उठ जायगा। आप दुनिया के नक्शे पर नजर डालें। बातें धीरे-धीरे आपकी समझ में अपने आप आ जायेंगी।

ब्रिटिश द्वीप समूह का पतनोन्मुख साम्राज्य अब भी विश्व की छाती पर रक्ताङ्कित नजर आ रहा है। भारत से सरकारी शासन उठाने की बात जरूर चल रही है परन्तु भूमध्यसागर मध्य पूर्व, अफ्रीका, हिन्द महासागर, अन्ध महासागर—सर्वत्र इनके अपने राज्य और अड्डे अब भी सुरक्षित और सुशासित रूप से चल रहे हैं। इन्हें सुरक्षित और सुशासित रखने में ही ब्रिटेन का आर्थिक एवं व्यावसायिक स्वार्थ है। विश्व के विशाल कार-खानों वाले इस छोटे से द्वीप को समस्त पृथ्वी से कच्चा माल प्राप्त करने और उसे पक्के माल में बदलकर सारे संसार में समु-चित रूप से खपाने के लिए इसे देश-देशान्तरों से अटूट नाता

रखना ही होगा। अफ्रीका, भारत और चीन को उर्वरा-भूमि के शोषण पर ही इसका वृद्धमान अस्तित्व निर्भर करता है। इस अस्तित्व को कायम रखने के लिए जल, थल और नभ सेनाओ की आवश्यकता होगी, उन सेनाओ के सैनिक अड्डे भी होगे, सेना और सैनिक अड्डो के लिए प्रर्याप्त जन बल और भौतिक साधनों की भी अनिवार्य आवश्यकता होगी ही।

विश्व मे इस समय दो प्रमुख विचार-धाराएँ कार्य कर रही है—पूँजीवाद और समूहवाद। इन दोनो के प्रतिरोधी दृष्टिकोण है और अपने-अपने पृष्ठ-पोषक है। पूँजीवाद के पक्ष मे ब्रिटेन और अमेरिका का प्राबल्य है तो समूहवाद के पक्ष मे रूस को अग्रगण्य मानना होगा। गत युद्ध ने इन दोनों दलों की सीमाएँ मिला दी है। एक को दूसरे का साक्षात् भय समा गया है। भय ही नहीं, संघर्ष भी शुरू है। जर्मनी, युनान, तुर्किस्तान, बालकन प्रायद्वीप, मध्य पूर्व, चीन—सर्वत्र टट्टी की आड़ से लड़ाई जारी है।

भारत मे अँग्रेजों के कमजोर होने से जैसे पाकिस्तान बन रहा है उसी प्रकार विश्व मे अँग्रेजों के स्थान को अमेरिका लेता जा रहा है। यूनान मे अँग्रेजी सेनाएँ अमेरिकन सेनाओ के लिए स्थान खाली कर रही हैं। उसी प्रकार चीन मे अमेरिकन सेनाएँ वही कार्य कर रही हैं जो अँग्रेजो को स्वयं करना था। संक्षेप में, यदि अँग्रेजों का सैनिक बल क्षीण हो रहा है तो साथ ही साथ वे अमेरिकन सहयोग से अपने आर्थिक एवं व्यावसायिक स्वार्थ को मजबूत भी बनाने की चेष्टा मे हैं।

इस स्वार्थ रक्षा के पीछे ऐंग्लो-सैक्सन जातियों का ऐति-

हासिक एवं सांस्कृतिक गंठ-बन्धन भी कार्य कर रहा है। कहने का अभिप्राय यह कि अँग्रेज भारत में अपने सरकारी शासन को समाप्त तो अवश्य करना चाहते है परन्तु साथ ही साथ संसार भर में फैले हुए अपने स्वार्थों की सुरक्षा एवं सुसंघटन के लिए तथा स्वयं भारतीय साधनों का लाभ लेने के लिए भी भारत में किसी न किसी प्रकार से अपने पड़ाव की सुविधाएं भी चाहते हैं। इनके इस काम में कैनाडा, संयुक्त राष्ट्र (अमेरिका), अफ्रीकन प्रदेश, आस्ट्रेलिया—सबकी सद्भावना है। परिणामतः, यदि भारत को विश्व के पराधीन राष्ट्रों का समर्थन प्राप्त है तो अँग्रेजों के पीछे भी कोई आवाज गूँज रही है। आज हम विदेशों में बद-नाम हो रहे है। यही कारण है कि आज चारों ओर से दु-तरफी आवाजें उठ रही हैं। यह जानते हुए भी कि भारत पूर्णतः प्राकृतिक सीमाओं द्वारा अलग किया हुआ विश्व का एक सम्पूर्ण देश है, उसे अपनी प्रत्येक समस्याओं को स्वयं हल करने का बिल्कुल नैसर्गिक अधिकार है, ये लोग हिन्दू-मुसलमानों की आड़ लेकर संदिग्ध भाषा में बातें कर रहे है, अँग्रेजों की मध्यस्थता को बिल्कुल साधारण सी बात बता रहे हैं।

इस अन्तर्राष्ट्रीय पृष्ठ भूमि के साथ ही आपको भारत की आन्तरिक राजनीति पर विचार करना होगा।

मैंने पिछले अध्यायों में कहा है कि भारत के नक्शे में पाकिस्तान का घेरा डाल दिया गया है। सारे देश को हिन्दू-मुसलमान बनाकर टुकड़े-टुकड़े कर देने की योजना तैयार है। यह है पाकिस्तान। पाकिस्तान के सम्बन्ध में अनेकों पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। राजेन्द्र बाबू की "खण्डित भारत" और श्रीशचन्द्र

पाण्डेय की "पाकिस्तान" नामी पुस्तकें इस विषय के अध्ययन के लिए पर्याप्त होगी। मैं पाकिस्तान की समीक्षा नहीं कर रहा हूँ, इस पुस्तक का वह विषय भी नही है। मुझे केवल इतना ही कहना है कि पाकिस्तानियों के अनुसार ब्रिटिश भारत को मुस्लिम बहुमत और हिन्दू बहुमत वाले प्रान्तों में बाँट दिया जायगा। इस प्रकार सिन्ध, सीमा प्रान्त और पंजाब को मिलाकर पाकिस्तान का एक टुकड़ा तैयार होगा। इन प्रान्तों मे मुस्लिम बहुमत है। मान लिया। परन्तु यही तक होता तो मन को समझा लेते; पाकिस्तान का दूसरा टुकड़ा बङ्गाल के साथ आसाम को लेकर बनता है। बङ्गाल मे मुस्लिम बहुमत है। पर आश्चर्य तो यह है कि इस पूर्वीय घेरे को तैयार करने के लिए आसाम का हिन्दू बहुमत वाला प्रान्त भी जबरदस्ती घसीटा जा रहा है। यह पाकिस्तानी दलील कुछ समझ में आती नही। चूँकि अंग्रेजों ने कहा कि हम इसी प्रकार हिन्दुस्तान को बाँट कर अलग होंगे, इसलिए संघर्ष होना अनिवार्य था। अव्वल तो यही मानना कि एक प्राकृतिक देश के अनेकों अप्राकृतिक टुकड़े कर दिये जायें, पर बात ऐसी है कि जब दो भाई साथ चलना नहीं चाहते तो उन दोनो को जबरदस्ती तो साथ नहीं रखा जा सकता। किसी को किसी पर जबरदस्ती करने का हक नही है। मान लिया, इस बात को भी मान लिया कि आप धोती पहने या पाजामा, इसने किसी प्रकार जबरदस्ती नहीं होनी चाहिये। यही बात है तो आसाम को भी आप जबरदस्ती नही घसीटने पायेंगे।

एक कदम और आगे बढ़िये। सीमा प्रांत मे मुस्लिम बहुमत अवश्य है, परंतु पाकिस्तानी बहुमत नही। इसलिए सीमा प्रांत

भी पाकिस्तानी घेरे में शामिल नहीं होना चाहता। और सुनियेगा? संयुक्त प्रांत के मुसलमानों में ४५% ने लीगियों के विरुद्ध वोट दिया था। संयुक्त प्रांत का ३३वाँ राजनीतिक सम्मेलन अभी हाल में समाप्त हुआ है। इसमें लाखों की भीड़ थी और सब मुसलमान कार्यकर्ता थे। इतना बड़ा सम्मेलन मुसलमान क्षेत्र में, मुसलमान कार्यकर्ताओं के बल पर ही एक अनुकरणीय शांति और व्यवस्था के साथ समाप्त हुआ। कहाँ थे पाकिस्तानी? यथार्थतः मुसलमानों के एक बहुत बड़े भाग को पाकिस्तानी मखौल में बिल्कुल विश्वास नहीं। पते की बात तो यह है कि आज जो पाकिस्तान की गाड़ी हाँक रहे हैं, वे स्वयं हिन्दुस्तान में रहकर मजे लेना चाहते हैं। चाहिये तो यह था कि जिना साहेब अपनी बम्बई की कोठी और लियाकत अली अपनी संयुक्त प्रांत की मिलकियत को छोड़कर सिध में जा बसते पर यह नहीं होगा; खुद तो रहेंगे हिन्दुस्तान में और बातें करेंगे पाकिस्तान की। ऐसी ही अनेकों बेढंगी बातें हैं जो अनायास संघर्ष और कलह उत्पन्न कर रही हैं। बात सीधी होती तो आसानी से बन गयी होती, टेढ़ी बात को सीधी बनाने के लिए हत्याएँ, बलात्कार, विध्वंस और पशुता का सहारा लिया जा रहा है।

परिणामतः हिन्दू भी अब ऊब गये; सिख भी ऊब गये। गर्जेकि जो पाकिस्तानी नहीं है, सभी ऊब गये। ऊबकर उन्होंने स्पष्ट रूप से कह दिया है कि उन लोगों के साथ हर्गिज नहीं रह सकते जो हमें मिटा देने पर तुले हुए हैं। बिल्कुल मोटी अकल की बात है। पाकिस्तानियों को जबरदस्ती हिन्दुस्तान के साथ

नहीं रखा जा सकता तो हिन्दू और सिखो को भी जबरदस्ती पाकिस्तान में नहीं ढकेला जा सकता। बङ्गाल और और पंजाब की बर्बरताओं को देखकर कांग्रेस को विवश होकर कह देना पड़ा है कि अच्छा होगा पंजाब को बॉट दिया जाय। पंजाब का ही सिद्धान्त बङ्गाल मे भी लागू होता है। यह कोई मानने-मनाने की बात नहीं, बिल्कुल दलील की बात है। हिन्दुस्तान की आबादी मे २४% मुसलमान है, इसलिए वे चाहते है कि उनके अलग देश कायम हो, अलग पाकिस्तान बने। परन्तु पंजाब और बङ्गाल मे ४५% हिन्दू और सिख है। २४% के लिए देश बन सकता है तो ४५% के लिए नहीं ? ठीक तो है; जब टुकड़े ही हो रहे हैं तो बाकायदे हों।

इन सारे बॅटवारो को अँग्रेजी योजनाओं से ही प्रेरणा मिल रही है। आपको मालूम है कि भारत की आजादी का मसौदा तैयार करने कैबिनेट मिशन भारत आया था। बड़ी लम्बी चौड़ी बातो के पश्चात उसने कहा कि हम तो तुम्हे बिल्कुल आजाद कर देना चाहते है लेकिन तुम लोग तो अपना कोई सम्मिलित प्रस्ताव रख ही नहीं रहे हो, इसलिए, मजबूर होकर, हमारी अकल में जैसे जॅचता है उसी तरह तुम्हें आजाद करके छोड़ेगे। लीजिये साहेब। उन्होंने कुछ पाकिस्तान बनाया, हिन्दुस्तान बनाया और अपनी योजना घोषित कर दी। परंतु थोड़ी दूर चल कर उनकी समझ में कुछ नयी बातें आयीं। पहले उन्होंने कहा था कि एक विधान परिषद बनेगा जो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के आधार पर सारे देश के लिए विधान बना देगा। इस विधान परिषद के रास्ते पेचीदा तो थे पर कॉंग्रेस ने इन टेढ़े-मेढ़े रास्तो

को भी तै करने की ठान ली। मूल प्रश्न केवल यही था कि पहले मुर्ज़ी तो किसी प्रकार टलें।

मैंने एक जापानी 'बबुआ' देखा था; उसे चाहे जैसे भी उलट-पलट कर रख दें, वह फिर उछल कर सीधा खड़ा हो जाता था। ठीक कुछ ऐसी ही बात इस हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की है। कैबिनेट मिशन की पाकिस्तानी योजना में भी हिन्दुस्तान की आत्मा बोलती सी मालूम पड़ी। जिना साहेब, उनके टोड़ी मित्र, और फिर उन्हीं के साथ ब्रिटेन की मजदूर सरकार ने भी घबड़ा कर बात पर फिर गौर किया। कॉंग्रेस और लीग को फिर लन्दन बुलाया गया और पहली योजना में नये संशोधनों की घोषणा की गयी और फिर उसमें एक बात यह कही गयी कि "किसी पर जबरदस्ती यह योजना नहीं लादी जा सकती"। मतलब उनका यह था कि यदि मुस्लिम लीग विधान परिषद् में शामिल नहीं होती या विधान परिषद् के तैयार किए हुए विधान को नहीं मानती तो वह इसके लिए स्वतंत्र है। परंतु आप जानते हैं कि जरूरत से ज्यादा होशियारी भी घातक होती है। कॉंग्रेस अंग्रेजों को सारी बात मानती आ रही है। उसने कहा ठीक; तुम्हारी इस बात को भी मान लिया। इसका मतलब आप समझे? इसका मतलब यही होता है कि आसाम और सीमा प्रांत यदि पाकिस्तानियों के साथ बैठकर अनुभव करें कि उन पर कोई शासन उनकी मर्जी के खिलाफ जबरदस्ती लादा जा रहा है तो वे उससे अलग हो सकते हैं। इस बात का यह भी मतलब हो जाता है कि बङ्गाल के हिन्दू और पंजाब के सिख अपने बहुमत क्षेत्रों को उन प्रांतों से अलग करके स्वतंत्र प्रांत बना सकते हैं। बङ्गाल

और पंजाब से हिन्दू और सिख निकल आते है तो बेचारे जिना साहेब के पाकिस्तान में दम ही क्या रह जाता है ?

यहाँ तक तो ब्रिटिश भारत की बात हुई। देशी राज्यों के सम्बन्ध में भो ब्रिटिश कैबिनेट मिशन ने योजना बनायी है। उनका कहना है कि अंग्रेजों का शासन समाप्त होने पर ब्रिटिश भारत के समान ही देशी रियासतें भी स्वतंत्र हो जायेंगी। अब तक अंग्रेजी सरकार से जो भी उनके सुलह-समझौते थे वे सब समाप्त हो जायेंगे। उनके ऊपर जो अँग्रेजों की सत्ता थी वह उठ जायेगी; उनके ऊपर देशी या विदेशी कोई नयी सत्ता नहीं लादी जायेगी। अँग्रेज बेचारे भी कितने न्यायशील हैं! कितनी सीधी और सरल सी बात कहते है। परंतु इस सीधेपन में ही विष भरा हुआ है।

रियासतें बिल्कुल स्वतंत्र है कि वे भारत मे बनने वाले केन्द्रीय शासन मे शामिल हो या उससे अलग रहें। आप समझ रहे है ? ब्रिटिश भारत मे पाकिस्तानियों के जोर को घटते हुए देख कर अब पाकिस्तानी चक्र देशी राज्यो में भी घुमाया जा रहा है। नरेन्द्र मण्डल देशी रियासतों को विधान परिषद् में शामिल कराकर भारत का स्वशासन तैयार करने के विरुद्ध रवइया अख्तियार कर रहा है। भूपाल के नव्वाब नरेन्द्र-मण्डल के चान्सलर है। वह और उनके अन्य साथी यही सलाह दे रहे है कि अभी विधान-परिषद मे शामिल होने का समय नहीं आया है। समय कब आवेगा, कैसे आवेगा, इन बातों से अलग एक बात यह है कि कुछ हिन्दू राज्यों ने विधान परिषद में, नरेन्द्रमण्डल की इच्छाओ के विरुद्ध शामिल हो जाने का निश्चय कर लिया है। मुसलमान रियासते किसी नयी बात की प्रतीक्षा कर रही हैं।

लार्ड माउण्ट बेटन क्या कहेंगे, जिना साहेब का नया पाकिस्तानी कदम क्या होगा, इन पर अटकल बाजियों की न तो आवश्यकता है और न सुरक्षित ही है, परंतु इतना तो स्पष्ट है कि राजाओं और नव्वाबों में भी हिन्दू-मुसलमान, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की लहर दौड़ रही है। हो सकता है कि कुछ मुस्लिम रियासतें हिन्दुस्तान से अलग होकर पाकिस्तान में शामिल हों। बस, इतनी लम्बी विवेचना करके मैंने आपको केवल यही दिखलाने की चेष्टा की है कि इस समय भारत की राजनीति बिल्कुल तरल हो उठी है; इसमें हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के ज्वार-भाटे आ रहे हैं; एक ओर से हिन्दुस्तान बढ़ना चाहता है तो दूसरी ओर से उसे घटाने की कोशिश की जा रही है। पण्डित जवाहर लाल विधान परिषद् में न शामिल होने वाले राज्यों को देश की स्वतंत्रता का शत्रु मानते हैं तो मियाँ लियाकत अली इसे "खोखली धमकी" बताने से बाज नहीं आते। सारांश यह कि हिन्दू-मुसलमानों की समस्याओं को उत्तरोत्तर जटिल बनाया जा रहा है। इसके पीछे देशी और विदेशी राजनीति को भी अब आप समझ चुके होंगे। हिन्दू जाति की सुरक्षा और संगठन के लिए इन बातों पर ध्यान रखते हुए ही आगे पाँव बढ़ाना होगा। मैंने इन सारी बातों की ओर इसलिए संकेत कर दिया है कि हम अनजान के कारण कहीं गफलत न खा जायें।

इस प्रकार अब आपने देख लिया है कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के प्रश्न राजा-रंक—सबको हिन्दू और मुसलमान बना कर आमने-सामने खड़ा करते जा रहे हैं। आप पूछेंगे कि आखिर इनका कब, कहाँ, कैसे अन्त होगा? इसके सच्चे समा-

ध्यान के लिए मै आपके सम्मुख काशी का एक दृश्य रखता हूँ। काशी मे एक स्थान है मछोदरी; मछोदरी में एक बाग है। इसे मछोदरी पार्क कहते है। इसी पार्क में बिड़ला का आयुर्वेदिक अस्पताल और घण्टा घर भी है। इस पार्क के चारों ओर सड़क और 'फुट-पाथ' है। इन 'फुट-पाथो' पर गाय घाट की ओर पचासो पंगु, कोढ़ी, और रोगी भिखमंगे पड़े रहते है। इन भिखमगों को राजा बिड़ला की ओर से रोज खिचड़ी बना कर बाँटी जाती है। बिड़ला की उस खिचड़ी का वितरण और आज अंग्रेजों द्वारा हमें आजादी का दान—दोनों सर्वांशतः एक समान है। खिचड़ी बटती है तो भिखमंगे आपस मे ही जूझने लगते है। एक कहता है कि दूसरे ने दो बार ले लिया, दूसरा कहता है कि पहले ने नाहक झगड़ा खड़ा किया है। इन लूले-अपाहिजो की मार-काट कभी-कभी बड़ी दयनीय हो जाया करती है। अक्सर ये लहू-लहान हो जाते हैं। और बाँटने वाले बार-बार खिचड़ी का टोप लेकर लौटते रहते है और कहते जाते है कि यदि तुम सब इसी प्रकार लड़ोगे तो मै किसी को भी खिचड़ी नही दूँगा। ठीक यही दशा आज हिन्दू-मुसलमानो की है। कोई कहता है हमारी पाकिस्तान की झोली भर दो, कोई कहता है हमारे हिन्दुस्तानी टुकड़े मे कमी मत करो और बेचारे अंग्रेज आजिज है कि इन कमबख्तों का बँटवारा कैसे हो। वे बार-बार प्रार्थना कर रहे हैं कि आपस में मिल-जुल कर रहो तो सारी खिचड़ी तुम्हें बाँट देंगे।

मतलब आप समझ रहे है? आजादी भीख मांगने से नही मिलती। दी नही जाती, ली जाती है। इसी लिए जब तक आप स्वयं शक्तिशाली बनकर अपनी आजादी अपने आप नहीं ले लेते

ये झगड़े और रक्त-पात, ये हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी दाव-पेंच चलते ही रहेंगे। और इसी लिए यह परम आवश्यक है कि आप वाइसराय और नेताओं के सम्मेलन की ओर आँखें उठाये मत बैठे रहें, आप यह सोचने की एक क्षण के लिए भी गलती न करें कि अँग्रेजी घोषणाओं से आपकी आजादी कायम होगी। आजाद होने के लिए आपको आजादी के योग्य बनना पड़ेगा, आपको इतनी शक्ति की आवश्यकता होगी कि आप अपनी आजादी को पाकर उसे सुरक्षित रख सकें, सम्भव है, जून, '४८ के पश्चात भी आपको आजादी के लिए लड़ायी जारी रखनी पड़े। बहुत सी सम्भावनाएँ हैं, इसलिए यदि आप सचमुच हिन्दुस्तान को आजाद देखना चाहते हैं, यदि आप सचमुच चाहते हैं कि आपको हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के विषम ज्वर में फँसाकर नष्ट-भ्रष्ट न कर दिया जाय, यदि आपको वास्तव मे हिन्दू जाति की समृद्धि और हिन्दुस्तान के हितों का ख्याल है तो आप तत्काल सचेत हो जायें। आप दिल्ली और लंदन की ओर से आँखें फेर कर अपने स्व-संघटन में, अपनी आत्म-शुद्धि में लग जायें। कांग्रेस ने यह गलती की; मुस्लिम लीग ने यह नाजायज मांग की, वाइसराय ने यह चाल चली, गाँधी जी या जवाहर लाल की अमुक बातें ठीक हैं या गलत हैं—इन निठल्ले-बाजियों से हिन्दू जाति या हिन्दुस्तान, किसी को ताकत नहीं मिलती। और जब तक आपमें ताकत नहीं है, आपको दूसरों के इशारों पर ही नाचना पड़ेगा। आप खुशी से नहीं नाचेंगे तो जबरदस्ती नचाये जायेंगे।

इस कुछ लम्बे विवेचन के द्वारा मैंने आपके सम्मुख यह स्पष्ट

करने की चेष्टा की है कि आप इस समय कैसी घातक राजनीति के चक्र में जा फँसे हैं, और इस लिए आपको क्योंकर बातें छोड़-कर काम में लग जाना है। आप यह अच्छी तरह समझ लें कि आप केवल अखबारों में दंगों की खबरें पढ़-पढ़कर उबला करेंगे और इनके निवारण के लिए कुछ करेंगे नही तो आपका सर्वनाश निश्तिच-सा ही है।

मुझसे अक्सर कई लोग यह पूँछते हैं कि आखिर इस रक्त-पात और संहार का अन्त कब होगा? मैं भी अक्सर यही उत्तर देता हूँ कि जब तक आप स्वयं इसे रोकने की कोशिश न करेंगे। एक आदमी ने पूँछा कि—"आखिर कॉग्रेस क्या कर रही है?" मैंने कहा—"कॉग्रेस गयी चूल्हे-भाड़ मे, आप क्या कर रहे है?"

इन मूर्खों को बात समझ में नही आती। कॉग्रेस कोई कामरूप-कमच्छा की जादूगरनी तो है नहीं जो झोले के अन्दर से मिट्टी का सोना पैदा किया करती है। आखिर कॉग्रेस है क्या चीज? कोई कल है, कोई पुर्जा है, कोई विलायती नाटक-मण्डली है—कॉग्रेस है क्या चीज? हमारे-आप जैसे कुछ आदमियों की जमात या संघटन ही तो कॉग्रेस है। वह लोग भी तो हमारे ही घर, गाँव, महल्ले या शहर के आदमी है। फिर इन विस्मित प्रश्नों का मतलब? मतलब यह कि हम स्वयं तो चन्डू की पिनक में शराबोर है और जब कभी झोंक आ जाती है तो रह-रह कर ताव के साथ पूँछ लिया करते है कि पण्डित जी ने कथा का कौन सा अध्याय समाप्त किया। इन चण्डूबाजों के ध्यान में यही बात रहती है कि पण्डित जी कथा समाप्त करके परसाद तो बाँट ही देंगे। आज अधिकाँश हिन्दुओं का यही हाल है। स्वयं तो कुछ

करना-धरना दूर रहा, रास्ता यही देखा जा रहा है कि काँग्रेस उन्हें चुप चाप कथा समाप्त करके आजादी तथा सुख-समृद्धि के दोने उनके हाथ में रख दे। परंतु यह होता नहीं। भगवान के प्रसाद के लिए भोग देना ही होगा।

आपकी असलियत की परीक्षा होने वाली है। उठिये, जल्द उठिये, वरना हम साफ कहेंगे कि आप बिल्कुल झूठे और मक्कार हैं।

समय अब बात का नहीं, काम का है।

६

मैंने अब तक जो कुछ भी लिखा है केवल परिस्थितियों को स्पष्ट करने के लिए। इसी लिए थोड़ा बहुत कहीं विवेचन भी करना पड़ा है, ऐतिहासिक या राजनीतिक चर्चा भी करनी पड़ी है ताकि सारे कार्य-क्रम को समझने में आसानी हो।

आप यह भली भांति समझते है कि भारत में मुसलमानों की संख्या कुल आबादी की लगभग एक-चौथाई है, अर्थात, कम-व-बेश, लगभग ९-१० करोड़ मुसलमानों का प्रश्न है। क्या कोई भी सही दिमाग वाला हिन्दू यह मानने को तैयार है कि इन्हें मार कर मिटाया जा सकता है? क्या आप यह समझते हैं कि इतने मुसलमानों को तलवार के बल से हिन्दुओं के अधीन रखा जा सकता है? असम्भव, बिलकुल असम्भव। आपने देखा कि कलकत्ते में जब कुछ नहीं चली तो नवाखोली काण्ड शुरू किया

गया, नवाखोली की बर्बरता का यदि बिहार के अत्याचारों से जवाब दिया गया तो आग पंजाब और सीमा प्रांत में फैली। प्रतिहिंसा का चक्र ही ऐसा होता है। पानी की परिधि के समान बढ़ता ही जाता है। आज सारा देश इससे आच्छन्न है अतएव आवश्यक है कि हम इस प्रश्न पर निर्द्वंद एवं निष्पक्ष रूप से विचार करें और एक सही रास्ता ढूँढ़ निकालने की चेष्टा करें ताकि दोनों एक दूसरे के आदर और सम्मान के साथ पारस्परिक व्यवहार मे लग सकें।

आज मैं लोगों को बार-बार यही कहते हुए सुन रहा हूँ कि कॉग्रेस वालों का रवइया गलत है। इन हिन्दू भाइयों का मतलब यही होता है कि कॉग्रेस वाले हिन्दू मजहब का शंख फूंक कर मुसलमानों से जूझ नहीं रहे हैं। यह ध्यान मे रखने की बात है कि ये प्रश्न कर्ता, अधिकांशतः, न तो हिन्दू सभा के सदस्य है और न तो इनके हाथ में समस्या के हल के लिए कोई व्यावहारिक कार्य क्रम है। काम करने वाले बातों में नहीं उलझे रहते।

मै पूछता हूँ कॉग्रेसी हो या हिन्दू सभा के सदस्य हों, कौन नही चाहता कि देश में, नगर मे शान्ति रहे, लोगों के जीवन-यापन मे बाधाएँ उपस्थित न हों। मैंने पुस्तक के आरम्भ में ही काशी के दंगे का उल्लेख किया है। काशी की साम्प्रदायिक परिस्थिति से सभी आजिज है। कम से कम स्वयं ईमानदारी से परिश्रम करके कमाने-खाने वाले तो सभी आजिज है। इस बार के दंगे मे पुलिस ने विशेषतः चेतगंज के पुलिस कर्मचारियो ने, बड़ी धाँधली की। दारोगा मुसलमान था, सुनते हैं उसने महल्ले के हिन्दुओ पर बड़ा अत्याचार किया। समझने की बात यह है कि सरकार कॉग्रेस

की है और गिरफ्तारियाँ भी काँग्रेस जनों की हुईं। शोर मचा। रक्षा मंत्री के सहायक श्री रावत लखनऊ से दौड़े काशी पहुँचे। साथ में पुलिस के छोटे लाट (डी. आई. जी.) आये। देख भाल के पश्चात, रावत साहेब ने आश्वासनों के अतिरिक्त क्या किया सो तो कह नहीं सकता, इतना जरूर मालूम है कि उन्होंने शहर काँग्रेस कॅमिटी के समक्ष एक तत्व की बात कही। वह बात लगभग इस प्रकार से थी—"आप लोग (कॉंग्रेस जन) पुलिस की शिकायत कर रहे हैं। परंतु मुझे तो आप ही लोगों में से ठीक इसी के विरुद्ध आवाजें सुनायी पड़ी हैं। आप तो आपस में ही बॅट कर लात और जूते चला रहे हैं, फिर आप का विश्वास कैसे किया जाय? काँग्रेस के किस दल की बात मानें? यदि आप सब एक होकर एक ही आवाज उठायें तो भला किसकी मजाल है जो उसके खिलाफ चले?" अब आप समझ गये? दंगे और पुलिस की धाँधली से सभी परेशान, सभी अपमानित थे, थे तो काँग्रेस के सदस्य परंतु अधिकाँश हिन्दू थे। चूँकि आपस में ही लात और जूते चल रहे हैं, इस लिए उनकी बात पर उन्हीं की सरकार विश्वास करने को तैयार नहीं है। क्यों साहेब काँग्रेस के सम्मुख तो सम्पूर्ण देश की आजादी का सवाल है न? परंतु ये अभागे हिन्दू काँग्रेस में पहुँच कर भी अपनी पतनावस्था से ऊपर नहीं उठना चाहते। नतीजा यह होता है कि इन्हीं शिकायत करने वालों के अनुसार एक मामूली सा पुलिस का दारोगा महल्ले भर के हिन्दुओं की इज्जत को खाक में मिला देता है और ये लोग अपनी सरकार होते हुए भी उस दुष्ट को दोषी सिद्ध करके उसे दण्ड का पात्र नहीं बना पाते। जरा-

और आगे चलिये। शोर गुल को कम करने के लिए दारोगा साहेब चेतगंज के थाने से उठा कर आदमपुर के थाने में रख दिये जाते हैं। उनके तबादले की की खबर सुनकर आदमपुर वार्ड कॉंग्रेस कॅमिटी के मंत्री ने रावत साहेब ही इस तबादले का विरोध किया था। आदमपुर के मंत्री ने साफ-साफ कहा था कि इस दारोगा का पिछला रिकार्ड खराब है, उसकी नियत पर लोगों को भरोसा नहीं, और चूँकि आदमपुर हलके का अधिकॉश भाग इन हिन्दू-मुसलमानी खुराफातों से अछूता सा ही रहा है, इसलिए ऐसे आदमी को इस इलाके मे न भेजा जाय। पर वहॉ सुनता कौन है? आपकी बातों पर विश्वास ही कौन करता है? रक्षा मंत्री ने शायद सोचा होगा कि झूठ-मूठ की बकवास है। यह भी हो सकता है कि उनके सामने रोज ऐसे ही रंग-बिरंगे विरोध और शिकायतें आती रहती है, किन पर कान दिया जाय, किन पर नहीं। खैर, दारोगा साहेब आये और आदमपुर इलाके में भी छुरे याजियॉ हुई। इन दुर्घटनाओं में दारोगा का हाथ था, ऐसा हम बिल्कुल नहीं कह सकते और न आपको इन बातों से भड़कना ही चाहिये, बल्कि अपनी ही कमजोरियों को समझने के लिए अवसर प्राप्त करना चाहिये, उन कमजोरियों पर ठण्ढे दिल से गौर करना चाहिये।

आपने यदि अब भी मेरी बात का आशय नहीं समझा है तो पूॅछ बैठेंगे कि आखिर कांग्रेस सरकार कांग्रेस वालों की बात पर विश्वास क्यों नहीं करती? सुनिये। आदमपुर वार्ड कांग्रेस कॅमिटी मे जितने सदस्य है, सब हिन्दू मजहब की आवाज भी बुलन्द करने से बाज नही आते, छिपे ही छिपे क्यों न हो, परंतु

मजा तो यह कि हिन्दू मजहब का दर्द लेकर भी ये लोग आपस में बुरी तरह से बँटे हुए हैं। मैं जिस दारोगा की बात कर रहा हूँ उसी से कुछ इन्हीं कॉंग्रेस कॅमिटी वाले हिन्दू सज्जनों का प्रेम-भाव चलता है और कुछ उसके खिलाफ हैं। ऐसी परिस्थिति में बेचारी कॉंग्रेस सरकारें कुछ नहीं कर सकतीं। यह हाल आदम-पुर वार्ड कॅमिटी का ही है, सो बात नहीं। नगर की शहर कॉंग्रेस कॅमिटी का इससे भी गया गुजरा हाल है। वहाँ के प्रधान के विरुद्ध कॉंग्रेस जनों की ही एक भरी सभा ने सिद्ध किया कि हजरत राष्ट्रीय मुसलमानों को अवहेलना करके भी लीगियों का साथ देते हैं। उनके विरुद्ध उक्त सभा ने यह भी लांछन लगाया कि हजरत उन्हीं कम्युनिस्टों के साथ कार्य करना अधिक अच्छा समझते हैं जिन्हें कॉंग्रेस से गद्दार घोषित करके बाहर निकाला जा चुका है। इन अध्यक्ष महोदय के विरुद्ध यह भी प्रमाण है कि इन्होंने शहीद स्मारक पर कॉंग्रेस का झण्डा न लगा कर लीग और कम्युनिस्टों का झण्डा लगाना अधिक अच्छा समझा। कॉंग्रेस जैसी बलिदानी एवं राष्ट्रीय संस्थाओं में रह कर भी जब हिन्दुओं की दशा यहाँ तक गिर गयी है, तो फिर हिन्दू सभा जैसी गौण संस्थाओं के हिन्दुओं का क्या हाल होगा, मैं कल्पना नहीं कर सकता।

मतलब यह कि कॉंग्रेस-कांग्रेस चिल्लाते रहने या कॉंग्रेस सरकारों की नुकता चीनी में व्यस्त रहने से काम चलेगा नहीं। किसी संस्था का सदस्य हो जाने से ही काम नहीं चला करता। मैंने आरम्भ में एक समाजवादी सज्जन का जिक्र किया है। ऐसे बहुत से समाजवादियों को मैं जानता हूँ जो देश में धधकती हुई

ज्वाला को देखते और समझते हुए भी अकर्मण्य से पड़े हुए है और कहते हैं कि हम तो इन बखेड़ो में फँस कर अपनी शक्ति को खोना नहीं चाहते, हमे अँग्रेजो से लड़ना है। इन भाइयों को जानना चाहिये कि अंग्रेज लोग आपसे अब स्वयं नहीं लड़ेंगे, आपको ही हिन्दू-मुसलमान बनाकर लड़ायेंगे और लोग अपनी मौत आप ही मर जायेंगे। इस समय हिन्दू सभा, समाजवादी दल, या काँग्रेस की सदस्यता का प्रश्न नहीं है; प्रश्न है आप लोग जब तक आत्म-शुद्धि करके एक साथ, सुदृढ़ता पूर्वक परिस्थिति पर काबू पाने की झट-पट चेष्टा नहीं करते, आपका सर्वनाश निश्चित है, आपको कोई बचा नही सकेगा।

इसके पश्चात् अब आपको एक अत्यंत महत्व पूर्ण प्रश्न पर विचार करना है। बिहार के हत्याकाण्ड को दबाने के लिए प्रांत की काँग्रेस सरकार ने पूर्ण शक्ति का प्रयोग किया। इसे लेकर लोगो ने काँग्रेस को हिन्दुओं का शत्रु सिद्ध करने की जबरदस्त चेष्टा की है। हलके दिल वाले बहुत से काँग्रेसी उनके भुलावे मे आ गये। आज ऐसे ही भुलावे देश भर मे दिये जा रहे है और काँग्रेस के विरुद्ध एक खतरनाक चक्र चल रहा है।

मान लीजिये कि बिहार में काँग्रेस के बजाय करपात्री जी की शुद्ध हिन्दू सरकार होती तो क्या करती? चारों ओर आग लगी हो, सैकड़ो हजारों अनायास काटे जा रहे हों, खड़ी-खड़ी फसले जलाकर राख बनायी जा रही हो, रक्त-पात और कोलाहल का साम्राज्य प्रचण्ड हो उठा हो, किसी प्रकार क सामाजिक आदान-प्रदान कठिन हो गया हो, तो ऐसी सर्व-नाशक अराजकता को दबाना क्या किसी भी सरकार का प्रथम कर्तव्य

नहीं है ? हिन्दू सरकार ही क्यों न हो, यदि वह सरकार है तो अराजकता को दूर करके व्यवस्था स्थापित करने में ही उसका जीवन है, अन्यथा वह सरकार ही नहीं है। मान लिया करपात्री जी बिहार के एक छत्र राजा होते तो क्या करते? क्या वह मारने वाले हिन्दुओं को हथियार देकर और भी उग्र रूप धारण करने के लिए छोड़ देते? नहीं, हर्गिज नहीं। उन्हें भी व्यवस्था स्थापित करनी ही पड़ती। बात बिल्कुल यही है। कहने का मतलब आप इस गलत-फहमी में बिल्कुल न रहें कि बिहार, बम्बई, संयुक्त प्राँत, कहीं भी हो, कॉग्रेस सरकार होने के कारण हिन्दुओं को छुरे बाजी या अराजकता की छूट मिलेगी। आजकल मैं कुछ ऐसा भी सुन रहा हूँ कि संयुक्त प्राँत पुलिस में ६५% मुसलमान हैं, इसलिए हिन्दुओं पर अत्याचार हो रहा है। पुलिस के अत्याचार की बात मानी जा सकती है, और इसका इलाज, जैसा कि मैंने अभी कहा है, केवल यही है कि आप आपसी लात-जूते छोड़ एक ठोस जमात, एक ठोस आवाज बन जायें। आपने '४२ में अंग्रेजों की स्वच्छंद सत्ता का खेल देखा है, यह अपनी ही सरकार से चलने वाली पुलिस आपका क्या करेगी? परंतु यह हर्गिज न भूलें कि ६५% मुसलमानों को बदल कर आप भले ही ६५% हिन्दू पुलिस बना दें (यद्यपि यह कल्पना ही महा विघातक है) परंतु फिर भी अराजकता और अनर्थ को रोका ही जायगा।

संक्षेप में, आप समस्या को गलत पहलू से न देखें। आप सीधे रास्ते से चलें तो आपको शक्ति मिलेगी, आपकी मंजिलें जल्द तै होंगी।

सीधे रास्ते से मेरा मतलब उन सीधी-सादी बातों से है जो वास्तव मे आपको एक शक्ति शाली समुदाय का रूप दे देंगी। परंतु इसके पहले कि मैं इस सम्बन्ध मे आपसे कुछ कहूँ, मैं उन दो-चार बातो का उल्लेख कर देना चाहता हूँ जिनमे आपमे से अधिकांश लोग उलझ-उलझ कर अपनी शक्ति खो रहे है :—

नम्बर एक—'मेल-मिलाप' या पीस कॅमिटी—आज हम चारो ओर मेल-मिलाप समितियाँ देख रहे हैं फिर भी मेल मिलाप हो नही रहा है। इन मेल-मिलाप समितियो मे अक्सर हिन्दू-मुसलमान, दोनों दल के माननीय लोग रहते हैं, फिर भी शांति स्थापित नही हो रही है। कारण क्या है? कारण तो स्पष्ट नजर आ रहा है; नींव हिल गयी है, अब दीवालों के दरारों को पीस-कॅमिटियो द्वारा केवल लीप-पोत देने से मिटाया नहीं जा सकता। माना कि इन पीस-कॅमिटियो में प्रभावशाली लोग होते हैं, परंतु सब से पहले तो यही नहीं निश्चय हो पा रहा है कि इनका अन्दर और बाहर दोनो एक समान शांति स्थापना मे संलग्न है। दूसरी बार, जो ईमानदार और प्रभावशाली व्यक्ति हैं भी, उनमे से अधिकांश ऊपरी छाजन के समान कुछ रोक-थाम जरूर कर सकते है, परंतु जड़ के कीड़ों को मिटाने में इनका प्रयोग हो ही नही सकता। इसके लिए तो एक मात्र और १००% उपयोगी उपाय है महल्ले की कॅमिटियाँ जैसा कि मै पिछले अध्याय में लिख चुका हूँ। इन पीस-कमिटियों का अधिक विवेचन करना उचित नहीं प्रतीत होता, परंतु इतना तो कहना ही होगा कि इनका अस्तित्व ही जनता की स्वेच्छा पर नही, सरकारी सहयोग पर निर्भर करता है। आज आपकी सरकारे कुछ लाचार सी

मालूम पड़ रही हैं, इस लिए अपना भार पीस कॅमिटियों को देकर कुछ हलकी होने की फिकर में है। सिद्धांततः इन पीस कमिटियों को पुलिस की आउट-एजेन्सीज मान लेने में भी कोई विशेष दोष नही दीखता। पुलिस अपने शस्त्रो से लोगों में शांति रखना चाहती है और ये लोग उस शान्ति का लाउड-स्पीकरों द्वारा प्रचार करते फिरते है। इससे अधिक ये इक्के-दुक्के चुने हुए लोग कर ही क्या सकते हैं ? एक जिम्मेदार मित्र का तो यहाँ तक कहना है कि ये पीस-कॅमिटियाँ दुष्टों को आड़ और मदद देने में अचूक कार्य कर रही हैं। मैं इस हद तक इन्हें पतित नहीं समझ सकता, इनमें देश और नगर के अनेको प्रतिष्ठित एवं ईमानदार लोग होते हैं, परंतु इतना तो मै कहूँगा ही कि अब श्री प्रकाश जी और मोलवी अतहर को एक साथ मोटर मे बैठा कर शांति उपदेश दिलाते फिरने से काम नहीं चलेगा। अब तो जनता में समाकर ही कार्य करना होगा और उसके लिए मूल क्षेत्र है : महल्ले या गाँव का संगठन, जो आपको शक्ति और सफलता, दोनों देंगे। उनके द्वारा आप संकट का सामना और शांति की स्थापना, दोनों में समर्थ सिद्ध होंगे। वास्तव में बात भी ऐसी ही है; पीस-कॅमिटियाँ सरकारी प्रश्रय पर जीवमान हो रही हैं तो महल्ले की समितियाँ जनता की शक्ति से चलती हैं। फिर भी यदि पीस कमिटियों की आवश्यकता हो ही तो वे प्रत्येक महल्ले कमिटी के अन्तर्गत उसी प्रकार कार्य कर सकती हैं जैसे महल्ले कमिटियों के पहरेदार या स्वयंसेवक दल। फिलहाल इस सम्बन्ध में इतना ही पर्याप्त होगा।

नम्बर दो—सरकारी सहायता—यह बात और है। अब

सरकारी सहायता की ओर मुँह उठाये पड़े रहने से काम नहीं चलेगा। हम देख रहे है कि सरकारे, कॉंग्रेस की हो या लीग की, अधिक से अधिक 'कर्फ्यू-आर्डर' और ताजिरी टैक्स लगाने मे ही होड़ लगा रही है। ऐसे कहीं समस्या हल होती है ? समस्या को सुलझाने के लिए तो हमे स्वयं इसे अपने हाथ मे लेना होगा। और उसका पहला कदम है महल्ले या गॉव की समितियों का निर्माण।

नम्बर तीन—गत युद्ध में हमने देश के देश को अफवाहो से पराजित होते देखा है। आज इन हिन्दू-मुस्लिम दंगों मे भी यही हो रहा है। "चार हिन्दू मार दिये गये", "मुसलमान चढ़ायी करने की तैयारी मे हैं"—इसी प्रकार आज प्रति क्षण हमारे बीच काना-फूसियॉ हुआ करती है। कुछ इसमे सच होता है, कुछ अतिरंजित रूप मे पेश किया जाता है। आप नही समझते कि इस प्रकार की निराधार अफवाहो से जनता मे आतंक फैलता है, उसका नैतिक बल क्षीण होता है। मै नही कहता कि लोगों को बिल्कुल अंधेरे मे रखा जाय, परंतु गैर-जिम्मेदार लोगो की निराधार बातो मे रस लेते रहने से हम दुर्बल होते हैं। इसलिए आवश्यक है कि प्रमाण-रहित बात करने वालो को हम रोक दे। इसके लिए कड़े से कड़ा रुख अख्तियार करना पड़ेगा। इस विषय को भी महल्ले समितियो को अपने हाथ मे लेना पड़ेगा।

शत्रु से सामना करने के लिए हम मे शक्ति होनी चाहिये; सङ्कट को पार करने के लिए हममे सामर्थ्य होना चाहिये। रोग पर विजय पाने के लिए हमारे शरीर मे जान होनी चाहिये। प्रत्येक रूप से पहले हमे अपने को ही सुपुष्ट बनाना होगा। परंतु

सुपुष्ट हम बनेंगे कैसे ? केवल महल्ले की समितियाँ संघटित कर लेने से ? नहीं; हमें उन बातों को दूर करना होगा जो हमें एक दूसरे से अलग कर रही हैं, जो हमारी संघटित शक्ति के मार्ग में बाधक है। इन कारणों को दूर करना ही महल्ले की समितियों का कार्यक्रम होना चाहिये।

पिछले अध्यायों में मैं कुछ बातें बतला चुका हूँ। कुछ बातें और हैं, तात्विक बातें है। इन पर आपको ईमानदारी के साथ गौर करना होगा।

आप देखते हैं आपकी बगल में एक गरीब परिवार रहता है। जैसे आपके बच्चे हैं, वैसे ही इस परिवार मे भी कुछ बच्चे है। होली या दीवाली का दिन है। आपके घर मे पकवान और मिष्टान की भरमार है, राग-रंग चल रहा है, दोस्त-यार, मित्र और नातेदारों का जश्न है, परंतु आपकी बगल में ही कुछ बच्चे तरस रहे हैं। मै नही समझता कि इन्सान होकर भी आप क्यों नही पिघलते। चाहिये तो यह कि आप अपनी शान-शौकत के लिए व्यर्थ के जमाव को रोक कर अपने पड़ोसी के साथ ही अपनी हँसी-खुशी को बाँट लें। वास्तविक शान इसी मे है। इस प्रकार आपके हृदय को सच्चा आनन्द मिलेगा, आपके समाज को शक्ति मिलेगी। यदि आप ऐसा नहीं करते तो मुसीबत पड़ने पर आपका पड़ोसी भी आपकी क्यों सहायता करे ? उसे आपसे हमदर्दी हो-ही क्यों ? आपको हिन्दू काटें या मुसलमान, आप जिंदा रहकर ही अपने पड़ोसी के लिए किस काम के हैं ?

आज की वर्तमान परिस्थितियों में हमें रत्ती-रत्ती चीज के लिए रत्ती-रत्ती बात के लिए लड़ाई लड़नी पड़ रही है। पैसे

रहते हुए भी काम नहीं बनता। ऐसी दशा मे एक दूसरे के सहयोग से बड़ा सहारा मिलता है। परंतु मैं देखता हूँ कि लोग चीजें भरे रहते है, परंतु अपने साथी की, अपने पड़ोसी की मदद नहीं करते; चोर बाजार में बेंचना उन्हें अधिक हितकर प्रतीत होता है परंतु अपने पड़ोसी से उचित दाम लेकर भी उसकी मदद करने में अरुचि रहती है। आपकी बगल मे एक आदमी मर गया है, स्त्री और बच्चे अनाथ हो गये हैं परंतु यही नहीं कि आप उसकी मदद को नहीं जाते, बल्कि आप अपने घर में हारमोनियम के स्वर और कहकहों में मशगूल है। दूसरे भी आपके या आपके बच्चों के साथ ऐसा ही करें तो आश्चर्य क्यों हो?

एक वकील साहेब है, उनका काम-धाम पुलिस वालो से चुङ्गी के अफसरों से, सफाई इन्सपेक्टरों से बड़े मजे मे चल जाया करता है। वे टाई और हैट लगाकर इस बदले हुए जमाने मे भी बड़ी अकड़ के साथ चला करते है। वे पास-पड़ोस वालों को पेड़ की चोटी पर चढ़ कर बैठे हुए किसी आदमी के समान देखा करते है। यदि आज कुछ आततायी इनके घर पर आक्रमण कर दे तो महल्ले वाले इनकी मदद को क्यों आयें? केवल इस लिए कि इन्होने महल्ले की पहरेदारी के लिए कुछ रुपये चंदे में दिये थे? छोड़िये, इन बातों में कुछ दम नहीं है। इस प्रकार समाज के धागे मजबूत नहीं हुआ करते। और जब तक हमारे सामाजिक सूत्र ही नही दृढ़ होते तो हम किसी अडिग स्थिति को प्राप्त भी नहीं हो सकते।

सारांश यह कि एक सबल समाज का रूप धारण करने के लिए हमे यथा सम्भव एक दूसरे के जीवन मे घुल-मिल जाना

होगा। अपनी अफसरी, अपनी वकालत, अपनी अमीरी और महाजनी के झूठे बड़प्पन को छोड़कर अपने समाज, अपने महल्ले, अपने गाँव वालों के सुख-दुख को तन से, मन से, धन से अपनाकर कार्य किये बिना अब उद्धार होने की कोई आशा शेष नहीं रह गयी है। जितनी जल्दी हम चेत जायेंगे उतनी ही जल्दी संकट दूर होगा।

अतएव महल्ले कॅमिटियों को निम्न लिखित रूप से कुछ न कुछ करना ही होगा:—

(१) महल्ले या गाँव के प्रत्येक व्यक्ति की—बच्चों से लेकर बूढ़ों तक—सम्पूर्ण सूची तैयार करना।

(२) इनका—स्त्री, बच्चे, बूढ़े, जवान, रोगी, हृष्ट-पुष्ट, कामाऊ और बे-कारों के हिसाब से—वर्गीकरण करना।

(३) किसकी क्या आवश्यकता है, उसकी भी तालिका बनाना और इन आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए किस अंश तक सम्मिलित प्रयत्न की जरूरत है। यहाँ आप देखेंगे कि महल्ले में दस आदमी बेकार बैठे हैं, इनकी रोजी का कोई जरिया नहीं है। आप सब लोग मिलकर इन्हें काम देने या दिलाने की चेष्टा करेंगे। आप यह भी देखेंगे कि दो-चार आदमी ऐसे बीमार पड़े हैं कि जिनके पास औषधि के लिए कोई साधन नहीं है। आप झट-पट इनके दवा-दारू का प्रबन्ध कर देंगे, करा देंगे, किसी को दवा लाने के लिए नियुक्त कर देंगे, किसी को तीमारदारी के लिए।

महल्ले कॅमिटी के सदस्यों को इसी प्रकार निश्चिन्त खबर रखते हुए महल्ले की भलाई में लग जाना होगा।

और यहीं आपके मोर्चे तैयार होंगे—

१०

अंत में, इस विचार धारा को समाप्त करने के पूर्व आपका ध्यान कुछ प्रमुख बातों की ओर विशेष रूप से आकृष्ट कर देना है।

दल दलको पाटे बिना, पोली जमीन को ठोस बनाये बिना, मजबूती से पाँव रखकर निर्विघ्नता पूर्वक आगे नहीं बढ़ा जा सकता। हिन्दू जाति को यदि समर्थ और शक्तिशाली बनना है तो इसे अपने दलदलो को पाटना होगा, अपनी पोली जमीनों को ठोस बनाना होगा।

सारी बातो को समेट कर एक साथ देखे तो हिन्दू जाति की जमीन निम्न लिखित स्थलो पर सर्वाधिक पोली नजर आ रही है इन्ही स्थलों पर हम दबते जा रहे है :—

(१) ब्राह्मण—हिन्दू जाति का यह सर्वोच्च वर्ण आज बिलकुल कर्तव्य च्युत हो गया है। अपने अधिकारो की माँग यह वर्षों पुराने ढंग से करता जा रहा है, परंतु उन अधिकारो के योग्य यह रह नहीं गया है। अपने धर्म और शास्त्रों का अपने साहित्य और संस्कृति का अपने गौरवपूर्ण इतिहास का, किसीका भी इसने न तो बाकायदे अध्ययन किया है और न उसे आज इनका पूरा ज्ञान ही है। अधिकाधिक वह थोड़े से मन्त्रों को कंठस्थ करके हिन्दू जाति का पुजारी बनकर पैसे कमाने की चिंता मे व्यग्र है। ऐसे पढ़े-लिखे ब्राह्मणों को मै तो बिलकुल 'निपढ़' मानता हूँ। आज ब्राह्मणो के पास जो विद्या है भी वह अधिकांशतः अंग्रेज़ी शिक्षा-क्रम के द्वारा प्राप्त होने वाला रोटी, धोती या जड़वादी सुख प्राप्त करने का साधन

मात्र है। कमसे कम ब्रह्मो का सामूहिक अस्तित्व तो हमारे जातीय उत्थान मे बिल्कुल सहायक नही हो रहा है। ये हमारे विकास के सूत्रधारी बाबा लोग आज अपने शिखर से बिल्कुल नीचे गिर गये हैं। परंतु मजा तो यह है कि गिरकर भी ये लोग समाज की नकेल को अपने हाथ में रखने के लिए परेशान हैं। यह हो नहीं सकता। समाज का नेतृत्व करने के लिए ब्राह्मणों को ऊपर उठना होगा। अपने भ्राष्टाचारो को साहस पूर्वक त्याग देना होगा। अपनी झूठी मॉगो को छोड़ देना होगा। जमाना बदल गया है, वेद कालीन परिस्थितियॉ अब भारत मे रही नहीं, यदि वे लौटायी भी जा सकें तो इस कार्य मे सदियॉ गुजर जायेंगी, इस लिए उचित है कि समयानुसार ब्राह्मण लोग अपनी रहन-सहन में कुछ आवश्यक सुधार और सामञ्जस्य करलें।

हम इस समय सङ्कट काल से गुजर रहे है, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, चारों ओर से हिन्दू जाति पर आघात हो रहा है। आपद्‌काल में ब्रह्मणों का कर्तव्य हो जाता है कि ये हिन्दू जाति के गले का पत्थर न बनें। उन्हें चाहिये कि एक ओर तो समाज का नेतृत्व करने के लिए सचमुच विद्वान बनें, दूसरी ओर स्वावलम्बन प्राप्त करने की चेष्टा करें। ब्रह्मण लोग जब तक आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी नहीं हो जाते वे हिन्दू जाति को नाना प्रकार से ठगने और निचोड़ने की चेष्टा करेंगे। कहीं मृत्युंजय जाप, कहीं शतचन्डी पाठ, कहीं पण्डागिरी, कहीं कुछ, कहीं कुछ—किसी न किसी प्रकार से ये लोग दीन-दरिद्र हिन्दुओं पर धन-दोहन का चक्र चलाते रहेंगे।

यह बिल्कुल निश्चित सी बात है कि जब तक इन ब्राह्मणों के

धार्मिक कुचक्रो सेमुक्त नहीं होते, हम मे विधर्मी आघातों को सहन करने के लिए पर्याप्त बल उत्पन्न हो ही नहीं सकता। मैं ब्राह्मणों का शत्रु नहीं हूँ, इसी लिए चाहता हूँ कि ब्राह्मण छुद्रताओ से ऊपर उठकर सचमुच ब्राह्मण बन जाये, इसी लिए मै चाहता हूँ कि ब्राह्मणों से समाज को, जाति को, शक्ति प्राप्त हो न कि वे हिन्दू जाति को पाताल भेजने के दोपी बनें। ब्राह्मण जब तक स्वावलम्बी नही बनते वे समाज के लिए बोझ बने रहेंगे। स्वावलम्बी बनने का केवल यही उपाय नहीं है कि वे हल जोतने लगे। मेरा मतलब यह है कि उन्हे समाज को कुछ देकर ही लेना होगा। समाज के लिए यदि वे व्यवहारत: और प्रत्यक्ष रूप से उपयोगी सिद्ध होते हैं तो समाज को उनके सुख-समृद्धि का उत्तर दायित्व लेना ही पड़ेगा। इन ब्राह्मणो मे से आज जो लोग इस योग्य नहीं रह गये है कि वे समाज की शिक्षा-दीक्षा का भार वहन कर सकें, उन्हे अपने भरण पोषण का कोई समुचित साधन प्राप्त करना ही होगा। मै नहीं कहता कि आप अपनी पौरोहित वृत्ति को बिल्कुल ही छोड़ दें, परंतु मै इतना तो अवश्य कहूँगा कि आज समय नहीं रहा कि आप इसे एक जबरदस्ती का पेशा बना रखे। अनन्त चतुदर्शी आयी और आप कुछ रंगे हुए धागे लोगों के हाथों मे बाँध कर धेला-धेला बटोरने निकलने पड़े, विजय दशमी को जौ की कुछ पत्तियाँ लोगों के कानों पर रखकर आप जबरन पैसा कमाने के लिए उद्विग्न हो उठे, कोई बीमार हुआ और आप मृत्युंजय के जाप की सलाह देकर रोजी कमाने की फिकर करने लगे, दो व्यक्तियों में शत्रुता का सूत्र पकड़ कर आप जबरदस्ती शतचण्डी का पाठ कराने लगे—इन तरीकों से पेट पालते रहने में

आपका आत्म पतन तो हो ही रहा है, वह समाज भी दिनो दिन डूबता जा रहा है जिसकी छाती पर खड़े होकर आज आप ब्राह्मण बने हुए हैं। सावधान हो जाइये, जमीन आपके पाँव के नीचे से खिसकती जा रही है। अब आप बहुत दिन तक हिन्दू जाति को ब्राह्मण और शूद्रों में बाँट कर उनके उद्धारक बने रहने का ढोंग नहीं रच सकते। हिन्दू जाति को कृत्रिम बंटवारों से अलग होकर एक हो जाने दीजिये, एक ठोस जमात बन जाने दीजिये, अन्यथा यह बाहरी आघातों के सामने टिक नहीं सकेगी। हिन्दू जाति ही नहीं रहेगी तो आपका ब्राह्मणत्व कहाँ रहेगा? इसके लिए एक मात्र उपाय यही है कि आप प्रत्येक सम्भव रीति से, पौरुष और पुरुषार्थ पूर्वक स्वावलम्बी बन जायें, अन्यथा आप अपनी रोटी-धोती के लिए, अपनी रोजी के लिए, हिन्दू जाति को बांटते-खाते रहेंगे। जो ब्राह्मण नहीं हैं, उन्हे भी चाहिये कि ब्राह्मणों को स्वावलम्बन प्राप्त करने में उनकी सहायता करें।

(२) स्त्रियाँ—आज हमने स्त्रियों को, विशेषतः ऊँची जाति की स्त्रियों को इतना नीचे गिरा दिया है कि वे स्वयं सङ्कट का सामना करनेमें अपनेको असमर्थ पा रही हैं। सदियों से हमने उनपर अत्याचार करते-करते उनकी इच्छा शक्ति को ही मार दिया है। आततायियों को देख कर ही वे मर जाती हैं। उनमें साहस रह नहीं गया है। पुरुषों की ज्यादती को ढोते-ढोते वे इतनी पतित और जर्जर हो गयी हैं कि सङ्कट का सामना करने के लिए इनमें दम नहीं दिखलायी पड़ता। इन्हें हमने पर्दे के पीछे बंद रखकर पिंजड़े का ऐसा पंगु पंछी बना दिया है कि बिल्ली को देखकर, खुले रहने पर भी ये उड़ नहीं सकतीं। इन्हें जरा ताजी

हवा मे साँस लेने दें ताकि समय पर ये भी कुछ दम के साथ आपका साथ दे सकें।

मर्दों ने रोटी दी है तो औरतों ने पेट भरा है, मर्दों के काम आते ही ये निरीह बन जाती हैं, रो-रो कर बे-मौत मर जाती हैं। आज बङ्गाल के शरणार्थी कैम्पों मे इन मुसीबत-जदा नारियों की दर्दनाक पुकार से हृदय फट रहा है। आपत्ति इन पर भारी है, परंतु आर्थिक और सामाजिक लाचारी तथा स्वत्व-हीनता ने इन बेचारियों की दशा को और भी दयनीय बना दिया है।

मर्दों के बाद की ही बात नहो, मर्दों के साथ की भी बात है। जब तक स्त्रियों मे स्वावलम्बन की प्राण प्रतिष्ठा नहीं की जाती, वे स्वत्व पूर्वक मुसीबत मे मर्दों के साथ खड़ी हो ही नही सकतीं। मै जानता हूँ कि नवाखोली मे भी राजेन्द्र लाहिरी की स्त्रियो ने बर्बर आततताइयो का जमकर सामना किया और अपने पुरुषों के साथ ही लड़कर मरीं, परंतु यह कुछ उदाहरण मात्र है, साधारण दशा की परिचायक नहीं। जो स्वावलम्बी नहीं, उसमें आत्म-बल हो ही नहीं सकता। आत्म-बल के बिना आपत्ति का भरपूर सामना करना कठिन है। स्त्रियाँ तो आपत्ति को झेलने मे दुर्बल पड़ती ही हैं, पुरुष भी उनके बोझ से भारी रहते है। और अन्त में दोनों आततायी के सम्मुख कमजोर पड़ते है। यह तो दुर्घटना के पूर्व की बात है, दुर्घटना के पश्चात् और भी दुर्दशा होती है। पुरुष यदि मर मिटे तो गार्हस्थ्य का बोझ स्त्रियो पर आता है, परंतु स्त्रियाँ इसमे असमर्थ सिद्ध होती है। परिणामतः परिवार दुरावस्था को प्राप्त होता है, परिवारों की दुरावस्था का अर्थ है जाति और समाज का पतन। अतएव

स्त्रियों को स्वतंत्र और स्वावलम्बी बनाना परम आवश्यक प्रतीत हो रहा है।

स्वावलम्बन का अर्थ यह नहीं कि आप अपनी स्त्रियों को घर से निकाल कर दफ्तर या कारखानों में भरती करा दें। घर मे ही बहुत से धन्धे हैं, अपनी सुविधा और रुचि के अनुसार उन्हें अपनाया जा सकता है।

दूसरी बात एक और है। स्त्रियों को स्वावलम्बन ही नहीं, सामाजिक जीवन भी प्राप्त करने दें। आप ने महल्ले के शपथ-धारी लोगों को लेकर महल्ला कॅमिटी बना ली है। उनमें स्त्रियों ने भी शपथ धारण किया है और महल्ले की कॅमिटी में भी स्त्रियाँ हो सकती हैं। महल्ले की कॅमिटी में हों या न हों, महल्ले में तो हैं ही। इन्हें महल्ले वालों में शिक्षा, स्वास्थ्य और संगठन का कार्य करने दें, रोगियों की सेवा-सुश्रुषा में भी इन्हें भाग लेने दें। ऐसी ही अनेकों बातें हैं जिनके द्वारा आप स्त्रियों को अपना एक ठोस अंग बना सकते है। आप में से जिन लोगों को ईरानी या दक्षिण भारत मे कमाठी जातियों का ज्ञान होगा वे सहज ही अनुमान कर सकेंगे कि यहाँ स्त्रियाँ पुरुषों की शक्ति में कितना बड़ा अंश रखती हैं।

इसी प्रकार हरिजनों को भी आपको ऊँचे उठाना हैं, उन्हें स्वावलम्बी और मजबूत बनाकर अपना एक अभेद्य अङ्ग बना लेना है। आप जरा आँखें खोलकर देखें कि हवा का रुख किधर है। आप देख रहे हैं कि आज देश के सम्मुख लीगी नेताओं के कारण बङ्गाल के विभाजन का प्रश्न उपस्थित हो गया है। परन्तु इसी के साथ लीग के बङ्गाली सरदार, मियाँ सुहर-

चर्दी ने हिन्दुओं को ललकार चुनौती दी है कि बङ्गाल विभक्त नहीं हो सकता, विभाजन का प्रश्न तो थोड़े से मोटे-मोटे हिन्दुओं ने ही उठाया है, बङ्गाल मे बहुत से हरिजन हैं जो लीग के साथ हैं। सुनिये, कान खोलकर सुनिये। हरिजनों को तो हिन्दू ही कहा जाता है न ? परंतु ये हिन्दू हिन्दू जाति के साथ नहीं, लीग के साथ बतलाये जा रहे हैं। भारत के अन्तरिम सरकार में कानून सदस्य है श्री मण्डल। यह बङ्गाल के हरिजन हैं और लीग ने ही इन्हें भारत सरकार मे नियुक्त किया है और सुनिये— विधान परिषद् में हरिजनो के नेता डाक्टर अम्बेडकर बङ्गाल में लीग की कृपा से ही चुने गये हैं। यदि अब भी आप नहीं समझ रहे है तो आपके बेड़े को गर्क ही समझना चाहिये।

अंत मे, अब एक महत्व पूर्ण प्रश्न यह रह जाता है कि हिन्दू लोग आजाद होना चाहते है या नहीं ? यदि हिन्दू लोग आजाद होना चाहते हैं तो उन्हें इस नाजुक वक्त में कोई ऐसा कार्य नही करना चाहिये जिससे हमारे शत्रुओं को हमारे विरुद्ध शक्ति प्राप्त हो और हमारी आयी हुई आजादी हम से रूठ कर लौट जाये।

अंग्रेजो ने हिन्दुस्तान पर कितने जुल्म किये है, हिन्दू जाति ने उनके लिए कितना रक्त दान किया है, हमारी माँ-बहनें, हमारे कितने नौ निहाल बच्चे उनके शोषण मे बूँद-बूंद घुलकर अस्तित्व हीन हो गये है, क्या इसका कुछ हिसाब है ? देश को चूस-चूसकर निःस्वत्व बना देनेवाली इस विदेशी सत्ता को देश की छाती से उतार फेकना क्या प्रत्येक हिन्दू का प्रथम कर्तव्य नही है ?

फिर इस पुण्य कार्य में बाधाएँ क्यों डाली जा रही हैं ? क्यों आजादी के मार्ग मे रोड़े अटकाये जा रहे हैं ? मैं मुसलमानों से नहीं, उन हिन्दुओं से, उन "सनातनी" हिन्दुओ से पूछता हूँ जो आज करपात्री जैसे धर्मगुरुओं की छाया में सहसा हिन्दू जाति का बीड़ा उठा रहे है। मै पूछता हूँ कि कहाँ थे करपात्री जी जब '४२ मे लाखों हिन्दू बर्बाद किये जा रहे थे ? मैं पूछता हूँ कि जब हमारी माँ-बहनों की निर्लज्जतापूर्वक लाज लूटी जा रही थी, जब बङ्गाल के अकाल में लाखों कीड़े-मकोड़े के समान मर मर कर रास्ते और सड़कों पर सड़ रहे थे तो करपात्री जी और उनका धर्म-संघ कहाँ था ? युद्ध की प्रचण्ड ज्वाला मे लाखों गउवों का तर्पण दिया जा रहा था तो करपात्री जी ने क्यों नहीं दिल्लो में जाकर सत्याग्रह किया ?

जवाहर लाल क्या हिन्दुओं के ही शत्रु है ? क्या इस समय जो दिल्ली मे प्रान्तीय सरकार बनाकर आजादी की समस्या को सुलझाने मे परेशान हैं, वे सब हिन्दुओ के शत्रु है ? क्या इसी समय करपात्री जी और उनके धर्म-संघ को इस बात की चेतना हुई है ? क्या हिन्दू समाज आज ही रसातल पहुच जाने के लिए उद्यत हो उठा है ? फिर करपात्री जी ने पहले क्यों नहीं दिल्ली मे सत्याग्रह और अनशन करके हिन्दू धर्म को बचाने की चेष्टा की ?

जरा सा सोचने से बात स्पष्ट हो जाती है कि हिन्दू धर्म के ये पोप लोग हिन्दू जाति के हितैषी नहीं सबसे बड़े और भयंकर शत्रु हैं जो हिन्दुस्तान को आजाद नहीं होने देना चाहते। ये बिल्कुल नहीं चाहते कि कॉंग्रेस आजादी हासिल करने में कामयाब हो। इसलिए ये लोग कॉंग्रेस और आजादी दोनों का गला घोंटने की

अंतिम चेष्टा पर उतर आये है। ऐसे लोगो से हमें फौरन होशियार हो जाना चाहिये।

मै पूछता हूँ कि बङ्गाल और पंजाब मे हिन्दुओं पर जुल्म हुआ है उसके खिलाफ हिन्दुओं को कहाँ से शक्ति मिली है ? क्या आप समझते हैं कि नोवाखाली का जवाब आपने बिहार में देकर मुसलमानों को डरा दिया है ? यदि दिमाग सही है तो आँखें खोलकर देखिये कि बिहार के जवाब मे पंजाब और सीमाप्रांत के हिन्दुओ पर क्या बीती है ? दुनिया को धोखा मत दीजिये, अपनी आत्मा को धोखा मत दीजिये। इस प्रकार आप हिन्दू-मुस्लिम समस्या को हल नहीं कर सकते। आपके धर्म की रक्षा इस प्रकार नहीं होगी।

मै फिर पूछता हूँ कि इस समय आसाम बङ्गाल और पंजाब के हिन्दुओ की समस्या सुलझाने मे कौन व्यस्त है ? किसमे ताकत है ? करपात्री जी के धर्म संघ मे या कांग्रेस मे ? हिन्दू सभा के नेताओं ने भी तो यही कहा है कि इस समय कांग्रेस को कमजोर मत बनाओ। यह ठीक है कि कांग्रेस मुसलमानो का साथ देती है क्योंकि मुसलमान भी हिन्दुस्तान के निवासी हैं, परंतु हिन्दुओं की रक्षा भी तो कॉगेस ही करती है और कर सकती है फिर कॉग्रेस को कमजोर बनाने पर ये धर्म संघ के सनातनी हिन्दू क्यो उतर आये हैं ? क्योंकि इनकी धोखा-धड़ी की कलई अब खुलने वाली है, क्योकि ये लोग अच्छी तरह समझ रहे है कि आजाद हो जाने पर हिन्दू जाति को अन्धकार मे रखकर मुफ्तखोरी का पेशा गर्म नही हो सकेगा।

मै स्वयं हिन्दू हूँ। मुझे अपने हिन्दुत्व पर गर्व है। आपने

धर्म के लिए मैं करपात्री जी से पहले प्राण उत्सर्ग करने को तैयार हूँ, परन्तु मैं यह तो स्वप्न में भी स्वीकार नहीं कर सकता कि धर्म के नाम पर गुलामी की जंजीरों को मजबूत बनाया जाय।

अतएव ईमानदारी का तकाजा है कि इस समय हिन्दुस्तान को आजाद होने दिया जाय, आजादी के लिए लड़ने वाली हिन्दुस्तान की एकमात्र संस्था कॉंग्रेस के पॉव में कुल्हाड़ी न मारी जाय, कॉंग्रेसी सरकार या मंत्रि-मण्डलों के मार्ग में रोड़े न अटकाये जायें। कॉंग्रेसवालो को पथच्युत न करना और उन्हें एक चित्त से दृढ़ और संघटित होकर स्वतंत्रता प्राप्त कर लेने देना ही, प्रत्येक सच्चे हिन्दू का धर्म होना चाहिये।

वक्त बड़ा नाजुक है, एक पग भी गलत पड़ने से खतरा पैदा हो सकता है। सावधान !

मुस्लिम

११

गुलामी महा पाप है। विदेशियो की गुलामी तो और भी घातक होती है। धर्म, कर्म, ज्ञान, विज्ञान, धन और वैभव—सब लुट जाता है। पतित और पथच्युत से लोग अपनों को भी गैर समझ बैठते है।

उसी सिधु और गंगा के जल से तर होनेवाले, उसी नदी और नहरो मे साथ-साथ नहानेवाले, उसी असाढ़-सावन के बादलों की ओर एक साथ आँखे लगाये रहनेवाले, उन्हीं वन-पर्वतों, मैदानों या रेगिस्तानो में साथ-साथ चलने-फिरने और जीने-मरनेवाले, सीधे-सादे लोगों को हिन्दू-मुसलमानों का दो खूँख्वार दल बनाकर एक दूसरे के गले पर उसी तरह उसका दिया गया है जैसे एक ही कुत्ते के दो बच्चों को गले मे रस्सी बाँधकर भौं-भौं-भौ-भौं भिड़ा दिया जाता है।

अंग्रेजो ने ८०-९० वर्ष से हिन्दुस्तान पर इसी प्रकार विधि-वत् हुकूमत की है। एक ही औरत के पेट से दो बच्चे निकले, एक ने दाढ़ी रखा ली, और मस्जिद मे नमाज पढ़ने लगा। दूसरे ने जनेऊ धारण करके मन्दिर में पूजा प्रारम्भ कर दी।

दोनों एक ही दफ्तर में नौकरी करते हैं, एक ही गाँव में रहते है। परंतु आज वे दोनों अपने-आपको दो भिन्न-भिन्न राष्ट्र के दो सदस्य कहने लगे हैं। उसी हवा और उसी पानी से पलने और जीनेवालो में से एक हिन्दुस्तान का है तो दूसरा अपने को पाकिस्तान का वाशिन्दा बतलाता है। दोनों एक दूसरे को जबह कर देने पर तुल गये है। पीठ मे चुपके से छुरा भोककर भाग जाने का ये लोग मानो पेशा-सा अख्तियार करते जा रहे है। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के दोनों राष्ट्र गाँव और गली-कूचो में लड़ते फिर रहे हैं।

विचित्र समस्या है। अजीब नारे सुनाई पड़ने लगे हैं—'पाकिस्तान लेके रहेंगे', 'लड़के लेंगे पाकिस्तान', 'मर के लेंगे पाकिस्तान', कहाँ से लेंगे, किससे लेंगे ?

भारत ने आवाज उठायी 'क्विट इण्डिया' (भारत छोड़ो)। परंतु जिना साहेब ने कहा नहीं, बिल्कुल गलत। तो ठीक क्या है ? कहते हैं कि ठीक यही होगा कि 'डिवाइड एण्ड क्विट' (भारत को बाँटकर ही छोड़ो)। मतलब यह कि मुल्क को काट-काट कर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान बना दो।

गुलामी भी महा पातक रोग है, वह भी हिन्दुस्तान की भी सदियों की पुरानी गुलामी ! उफ ! इसका विष उतर-उतर कर चढ़ जाया करता है। जलियानवाला बाग में हिन्दू-मुसलमानों को एक साथ जबह करके डायर ने पिछले पचीसों वर्ष के अंगरेजी परिश्रम पर पानी फेर दिया। सरकार की सारी विभाजक कीर्तियाँ मिटने पर आ गयीं। परंतु शाबाश ! उतरते हुए विष को पुनः दिमाग तक पहुंचा दिया गया और आज मरीज फिर

डाक्टरों के हाथ में खेलने लगा है। ऐसा खेल रहा है कि इन्सानियत ने भी शर्म से मुँह छिपा लिया है।

यह है भूमिका उन बुजदिल छुरेबाजियों की उन मासूम बच्चों की निर्मम हत्या की, उन औरतों के अपहरण और बलात्कार की, उन जोर और जुल्मों की, जिनके खून से आज सारा देश लाल और लथ-पथ हो उठा है।

१२

इसके पहले कि हम हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के पीछे फैली हुई इतिहास और राजनीति की लम्बी लीक पर नजर डाले हमें यह अच्छी तरह समझ रखना चाहिये कि हिन्दू और मुसलमान दोनो उसी एक देश मे पैदा हुए है, वहीं पले और बढ़े हैं, दोनों एक है, एक रहेंगे। जब-जब समय आया है दोनों ने मिलकर झेला है। बेशक, आज दोनो के बीच की खाईं कुछ जरूरत से ज्यादा चौड़ी कर दी गयी है, फिर भी यह ख्याल कर लेना कि यह खाईं सदा ऐसी ही चौड़ी बनी रहेगी, जबरदस्त गलती होगी।

१८५७ ई० के भारतीय विद्रोह मे हिन्दू-मुसलमान, राजपूत, मराठे—सभी सम्राट बहादुर शाह के साये मे एक होकर लड़े थे। १९२१ ई० के प्रलयंकारी असहयोग आन्दोलन में मुसलमानों ने कुछ कम हिस्सा नहीं लिया। १९२४ ई० में हिन्दू-मुसलमानों के बीच जगह-जगह खून खच्चर हुआ, परंतु १९३०

ई० में वक्त आया तो फिर मुसलमानों ने हिन्दुओं के साथ मुल्क के लिए कुर्बानियाँ कीं। इतना सब होते रहने पर भी मुसलमानों को रह-रह-कर हिन्दुओं से मिल जाते देखकर दुश्मनों के दिल पर साँप लोटने लगे। नये ढंग से काम शुरू हुआ, दोनों को स्थायी रूप से बाँट देने का प्रयत्न हुआ। ४० मे जिना साहेब के द्वारा लाहौर में पाकिस्तान का बाकायदे प्रस्ताव भी पास करा दिया गया। परंतु इन सारे विभाजक कुकृत्यो के बावजूद भी ४२ में मुसलमानो ने फिर हिन्दुओं के साथ लोहा लिया। ४२ के पश्चात् ४६ का वर्ष आया। देश भर में चुनाव हुए। सीमाप्रांत के मुसलमानों ने सरकारी षडयंत्रों के खिलाफ लीग के पाकिस्तानी फिरिश्तों को ठुकराकर कांग्रेसी शासन की स्थापना की। पंजाब मे भी लीगी मंत्रि-मण्डल नहीं बन सका, संयुक्त प्रांत में भी सारी परिस्थितियो के प्रतिकूल होते हुए ४५% मुसलमानों ने लीग के विरुद्ध वोट दिया। अभी अप्रैल ४७ की बात है। मऊ मे, जो पूर्णतः मुस्लिम क्षेत्र है, प्रांत का ३३ वाँ राजनीतिक सम्मेलन हुआ और इसमे मुसलमानो के अखण्ड सहयोग से अपूर्व सफलता प्राप्त हुई। आजाद हिन्द फौज में हिन्दू-मुसलमान-सिख सब भाई-भाई के समान एक साथ लड़े-मरे है और अब भी आजाद हिन्द फौज के सदस्यो पर इन पाकिस्तानी कानूनों का कोई प्रभाव दिखलायी नहीं पड़ता। अभी हाल में ही भारतीय पुलिस, जल।सेना और नभ सेना के विद्रोहों ने सिद्ध किया है कि हिन्दू-मुसलमान अब भी एक है।

इसमे संदेह नहीं कि दोनों को बड़ी तेजी से बाँट देने की जबरदस्त कोशिश हो रही है, दोनों बटते भी जा रहे है। पिछले

कुछ दिनों मे दिल दहलानेवाले जुल्म किये गये है, सारे देश को बर्बरताओ से ढक दिया गया है, परंतु मै समझता हूॅ कि एक बार फिर यह हवा बदल जायेगी और दोनो पश्चाताप के साथ एक होगे।

लिखने का अभिप्राय केवल यही है कि हिन्दू और मुसलमान, दोनों दो भिन्न-भिन्न राष्ट्र के सदस्य है. यह बिल्कुल गलत बात है, इस बात के पीछे भौगोलिक सत्य का रत्ती भर भी अंश नही है। फिर 'यह बात चल कैसे रही है? केवल धार्मिक-मदांधता के बल पर। आपको मालूम होना चाहिये कि सरहद के जाहिल पठानो से हिन्दुस्तान के पढ़े-लिखे मुसलमानों ने कुरान शरीफ के फटे पन्ने दिखलाकर कहा है कि हिन्दू लोग इस्लाम को मिट्टी मे मिला रहे है, इधर-उधर से कुछ हड्डियॉ और खोपड़ी बटोर कर उन्हें मौलवी और पीरो का बतलाते हुए मुसलमानो की बर्बादी का उत्तेजक चित्र खींचा गया है, मस्जिदों के तोड़े जाने की झूठी अफवाहें फैलायी गयी है और उसका नतीजा यही हुआ है कि पंजाब के सरहदी हिस्से मे बसनेवाले हिन्दू और सिख मिट्टी मे मिला दिये गये है।

इस सिलसिले मे समझने की खास बात यह है कि लीगियों ने, जो वर्तमान झगड़ो के बानी-मुबानी है, अब तक, इस घड़ी तक, आजादी के लिए कभी लड़ायी नही छेड़ी है। इनका जिहाद हिन्दुओं के खिलाफ या हिन्दुस्तान को काट-पीट-कर पाकिस्तान बना देने के लिए हो सकता है, देश को, मुल्क को, अंग्रेजो के जालिम पंजो से छुड़ाकर आजाद करने के लिए नहीं। आजादी का नाम जब भी इनके मुख से सुनायी पड़ा है वह केवल इसी

रूप में कि अंग्रेज लोग अगर हिन्दुस्तान को आजाद करना ही चाहें तो पहले मुसलमानों के लिए अलग पाकिस्तान बनाते जायें। इस तरह इन्होंने अपना मकसद पूरा करने के लिए मजहब को भी गलत शकल दे रखी है।

आप लोगों को मालूम होना चाहिए कि १९२३ ई० में हिन्दुस्तान भर के मौलवी और आलिमों ने एकत्र होकर मौलाना अबुल कलाम आजाद को हिन्दुस्तान का इमाम बन जाने की प्रार्थना की थी। पैगम्बर (हजरत मुहम्मद) के बाद ही इमाम का पद होता है। इसका मतलब यह कि मौलाना आजाद को मुसलमान लोग अपना सर्वोच्च धर्म-गुरु मानने को तैयार हैं। यह इमाम की हस्ती रखनेवाले, मौलाना आजाद धर्म की परिभाषा क्या करते हैं? आप कहते हैं कि—". मैं मुसलमान हूँ और मुसलमान होने के नाते गुलामी में पलते रहना मेरे लिए गुनाह है। इस्लाम ने कहीं भी गुलामी की हिमायत नहीं की है।"

अभिप्राय यह कि मजहब को गलत रूप देकर गलत बातें पैदा की जा रही हैं। आज की ये सारी पाशविकताएँ इसी कम-दन गलती का नतीजा है। मौलाना साहेब शुद्ध धर्म के बारे में कहते हैं—'जो धर्म मानवता को महान न बनाये, जो धर्म मनुष्य को शक्ति और गति न दे, जो धर्म इन्सान में मुहब्बत और देश का दर्द न पैदा करे, जो धर्म गुलामी से बगावत करना न सिखाये, वह धर्म नहीं, पाखण्ड है, शैतानियत है।...जो धर्म इन्सान-इन्सान के बीच दुश्मनी का जहर फैलाता है वह धर्म नहीं धोखा है, सी-आई-डी वालों की शरारत है। आज यह भी प्रश्न उठाया गया है कि हिन्दुस्तान में हिन्दू बहुत हैं और मुसल-

मानों को अंग्रेजों के जाते ही हड़प जायँगे। तो क्या भाई हिन्दुस्तान के मुसलमान अंग्रेजों के ही सहारे जिदा रहे हैं? उन्हीं का दामन पकड़कर जिदा रहेंगे? मौलाना साहेब कहते हैं कि नहीं, जो धर्म मनुष्य को वीर नहीं कायर बनाता है वह धर्म हो ही नहीं सकता। जो धर्म इन्सान को इन्सान से डरना सिखाये वह धर्म नहीं सरासर षड़यंत्र है। मौलाना साहेब आश्चर्य से पूछते हैं कि ८-१० करोड़ मुसलमानों को २५-३० करोड़ हिन्दू क्योंकर हड़प जायेंगे?

संक्षेप मे, पाकिस्तान के प्रचार लिए सीधे-सादे लोगो के दिल व दिमाग मे गलत मजहब का जहर घोल दिया गया है। इस जहर के असर को यदि दूर किया जा सके तो असलियत अपने आप सामने आ जायगी, दो राष्ट्रों की थियरी, (सिद्धांत) हवा मे उड़ जायगी।

अतएव आवश्यक है कि हम सच्चे डाक्टर के समान कोशिश से बाज न आये। धीरज और दृढ़तापूर्वक कार्य करने की आवश्यकता है। निराशाएँ हाथ लगेगी, परंतु यह ना-मुमकिन नहीं की मरीज अच्छा हो जाये।

१३

तेरहवीं ईस्वी शताब्दी (सन् १२०० ई०) के लगभग मुसलमानों ने हिन्दुस्तान में अपनी बाकायदे हुकूमत कायम की थी। अठ्ठारहवीं (सन् १७०० ई० के पश्चात) ईस्वी शताब्दी के लगभग अंग्रेजों ने अपना पाँव हिन्दुस्तान की छाती पर मजबूती से जमाया। इन ५-६ सौ वर्षों के बीच हिन्दुस्तान में काफी मुसलमान पैदा हो चुके थे। धीरे-धीरे हिन्दुस्तान की आबादी में मुसलमानों का स्पष्ट अंश तैयार हो गया। इनकी हँसी-खुशी, इनके सुख-दुख, से हिन्दुस्तान के सुख-दुख का हिसाब तैयार होने लगा, हिन्दुस्तान की शांति-अशांति की धारा प्रभावित होने लगी।

अंग्रेजों के शासन के पहले हिन्दुस्तान में मुसलमानों का ही राज था। दिल्ली का हाकिम होने का मतलब था सारे हिन्दुस्तान का मालिक। शाही मजहब होने के कारण मुसलमानों को बहुत सी सुविधाएँ प्राप्त थीं। ऐसा सदा से होता चला आया है। अशोक का बौद्ध होने का अर्थ हुआ सारे भारत में बौद्ध धर्म का प्रचार और प्रसार। अंग्रेजों का शासनाधीश होने का परिणाम यह हुआ कि भारत में ईसाई मजहब की खूब कर वृद्धि हुई। खैर, ज्यों-ज्यों अंग्रेजों का शासन स्थापित होता गया भारत में मुसलमानों की शान-शौकत कम होने लगी। उनके सुख और सुविधाओं में अंतर पड़ गया। परिणामतः मुसलमानों में असंतोष और अशांति उत्पन्न हुई। उनकी माली हालत जो कुछ थी, वह भी गिरने लगी।

भारतीय मुसलमानों के एक बहुत बड़े अंश को अपने श्रम का ही अलम था। इसमे सैनिक पेशा या वस्त्रोत्पादन (जुलाहो) का ही प्रामुख्य रहा।, इन दोनो में कमी प्रारम्भ हुई। अंग्रेजों के शासनाधीश हो जाने से मुसलमानों की सैनिक प्रधानता मारी गयी। अंग्रेजों ने भारत का शासन-सूत्र मुसलमानों से ही प्राप्त किया था अतएव मुसलमानों को सेना सौप देने से वे बाज रहे। दूसरी ओर इङ्गलैण्ड की औद्योगिक क्रांति के कारण भारत का वस्त्र-व्यवसाय गॉव-गॉव, घर-घर, चर्खा और कर्घे से छुड़ाकर लकाशायर और मैनचेस्टर की मिलों मे पहुँचा दिया गया। ज्यों-ज्यो यह दशा जघन्य होती गयी मुसलमानों की हालत बदतर होती गयी। मुसलमान अपनी दुरवस्था के कारण को अच्छी तरह समझ रहे थे। इसीलिए उन्होंने १८५७ ई० मे हिन्दुओं के साथ मिलकर जी तोड़ कर अंग्रेजों को उखाड़ फेंकने की चेष्टा को।

१८५७ ई० का स्वातंत्र्य युद्ध विफल गया। अंग्रेजों ने जम कर दमन प्रारम्भ किया। परिणामतः मुसलमानों की बिगड़ी हुई दशा और भी बिगड़ गयी। मुसलमानों की ओर से अंग्रेज लोग सशंक तो थे ही, उनका रुख पहले से और भी कड़ा हो गया। सेना और सरकारी नौकरियो की भरती पर रोक लगा दी गयी। मुसलमानों के आजादी के हौसले पस्त तो अवश्य कर दिये गये थे, परंतु उनका असंतोष बढ़ता ही जा रहा था।

दूसरी ओर, शिक्षा और व्यापार में मुसलमानों से बहुत आगे बढ़े होने के कारण अंग्रेजी शासन के संचालन मे हिन्दुओं को, स्वभावतः, अधिकाधिक भाग मिलने लगा। इसका मतलब

यह हुआ कि मुसलमानों के मन में हिन्दुओं के प्रति ईर्ष्या का बीजारोपण होने लगा।

१८५७ ई० के स्वातंत्र्य युद्ध से अंग्रेजों ने अनुभव कर लिया कि हिन्दू-मुसलमानों के राष्ट्रीय ऐक्य को नष्ट-भ्रष्ट कर देने में ही अंग्रेजी हुकूमत की सुरक्षा है। फल स्वरूप उन्होंने इसी नीति को लेकर भारतीय सेना का पुनस्संघटन प्रारम्भ किया। इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दू-मुसलमानों के पृथक्कीकरण के प्रथम बीज १८५७ ई० के पश्चात भारतीय सेना में ही बोये गये थे।

अंग्रेजों को अब भारत में राज करना था, इस लिए उन्हें भारतीयों की सहायता और सहयोग की भी आवश्यकता थी। इसके लिए उन्हें हिन्दू जाति बिल्कुल तैयार-सी मिली। अंग्रेजी शिक्षा की आवश्यकता थी। हिन्दुओं में अंग्रेजी शिक्षा का प्रसार पर्याप्त रूप से हो चला था, अतएव सरकारी नौकरियों में हिन्दुओं की भरती होने लगी। इससे एक ओर तो अंग्रेजों की गाड़ी चल रही थी, दूसरी ओर हिन्दुओं को मुसलमानों के ऊपर तरजीह देकर मुसलमानों में हिन्दुओं के विरुद्ध कटुता उत्पन्न की जाने लगी। इस प्रकार आप सहज ही समझ जायेंगे कि अंग्रेजी राज के मूल में ही हिन्दू-मुस्लिम विच्छेद निहित है।

इसी बात का यह भी अर्थ है कि अंग्रेजी राज के जीवन के लिए उसका अपना कोई स्वतंत्र या नैतिक बल नहीं था। इसी लिए अंग्रेजी राज का इतिहास एक विचित्र टेढ़ी-मेढ़ी लीक से होकर गुजरा है। १८५७ ई० में यह दिल्ली पर काबिज हुआ और १०० वर्ष भी नहीं बीतने पाये कि समाप्त होने को आ गया।

खैर, अंग्रेजी राज एक बिल्कुल विदेशी सत्ता थी। भारत को चूस-चूसकर ब्रिटेन के भण्डार भरने लगे। कुछ सरकारी नौकरियों से कुछ छोटी-मोटी सुविधाओं से, ही देश-दोहन की पीड़ा को कम नही किया जा सकता था। हिन्दू हों या मुसलमान, भारतीय उद्योग-धन्धों के विनाश से, शोषण के नित्य-निरंतर चक्र से, दोनों बेजार थे। मुसलमानों मे अशांति थी तो हिन्दुओं मे भी असंतोष के बुलबुले उठ रहे थे। हिन्दुओं मे शिक्षा अधिक थी, व्यापार भी इनके हाथ मे था, भारतीय संस्कृति का एक सबल सूत्र भी इन्हें मुसलमानों की अपेक्षा अधिक अग्रसर बना रहा था और इन सारी बातों को अंग्रेज लोग भी अच्छी तरह से समझ रहे थे। अंग्रेज लोग बड़े ही चतुर राजनीतिज्ञ होते है। उन्होंने नौका को यों ही बिना पतवार के बहते रहने देना सुरक्षित नही समझा। इस लिए उन्होंने आवश्यक यह समझा कि कोई ऐसा सार्वजनिक यंत्र तैयार किया जाय जिसके द्वारा भारतीय विचार-धारा का सही-सही पता लग सके और, यथासम्भव, उसकी गति विधि को मानोवांछित प्रवाह मे ढाला जा सके। परिणामत. १८८४ मे इण्डियन नैशनल कांग्रेस का जन्म हुआ। इसके जन्मदाता थे एक अग्रेज मिस्टर ह्यूम। इसी के साथ-साथ एक दूसरी धारा भी बह रही थी। अंग्रेजों ने मुसलमानों को बिल्कुल यों ही छोड़ रखा था, सो बात नही। उनमें भी अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा अंग्रेजी राज-भक्ति का समावेश करने की चेष्टा हो रही थी। इसके लिए उन्हे एक अत्यंत उपयुक्त व्यक्ति का सहयोग प्राप्त हो गया; इनका नाम था सर [illegible] खाँ। सर सय्यद एक प्रकार के अद्वितीय-

१८५७ ई० में इन्होंने अनेक अंग्रेजों की जान बचायी थी; उससे भी यह अंग्रेजों की मुलाजमत मे थे। इनका मुसलमानों पर अच्छा प्रभाव था। अच्छे पढ़े-लिखे आदमी थे। परंतु साथ ही साथ वह हिन्दुस्तानियों को अंग्रेजों की तुलना में "गन्दा जानवर" समझते थे। आपने १८६९ ई० मे एक पत्र में लिखा था—"देशी आदमी (Natives of India), छोटे-बड़े, शिक्षित या अशिक्षित, कोई भी हो, अंग्रेजों की तुलना मे वे उसी प्रकार दीखते है जैसे किसी गन्दे जानवर को किसी खूबसूरत इन्सान के सामने खड़ा कर दिया गया हो।" इन्हीं सर सय्यद साहेब के इर्द-गिर्द अंग्रेजों ने अंग्रेजी राज-भक्ति का जाल रचना आरम्भ किया। अलीगढ़ में मुस्लिम कालेज की स्थापना करके मुस्लिम राजभक्तों का गिरोह तैयार होने लगा।

उधर कांग्रेस की स्थापना के पश्चात धारा वह निकली। धीरे-धीरे कांग्रेस ने कदम बढ़ाना शुरू किया। सरकारी नौकरियों में प्रतिनिधित्व की माँग से बढ़कर राष्ट्रीय भावनाओं के प्रदर्शन का यह केन्द्र बनने लगी। अंग्रेज लोग सशंक हुए। लगाम हाथ से निकलती जा रही थी। कांग्रेस एक सार्वजनिक संस्था थी, उसमे देश की बड़ी-बड़ी हस्तियाँ लग चुकी थीं, अब उसे 'सफहे-हस्ती' से मिटा देना, उसके अस्तित्व को निर्मूल कर देना, टेढ़ी खीर थी। इसलिए आवश्यक यह प्रतीत हुआ कि एक ऐसी सार्वजनिक संस्था की स्थापना की जाये जो कॉंग्रेस के विरुद्ध प्रतिरोधक रूप धारण कर सके— A Counter force against Congress

फलतः १९०५ ई० में अलीगढ़ गुट ने मुस्लिम लीग की

स्थापना की। अतएव यह समझाने की आवश्यकता नही कि मुस्लिम लीग की उत्पत्ति मे ही मौलिक दोष है—कांग्रेस के विरुद्ध, देश के विरुद्ध, सारी भारतीयता के विरुद्ध, इसका जन्म हुआ था। यह अंग्रेजो की अपनी एक चीज है जिसके द्वारा सीधे-सादे मुसलमानो को असलियत से दूर रखने का षड्यन्त्र निरंतर गति से चलता रहा है।

१४

हिन्दुस्तान को अंग्रेजी गुलामी की यातनाओ का कटु अनुभव होने लगा था, हिन्दू और मुसलमान, दोनों को। दोनों आजादी के अभाव को महसूस कर रहे थे। इन्हीं परिस्थितियों मे एक ओर कांग्रेस, दूसरी ओर लीग ने कार्य प्रारम्भ किया। यद्यपि अपने प्रारम्भिक वर्षों मे कांग्रेस ने भी हिन्दुस्तान की मुकम्मल आजादी का सवाल नहीं पेश किया था—करती भी कैसे? कांग्रेस पूर्ण-रूपेण अभी जनता की संस्था बन नहीं पायी थी, ऐसा कोई सवाल पैदा करने के लिए उसके पास साहस और बल ही कहाँ था?—फिर भी वह आजादी के सपने देखने वालों की ओर तेजी से बढ़ रही थी। अंग्रेज लोग इस बात को अच्छी तरह भाँप गये थे, और इसी लिए लीग की स्थापना हुई थी।

इधर मुस्लिम लीग ने दूसरे ही प्रकार के आदर्श को लेकर क्षेत्र मे पाँव रखा। मुस्लिम लीग के एक प्रमुख निर्माता, अलीगढ़ कालेज के मंत्री, नव्वाब मुश्ताक हुसेन ने अपने प्रथम

भाषण में ही घोषणा की कि—"इस्लाम की तलवार सदा ब्रिटिश राज की सेवाओं में तत्पर रहेगी।" अफसोस है, हजार बार अफसोस है उस इन्सान पर जिसने इस्लाम की पवित्र तलवार को अंग्रेजी राज की सेवा में पेश करने की हुङ्कार ली थी। ऐसे ही थे हमारे लीगी भाई।

खैर, अंग्रेजों का रुख अब बदल चुका था। अब वह हिन्दुओं की पीठ से हाथ खींच कर मुसल्मानों की पीठ पर रखने लगे थे। मुसल्मानों को हिन्दुओं से अलग कर देने के उपाय शुरू कर दिये गये। इस दिशा में सबसे बड़ा कदम लार्ड कर्जन ने उठाया। पूर्वी और पश्चिमी बङ्गाल को दो टुकड़ों में बाँट कर हिन्दू और मुसल्मानों के दो अलग-अलग प्रान्त बना देने की घोषणा कर दी गयी। सारा देश इस निर्लज्ज कुचेष्टा से तिलमिला उठा; देश भर में एक लहर दौड़ गयी। बङ्गाल में स्वदेशी आन्दोलन का जन्म हुआ जिसे हम आज के अपने स्वातंत्र्य युद्ध की पृष्ठ-भूमि ही कहेंगे।

अंग्रेजों की बदनसीबी! "मर्ज बढ़ता ही गया ज्यों ज्यों दवा की"—बिल्कुल यही बात थी। जो कुछ भी हो, भारत की राजनीति के दो केन्द्र-बिन्दु स्थापित हो चुके थे: कांग्रेस और मुस्लिम लीग। मुस्लिम लीग यद्यपि प्रतिक्रियावादी नव्वाब और जमींदारों की, मुस्लिम जनता के स्वार्थ और आदर्शों से बिल्कुल अलग की, एक संस्था थी किंतु कांग्रेस धीरे-धीरे अपने प्रवाह में बहती हुई जनता का सम्पर्क स्थापित करने लगी। इस प्रकार हम देखते हैं कि प्रारम्भ काल में ही कांग्रेस के विरुद्ध मुस्लिम लीग का अपना एक अनुपेक्षणीय अस्तित्व रहा है। इस बात पर

पर्दा नहीं डाला जा सकता कि राम के विरुद्ध रावण के समान, कांग्रेस अर्थात देश की आजादी के विरुद्ध, लीग ने भी भारत की मुस्लिम राजनीति मे अपना एक स्पष्ट स्थान प्राप्त कर लिया था। और आज मुस्लिम लीग जो कुछ भी कर रही है वह अपने मौलिक तथ्य को चरम सीमा पर पहुँचाने की उसकी अंतिम चेष्टा है।

घबड़ाने या संज्ञाहीन होने की कोई बात नहीं; दूध से दही और विष से हलाहल ही तैयार होता है। इस अमिट सत्य को समझ कर ही हमे कार्य करने की आवश्यकता है। आवश्यकता है इस बात की कि रोग का ठीक ठीक निदान करके उसकी चिकित्सा की जाय। अतएव परमावश्यक बात यह है कि हम बिल्कुल ईमानदारी से यह समझने की चेष्टा करे कि आखिर वे कौन से कारण हैं जिन्होंने मुस्लिम लीग जैसी प्रतिक्रियावादी संस्था को इतनी व्यापक शक्ति प्रदान कर दी है। जब हम देखते हैं कि मौलाना आजाद जैसे आलिम और दीन के पासबॉ, जमायतुल-उलमा जैसी देश के सर्वाधिक विद्वान मुसल्मानों की संस्था, सरहदी गांधी जैसे बेजोड़ नेता, तथा लाखों-करोड़ों देश-भक्त मुसलमानों के अलग रहते हुए भी, आज भारत की मुस्लिम राजनीति, या यों कि सारे देश की राजनीति पर लीग का जादू काम कर रहा है तो निस्संदेह हमे सोचने के लिए विवश होना पड़ता है कि कुछ न कुछ बात है अवश्य। उसी को हमे सबसे पहले समझना होगा।

यह बिल्कुल सत्य है कि इसलाम हिन्दू जाति की तुलना मे समीकरण की सच्ची शक्ति रखता है। हिन्दू जाति की विशेषता

है विविधता को एक ही सूत्र मे बॉध कर सञ्चालित करना—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र—सब उसी एक सूत्र से व्यवस्थित होते है। परन्तु इस्लाम कहता है, नहीं सब एक हैं, सब मुसलमान हैं। यहाँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य या शूद्र के समान कोई श्रेणीकरण नहीं है। यह तो हुआ धार्मिक सत्य, परन्तु वस्तुस्थिति यह है कि भारतीय मुसलमानों मे, विश्व की अन्य जातियों के समान ही, छोटे-बड़े अमीर और गरीब का आर्थिक अन्तर बना हुआ है। इसका अर्थ यह होता है कि हिन्दू अमीरों के समान ऊपर के कुछ सम्पन्न मुसलमान भले ही अपनी स्थिति और परिस्थिति से संतुष्ट हों, परंतु नीचे का अधिकांश भाग दुखी और असंतुष्ट ही रहा है। इसी के साथ हम यह भी देखते है कि भारतीय मुसलमानों में भी हिन्दुओं के समान ही जाति-भेद कार्य कर रहा है। कपड़ा बुनने वालों की जाति मोमिन या जुलाहा कहलाती है। राजपूतों की जाति लालखानी कहलाती है। यहाँ तक कि तुर्किया बंजारा में तीन भिन्न-भिन्न 'गोत्र' भी पाये जाते हैं।* इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दू-वर्ण-व्यवस्था का गति-रोधक अंश हमारे मुसलमान भाइयो को भी नीचे दबाये हुए है। या यों कि मुसलमान बन जाने पर भी इनकी जीवन की अभिलाषाएँ पूरी नहीं हुईं। अर्थात 'सेन्स आव् फरेस्ट्रेशन' (पराजय की अनुभूति) और 'समप्रेस्ड एम्बिशन्स' (निष्फल कामनाएँ) के विघातक तत्वों ने भारतीय मुसलमानों को आतुर बना दिया।

---

* डा० सच्चिदानन्द सिनहा, अमृत बाजार पत्रिका, २६-४-४७

बीसवीं सदी के प्रारम्भ में भारतीय मुसलमानो के अधिकाश भाग की ऐसी ही सामूहिक मनोवृत्ति थी। अंग्रेज सरकार इसका भरपूर लाभ उठाने पर उतर आयी थी। एक ओर तो उसने हिन्दुओं के विरुद्ध मुसलमानो को कुछ सुविधाएं देकर उन्हें अपनी ओर खींचना चाहा, दूसरी ओर मुसलमानो के असतोष को उन्होने हिन्दुओ के विरुद्ध ढकेल देने की चेष्टा की। जीवन से ऊबे हुए आतुर प्राणियो के आगे अन्धकार छाया हुआ था; रास्ता नजर नहीं आ रहा था १८५७ ई० की उत्पीड़क स्मृति उन्हें किसी प्रकार के प्रयास के लिए बिल्कुल हतोत्साहित कर रही थी। उनकी संज्ञाहीन दृष्टि रह-रह कर अपने हिन्दू भाइयों पर जा रही थी। ठीक इन्ही परिस्थितियो मे मुस्लिम लीग ने पदार्पण किया। स्वभावत: हारी और थकी हुई जनता को उद्धार के, गलत या सही, वादे करके गुमराह कर देने के लिए मुस्लिम लीग को अच्छा मौका मिला। प्रारम्भ मे मुस्लिम लीग भी सुषुप्तावस्था में ही रही, फिर भी भारत की मुस्लिम राजनीति मे वह अपना स्थान बनाती जा रही थी।

मुस्लिम लीग को एक प्रभावशाली संस्था बना देने मे ही अँग्रेजों का स्वार्थ था। उन्होने इसके लिए उचित या अनुचित, सब कुछ किया। हिन्दू-मुसलमानों के दैनिक जीवन की छोटी-छोटी बातो को लेकर उन्हें दोनों के विघातक विरोध का विराट रूप दे देना अँग्रेजो की साधारण नीति बन गयी। इतना ही नहीं, बल्कि बड़े-बड़े मुसलमानों को नाना प्रकार के प्रलोभनो द्वारा फोड़कर हिन्दुओं के विरुद्ध खड़ा करने की भी चेष्टा की गयी। बंगाल को तोड़कर ढाका को मुस्लिम प्रांत बनाने की घोषणा

कर्जन ने कर दी। विभाजन के कट्टर विरोधी नव्वाब सलीम उल्ला को १०००००) रुपये सस्ते सूद पर उधार देकर उन्होंने नव्वाब साहेब को बङ्ग-भङ्ग का समर्थक बना लिया। यह तो एक नमूना मात्र है। ऐसी ही हजारों रिश्वतें और प्रलोभन कार्य किये जा रहे थे जिन्होंने मुस्लिम लीग को एक मजबूत राजभक्त संस्था बनाने में मदद दिया है।

परंतु मुस्लिम लीग अकेले ही मैदान में थी, सो बात नहीं। मौलाना अब्दुल कलाम आजाद और उनके 'अलहिलाल' के चारों ओर वे राष्ट्रवादी मुसलमान भी अपना प्रभावशाली अस्तित्व रखते थे जो असलियत से अनभिज्ञ नहीं थे। वे अच्छी तरह अँग्रेजों की चाल को समझ रहे थे; वे समझ रहे थे कि हिन्दू या मुसलमान, दोनों उसी गुलामी के शिकार हैं। दोनों के पतन या पराभव के एकमात्र कारण को वे खूब समझ रहे थे। उनके सम्मुख हिन्दू-मुसलमानों की पारस्परिक तुलना का प्रश्न नहीं, हिन्दुओं के समान ही हिन्दुस्तान की आजादी का प्रश्न था। हुआ यह कि इन राष्ट्रवादी मुसल्मानों के दबाव में पड़कर मुस्लिम लीग को भी आगे बढ़ना पड़ा। १९१३ ई० के अपने लखनऊ वाले अधिवेशन में मुस्लिम लीग को "ब्रिटिश राज की वफादारी" के स्थान में "भारत के लिए उपयुक्त स्वशासन" की घोषणा करनी पड़ी।

ध्यान देने की बात है! "स्वतंत्रता" नहीं "स्वशासन" और वह भी "उपयुक्त"! इस "उपयुक्त" शब्द में ही सारा जादू था। परिस्थितियों का तकाजा था कि "ब्रिटिश राज की सेवाओं" का ठेका खतम करके मुल्क और कौम की कसम खायी जाये।

परंतु लीगी भाइयों को उन सेवाओं के आनन्द को त्याग देना अप्रिय और असंभव था। लीग के जितने कर्णधार थे सभी नव्वाब और रईस लोग थे। उनका स्वार्थ सरकार से बँधा हुआ था। रियासत और जमींदारी के रसूम उन्हे सरकारी साये की ओर ही प्रेरित कर सकते थे। इसी लिए जब "उपयुक्त" शब्द को लेकर विवाद छिड़ा तो मौलाना मुहम्मद अली ने साफ कह दिया कि नहीं, हर्गिज नही, "हम अंग्रेजों की वफादारी से बाज नहीं आ सकते।" ये वही मौलाना मुहम्मद अली थे जो खिलाफत आन्दोलन में नाम कमाकर फिर कॉंग्रेस से अलग हो गये और कॉंग्रेस को गालियाँ देने लगे थे।

१८५७ ई० के पश्चात भारतीय सेना को साम्प्रदायिक आधार पर संघटित करके अंग्रेजों ने हिन्दू-मुस्लिम बिलगाव का प्रथम चरण रखा था। वङ्ग-भंग के पश्चात, १९०९ ई० मे सरकार ने भारत को कुछ सुधार देने का ढोंग रचा। परंतु यह सुधार नहीं, भारत के लिए विष था। इसमें साम्प्रदायिक आधार पर निर्वाचन की योजना थी और उसने हमें इस दशा को पहुँचा दिया है कि आज हिन्दू और मुसलमान बिल्कुल एक दूसरे से अलग, बँटे हुए नजर आ रहे है। इसी शासकीय विभक्ति के आधार पर लीगियो को अपनी "दो राष्ट्र" वाली इमारत खड़ी करने का प्रबल आधार प्राप्त हुआ है।

वस्तुतः मुसलमानो की दशा में कोई परिवर्तन हुआ, सो बात नही। परन्तु इतना अवश्य था कि देश में एक संघर्ष उत्पन्न कर दिया गया था, और उसमें मुस्लिम जनता को कुछ ऐसा आभास हुआ कि वह कुछ कर रही है, कुछ बढ़ रही है।

था यों कि उनकी गत्यवरोध के अनुभूति में कुछ कमी अवश्य हुई। यहीं मुस्लिम लीग उनके आगे-आगे नजर आयी और वे उसके पीछे-पीछे चलने लगे। जो नहीं चल रहे थे, वे भी मुस्लिम लीग की ओर आँख उठाये हुए देख रहे थे।

एक मुख्य बात ध्यान में रखने की यह है कि भारत के स्वातंत्र्य-युद्ध को शासकीय विधानों से बहुत बड़ी प्रेरणा मिलती रही है। जब-जब सरकार ने कोई नया कदम उठाया है तब-तब देश में एक लहर पैदा हुई है, ज्वार-भाटे आये है, कॉंग्रेस या लीग ने उसको नजर में रखते हुए अपने पैतरे बदले हैं। इसी तथ्य के अनुसार साम्प्रदायिक निर्वाचन के प्रश्न को लेकर कांग्रेस को लीग से लखनऊ वाला समझौता करना पड़ा। इस समझौते का विचारणीय अंग यह है कि लीग को काङ्ग्रेस की प्रतिद्वन्द्वी संस्था का पद प्राप्त हो गया। लीग के साथ समझौता करके कॉंग्रेस ने लीग के प्रतिनिधि पद को स्वीकार कर लिया। यह पहली बुनियादी गलती कॉंग्रेस ने की और आज तक हम उत्तरोत्तर गहरे ही गहरे धँसते गये हैं।

साम्प्रदायिक और राष्ट्रीय आदर्श में महान अंतर होता है। राष्ट्र की गाड़ी को साम्प्रदायिक छकड़े में जोड़ देने में परिणाम बुरा ही निकलता है। इसी पहलू से जब हम १९२१ ई० के भारतीय असहयोग और खिलाफत आन्दोलन* को देखते हैं तो

---

* खिलाफत आन्दोलन "पान इसलामिज्म" का ही एक अंग अवश्य था, परंतु वह सम्पूर्ण भारत की आजादी का प्रश्न तो हर्गिज नहीं था, इसी लिए मैं उसे साम्प्रदायिक अर्थात भारत के एक सम्प्रदाय का ही प्रश्न मानता हूं।

बात स्पष्ट हो जाती है। १९२१ ई० के असहयोग के साथ ही जब खिलाफत आन्दोलन भी समाप्त हुआ तो मुसलमानों को एक बार फिर भयंकर असंतोष ने आ घेरा; मुसलमान टूट-टूट कर काँग्रेस से अलग होने लगे। देश के जो अब तक रहनुमा बने हुए थे वे ही अली-बन्धु घोर प्रतिक्रिया-वादी बन गये। कॉंग्रेस को गालियाँ देने लगे। कलकत्ते आदि मे हिन्दू-मुसलमानों के बीच बीभत्स रक्त-पात इसी के पश्चात हुआ। गाँधी जी को खून के उन धब्बों को मिटाने के लिए अनशन तक करना पड़ा।

इसी प्रकार भारतीय राजनीति की धारा बही है।

—:०:—

१५

मै पिछले अध्यायों में कह चुका हूँ कि गत महायुद्ध ने ब्रिटेन की आर्थिक एवं राजनीतिक महत्ता को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। विश्व का शक्ति-संतुलन अब उनके हाथ में नहीं रहा। अंग्रेज लोग भारत मे अब केवल अपने बूते पर शासन नहीं कर सकते। विवशतः उन्हें देश का शासन-सूत्र देश-वासियों को सौंपना पड़ रहा है। शासन सूत्र स्वयं अपने हाथ मे न रहने के कारण अब हिन्दू-मुसलमानों को नाना प्रकार से बॉटने और लड़ाते रहने का उनका सामर्थ्य भी समाप्त होने वाला है। अतएव यदि हिन्दू-मुसलमान स्थायी रूप से बॅट जायें तो सम्भव है भारत से लगी हुई अंग्रेजों की स्वार्थ पूर्ति स्थायी रूप से होती रहे। इस स्थायी बटवारे का ही दूसरा नाम पाकिस्तान है। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष.

अंग्रेजों को पाकिस्तान से इसी लिए हमदर्दी है। पाकिस्तान की लड़ाई इस सरकारी सहायता और सहानुभूति पर ही लड़ी जा रही है।

यह तो हुआ पाकिस्तान का ब्रिटिश पहलू। पाकिस्तान के भारतीय पहलू पर जब हम दृष्टि-पात करते हैं तो सबसे पहले हमें, अरुचिकर होते हुए भी, स्वीकार करना पड़ेगा कि हमारा मुस्लिम वर्ग हिन्दुओं से अलग, एक अपना दृष्टिकोण भी रखता आया है। क्यों ? क्योंकि भारत का मुसलमान जब मक्का जाकर लौटता है तो वह "हाजी" कहलाता है। निस्संदेह हाजी का पद बड़ा पवित्र होना ही चाहिये, परन्तु इस हज को लेकर भारत के मुसलमानों में अरब देश के प्रति एक विशेष आकर्षण उत्पन्न करने का अच्छा अवसर प्राप्त हुआ है। तुर्क लोग भारतीय मुसलमानों को, भारत से अलग, भले ही कोई अपना विशेष बन्धु-वर्ग न मानें, परन्तु हिन्दुस्तान का एक मामूली मुसलमान तुर्किस्तान को अपने खलीफा का देश, और इसी लिए अपना देश समझ लेने के लिए झट फुसला दिया जाता है। भारत के खिलाफत आन्दोलन ने इसी भावना से जोर पकड़ा था। आज भी भारत के मुसलमान तुर्की टोपी लगाने में धार्मिक फ़ख्र समझते हैं।

इस प्रश्न पर एक दूसरे पहलू से भी विचार कीजिये। मुसलमानों को जब-जब आगे बढ़ने में रुकावटें पड़ी हैं, जब-जब उन्हें निराशा और अपनी दशा से असंतोष हुआ है तो अंग्रेजों ने उनकी खीझ और असंतोष को हिन्दुओं के विरुद्ध लुढ़का देने में कसर नहीं की है। यही कारण है कि सन् २९ और ३० के

देश-व्यापी आन्दोलनो के पश्चात हिन्दू-मुसलमानों के बीच देश-व्यापी दंगे भी हुए है। आज जो सारे देश मे पाशविकता ने प्रचण्ड रूप धारण किया है केवल इस लिए कि मुसलमानों को पढ़ा दिया गया है कि ये कमबख्त हिन्दू ही है जो मुसलमानों का पाकिस्तानी स्वर्ग कायम नही होने दे रहे है। इसी लिए आज मुसलमानों को हम गली-कूचो मे चिल्लाते सुन रहे है कि "लड़के लेंगे पाकिस्तान", अथवा "पाकिस्तान लेके रहेंगे"।

हम देख रहे है कि गत युद्ध ने देश की दरिद्रता को प्राण-घातक बना दिया है। कन्ट्रोलों के चक्र मे कुछ लुढ़क-लुढ़क कर चलने वाले रोजगारों के सिवा देश के उद्योग-धन्धे मारे गये है। हमारा वस्त्र-व्यवसाय तो बिल्कुल ही नष्ट प्राय-सा है। मॅहगी तो इस कदर बढ़ गयी है कि जिसका वर्णन करना भी कठिन है। ऐसी दशा मे सीधे-सादे मुसलमानों को पाकिस्तान का सब्ज बाग दिखलाकर भुलावे मे डाल दिया गया है। बहुतेरे मुसलमान समझते है कि पाकिस्तान कायम हो जाने से अपना देश बन जायेगा, अपना राज होगा, मुसलमान ही उस देश के मालिक होंगे, दूध की नदियाँ बहेंगी, सारा दुख-दर्द दूर हो जायेगा। इन मीठे-मीठे सपनों ने पाकिस्तान की माँग मे बड़ा जोर भर दिया है। इस माँग के खिलाफ बोलना "कुफ्र" और "जब्र" बना दिया गया है और इसी लिए "काफिरों" (हिन्दुओं) पर जोर और जुल्म का पाठ पढ़ा दिया गया है।

ठीक है प्रत्येक व्यक्ति को, प्रत्येक जाति को, अपने ढंग से खुश और खुशहाल रहने का अधिकार है, जब तक कि उसके तरीकों से दूसरों की खुशी और आजादी में फर्क न पड़े। इसी

लिए आवश्यक है कि जब आप एक देश को काटकर दो देश बनाना चाहते हैं तो आप दूसरों के साथ बैठकर सारी बात को समझ लें, सारे मसले को तै कर लें। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान, हिन्दू और मुसलमानों के लिए एक के दो देश बनाना है तो हिन्दू और मुसलमानों को ईमानदारी के साथ आमने-सामने बैठकर इस मसले पर गौर करना चाहिये और ईमानदारी के साथ दोनों के मुआफिक एक फैसला कर लेना चाहिये। परन्तु नहीं, जिना साहेब और उनके लीगी उन्मत्त इस बात के लिए राजी नहीं हैं। गाँधी जी जब जिना साहेब से इस प्रश्न को लेकर मिलने जाते हैं तो जिना साहब का पहला सवाल होता है कि क्या मैं जो कुछ माँगूँगा आप हिन्दुओं की तरफ से मुझे देने के अख्तियार लेकर आ रहे हैं? कॉंग्रेस जब लीग को इस मसले पर गौर करने के लिए निमंत्रित करती है तो जिना साहेब उस पर कान भी नहीं देते। आखिर इस रवइये का मतलब क्या है? मतलब केवल यह है कि वह जो कुछ माँग रहे हैं, उस माँग के पीछे कोई तर्क या तथ्य नहीं है इस लिए वह आमने-सामने बैठना भी नहीं चाहते ताकि पोल न खुल जाये और मुसलमानों पर से लीग का जादू ही कहीं न खतम हो जाये।

एक मजे की बात देखिये! मुसलमानों को लड़ाया जा रहा है हिन्दुओं से और कहा जा रहा है अंग्रेजों से कि हमें पाकिस्तान देते जाओ। अंग्रेज लोग यदि पाकिस्तान नहीं दे रहे हैं तो लड़ना भी उन्हीं से चाहिये। यदि यह हिन्दुओं की शक्ति है जो अंग्रेजों को पाकिस्तान नहीं बनाने दे रही है तो पहले हिन्दुओं से मिलकर समझ लेना चाहिये कि आखिर बजह

क्या है जो बेचारे अंग्रेजों को नेक काम करने से रोक रहे हो? परन्तु नहीं, यहां तो खेल ही दूसरा है।

मै मुस्लिम राजनीति के विगत इतिहास का विवेचन बिल्कुल अनावश्यक समझता हूँ। जितना आवश्यक था, उस पर बहुत कुछ प्रकाश डाल चुका हूँ। हमे वर्तमान परिस्थितियो और उसके भावी रूप पर ही विचार करना है।

मैं कह चुका हूँ कि इस समय हिन्दू-मुसलमानो के स्थायी बॅटवारे के आधार पर कार्य किया जा रहा है। परन्तु प्रश्न एक-दो नहीं, लाखो-करोड़ों मुसलमानो का है। इन सबको इस बॅटवारे की मॉग के पीछे अड़ा देना है। इसके अतिरिक्त उस मॉग के पक्ष मे देशी और विदेशी समर्थन भी प्राप्त करना है। अतएव आवश्यक यह प्रतीत हुआ है कि हिन्दू-मुसलमानो को दो अलग-अलग राष्ट्र के जामे में खड़ा कर दिया जाय। अतः सबसे पहले हम इस "दो राष्ट्र" की दलीलो पर विचार करेगे।

पाकिस्तान की सम्पूर्ण समस्या और उसके पीछे चलने वाले दो राष्ट्र के मत-मतांतरो को व्यापक रूप से समझने के लिए राजेन्द्र बाबू का 'खण्डित भारत' (ज्ञान-मण्डल लि०, काशी) नामक प्रसिद्ध एवं प्रामाणिक ग्रन्थ उपलब्ध है, परन्तु वह सब इस पुस्तक का विषय नही है। मै तो केवल कुछ ऐसी ही सुबोध बातों को लूँगा जिनसे इस पुस्तक का सम्बन्ध है।

खैर "राष्ट्र" शब्द का अर्थ क्या है? राष्ट्र कहते किसे है?

देश, धर्म और भाषा की समानता के आधार पर समान सांस्कृतिक आदर्श और समान जीवनानुभूति रखनेवालो को ही राष्ट्र कहा जा सकता है। राष्ट्र सम्बन्धी सारी दलीलो को एक-

साथ रखकर देखने के पश्चात इससे अधिक उपयुक्त कोई दूसरी परिभाषा राष्ट्र की हो ही नहीं सकती। इस कसौटी पर जब हम हिन्दू-मुसलमानों को रखते हैं तो हमें निम्न लिखित ढंग का एक चित्र दिखलायी पड़ता है। संसार में ऐसा कोई भी दूसरा देश नहीं है जिसे भारत के समान समुद्र और पहाड़ों से घिरी हुई प्राकृतिक अखण्डता प्राप्त हो। भौगोलिक दृष्टि से भारत एक है—इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता। जाति, जल-वायु, और धरातल के रूपों मे इतनी भिन्नता होते हुए भी सुलेमान श्रेणी से लेकर आसाम की पहाड़ियों तक, हिमालय से लेकर हिन्द महासागर तक, भारत एक ही भौगोलिक इकाई है। मनुष्य भूगोल मे कोई परिवर्तन नहीं कर सकता*। इसी लिए हम देखते हैं कि हिन्दू-मुसलमानो के रीति-रिवाजो में बड़ी समानता है, हिन्दुओ के ढंग पर ही मुसलमानों के घरों मे भी बच्चो के जन्मोत्सव और स्त्री-पुरुषो के विवाहोत्सव मनाये जाते है, विभिन्न प्रांतों में इन्हीं रीति-रिवाजो में हिन्दुओं की भांति ही मुसलमानो के यहाँ भी अन्तर रहता है, भारत के मुसलमानों मे हिन्दुओं के समान ही जाति-भेद है, सैकड़ों वर्षों से हिन्दू-मुसलमान एक दूसरे का सुख-दुख बाँटते हुए मिलकर एक साथ, एक ही गाँव और एक ही गली मे रहते आये हैं, दोनों के जीवन सुख और उत्थान के वही एक साधन रहे हैं। उसी पीर और गाजी की पूजा हिन्दू,

---

* डाक्टर बेनीप्रसाद के उपर्युक्त मन्तव्य को एफ० के० खाँ दुर्रानी ने अपनी 'दि मीनिंग आफ् पाकिस्तान' नामक पुस्तक के पृष्ठ २ पर स्वीकार कर लिया है।

और मुसलमान, दोनों ने की है। मुस्लिम फकीरो का हिन्दू जाति उसी प्रकार आतिथ्य करती आयी है जैसे हिन्दू साधुओ की।

परन्तु जिना साहेब तथा उनकी लीगी उम्मत सारी वस्तु-स्थिति और सारे भौगोलिक सत्य से कसदन मुँह फेर कर कहती है कि नहीं, हिन्दू और मुसलमान, दो अलग-अलग राष्ट्र है। वे कहते हैं कि हिन्दू और मुसलमानों मे पारस्परिक विरोध होने के कारण बराबर संघर्ष होता चला आया है। वे कहते है कि एक का योद्धा दूसरे का शत्रु माना जाता है; दोनों के आचार-विचार भिन्न-भिन्न है। एक का भोजन दूसरे को अग्राह्य है। हिन्दू लोग मुसलमानों का छुआ हुआ पानी तक नहीं पी सकते।

इनमें कुछ तो कोरी कागजी बातें है, कुछ बिल्कुल उपेक्षणीय है। उपर्युक्त वस्तुस्थिति को देखते हुए हम कह सकते हैं कि इस्लाम का धार्मिक आदर्श भिन्न हो सकता है, परन्तु भारत की भौगोलिक सत्ता से प्रभावित मुसलमानों के सामाजिक जीवन को हम हिन्दुओ से बहुत भिन्न नहीं पाते। इस्लाम की मौलिक सामाजिक परिभाषा का लेखो एवं भाषणों द्वारा प्रचार करने से ही भारत के हिन्दू-मुसलमान दो राष्ट्र नहीं बन सकते। हमे वस्तुस्थिति को भी देखना होगा। हिन्दू-समाज को ही देखिये। इसमे विभिन्न धार्मिक आदर्श है, भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय के भिन्न-भिन्न देवता है, इसके विभिन्न वर्णों की रहन-सहन में अन्तर है, परन्तु इसे लेकर फिर तो सारी हिन्दू जाति को ही विभिन्न राष्ट्रों में बाँटना होगा। परंतु नहीं, राष्ट्रीयता केवल इतने ही से नहीं बनती। सारे समुदाय के जीवन मे बहने वाली भौगोलिक सत्ता और सामाजिक स्रोत ही मुख्य होता है। और

इस दृष्टि से हिन्दू-मुसलमान दोनों में बड़ी तद्रूपता पायी जाती है। भोजन की विविधता ? ब्राह्मण का भोजन क्षत्रिय के भोजन से भिन्न होता है,—फिर क्या दोनों दो राष्ट्र है ? छूआ-छूत ?— यह भी एक ऐसा दुर्भाग्य है जिसका हिन्दुओं ने अपने ही हिन्दू भाइयों के विरुद्ध दुर्व्यवहार किया है। यह तो अक्षुण्ण शुद्रता को सजीव बनाये रखने की एक।कल्पना थी जिसका शिकार स्वयं हिन्दू जाति हुई है, मुसलमान भाइयों का तो पूछना ही क्या ?

हिन्दू-मुसलमानों के संघर्ष-विघर्ष की बात भी कुछ ऐसी ही है। इतिहासकारों को राज और राजाओं के विजय-पराजय, लोगों के युद्ध एवं संघर्ष की घटनाओं के अतिरिक्त लिखना ही क्या रहता है ? क्या इतिहासकारों ने कभी इसकी गाथा भी लिखी है कि मिट्टी।और पानी मे लिपटी रहने वाली जनता ने दिन पर दिन किस प्रकार मिल-जुल कर बिताया है ? क्या वे इसका भी विवरण देते हैं कि झोपड़ी या महलों में बसी हुई जनता की रोटी-धोती, बाल-बच्चों का सुख-दुख, हल-कुदाल, सवारी-शिकारी, शोक या समारोह की छोटी-बड़ी कहानियाँ नित्य-निरंतर कैसे बहा करती हैं ? वास्तव में राष्ट्र के जीवन का यही आधार है न कि औरंगजेब ने कितने मन्दिर तोड़ कर कितनी मस्जिदें बनवा दीं, कितनों को जबरदस्ती गौ-माँस खिलाकर मुसलमान बना लिया गया, या बेचारे अंग्रेजों को हिन्दू-मुसलमानों की लड़ने वाली भीड़ पर कितनी बाढ़ गोलियों दागनी पड़ीं।

गामा को विश्व का अजेय पहलवान मान कर हिन्दू और मुसलमान दोनों ने गर्व से सिर ऊँचा किया है। कबीर को हिन्दू और मुसलमान दोनों मानते हैं। मुसलमान सूफियों का

हिन्दुस्तान के, उर्दू या हिन्दी, दोनों साहित्य में विशिष्ट स्थान है। आज भारत मे बहुत से हिन्दू और मुसलमान है जो फारसी या संस्कृत भाषा से अनभिज्ञ है, वहुत से मुसलमान है जो उर्दू बिल्कुल नहीं जानते, वहुत से हिन्दू है जो संस्कृत या हिन्दी नही जानते बल्कि उर्दू और फारसी जानते हैं और हिन्दू है। इन बातो के बावजूद भी वे प्रत्येक दृष्टि से पूरे हिन्दुस्तानी हैं। इसी प्रकार पहनावे की भी बात है। भारत के मुसलमानी पोशाक मे यदि हिन्दुओं के पहनावे से कुछ अन्तर है भी तो केवल इसी अंश मे कि पढ़े-लिखे मुसलमानो मे से कुछ ने अपने प्रवर्तको या मुसलमान दरबारो की नकल मे एक अपना ढंग सा ही बना लिया है ठीक उसी प्रकार जैसे आज के अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोगों ने टाई या पैन्ट पहनना सीख लिया है। क्या टाई और पैन्ट मुस्लिम भेष मे शामिल है ? लीगी सरदारों को हम उनकी पोशाक के आधार पर मुसलमान कहें या अंग्रेज ? उन ग्रामीण मुसलमानो को क्या कहें जो अपने हिन्दू भाइयो के समान ही अध टँगी धोती पहने फिरते है ?

हिन्दू-मुसलमानों मे कुछ विरोध भावनाएं हो सकती है, क्योंकि वाहर से आयी हुई शक्तियो ने हिन्दुओ पर धर्म-परिवर्तन के लिए थोड़ा जुल्म नही किया है। ये स्मृतियाँ अब भी दोनो के दिल मे काँटा भले ही बनी हों, परंतु इससे उनका राष्ट्रीय पार्थक्य तो नही सिद्ध होता। राष्ट्रीयता के पीछे भौगोलिक सत्ता और पारिणामिक सामाजिक आदान-प्रदान ही मुख्य लक्षण माने जा सकते हैं। इस दृष्टि से हम हिन्दू-मुसलमानों को दो नहीं, एक ही राष्ट्र मानेगे। इसके विरुद्ध जो भी घटनाएँ घटी है, उन्हे

घटना मात्र ही समझ कर भुला देना होगा। यही होगा और इसी मे हित है।

अब हम चित्र को दूसरे पहलू से भी देखेंगे। मान लिया कि हिन्दू और मुसलमान दो राष्ट्र हैं। इनके अपने दो देशों की अनिवार्यता पर विचार करने के पूर्व निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देना होगा—

(१) मुसलमान हिन्दुओं से अलग राष्ट्र केवल मुसलमान होने के नाते ही हो सकते हैं। मिस्र, तुर्किस्तान, ईरान, अरब आदि देश के निवासी भी मुसलमान हैं। क्या इन सारे देशों की एक ही राष्ट्रीयता है? क्या अरब या मिस्र देश मे भारतीय मुसलमानों को सम-राष्ट्रीय समझा जायेगा? यदि नहीं तो केवल मुसलमान होने से ही भारत के मुसलमान हिन्दुओं से भिन्न राष्ट्र कैसे हो सकते हैं।

(२) भारत में जितने मुसलमान इस समय हैं ये सब अरब या ईरान से नहीं आये थे। अधिकांश को यहीं कलमा पढ़ा कर मुसलमान बनाया गया है। केवल धर्म परिवर्तन कर लेने से राष्ट्रीयता भी बदल जाती है? आर्य समाजी, और अब सनातनी हिन्दू भी, शुद्धीकरण को प्रश्रय देने लगे है। तो क्या इसका यह भी मतलब होगा कि जो कल मुसलमान होने के कारण एक राष्ट्र का था, आज हिन्दू बन कर दूसरे राष्ट्र का बन जायेगा?

वास्तव में राष्ट्रीयता इतनी तरल भावना नहीं है। राष्ट्रीयता और नागरिकता मे अंतर होता है। एक भारतीय अमेरिका में आ कर या जन्म लेकर अमेरिकन नागरिक बन सकता है लेकिन

अमेरिकन राष्ट्रीयता से यह भिन्न की ही वस्तु है और इसके अतिरिक्त उस नागरिकता को प्राप्त करने के लिए भी उसे अमेरिका में ही निवास करना होगा, अमेरिका मे जन्म लेना होगा।

(३) इङ्गलैण्ड और अमेरिका वाले भारतीय इसाइयों को सहधर्मी होने के कारण सम-राष्ट्रीय भी मानने को तैयार है ?

(४) राष्ट्र या नेशन 'शब्द के लिए जिना साहेब के पास कौन सा अपना शब्द है ? "कौम" का अर्थ होता है जाति या अंग्रेजी मे "रेस"। राष्ट्र की यदि जिना साहेब के पास कोई सांस्कृतिक कल्पना है तो उनके पास अपना शब्द क्या है ?

मतलब यह कि राष्ट्र की कल्पना मुसलमानों मे थी ही नही। इस्लाम के उद्गम स्थल अर्थात् अरब के लोग बद्दू थे; उन्होंने जमकर अपना राष्ट्र बनाया ही नही। फिर जिना साहेब को राष्ट्र की प्रेरणा मिली कहाँ से ? मिस्र से ? तुर्किस्तान से ? या विलायत से ? जहाँ से भी मिली हो, इनकी अपनी कल्पना नही है और इसी लिए इन्हें राष्ट्र की परिभाषा के लिए इन्ही अन्य स्थलों का सहारा लेना होगा और ये परिभाषाएँ ऐसी है जैसा कि मैंने अभी ऊपर लिखा है। इसके अनुसार हिन्दू-मुसलमान दोनों एक ही राष्ट्र के दो अङ्ग सिद्ध होते है।

अब मै पाकिस्तान को लेकर भारत के राष्ट्रीय विभाजन पर विचार करूँगा। अब तक मैंने जो कुछ लिखा है उससे यह तो स्पष्ट हो ही गया होगा कि जब दो राष्ट्रो का प्रश्न ही गलत है तो उनके दो देशों का भी प्रश्न नही उठता। परंतु यदि हम इस गलत बात को भी सही मान ले तो हमें विवशतः जिना साहेब

-के बिल्कुल हाल के वक्तव्य पर भी ध्यान देना होगा कि पाकिस्तान और कुछ नहीं, मुसलमानों के लिए अपने "होमलैण्ड" अर्थात् अपने वतन की बात है। इस बात पर एक मोटी अक्लवाला आदमी भी यही कह बैठता है कि मुसलमानों का वतन दो ही स्थानों पर बन सकता है—(१) या तो इस्लाम के अनुयायी होने के नाते उन्हें अरब के रेगिस्तानों को ही अपना मूल देश मानना होगा या (२) उस स्थान को अपना वतन मानना होगा जहाँ वे सदियों से आबाद रहे हैं, पैदा हुए हैं, पले हैं, बढ़े हैं, जहाँ उनकी श्री और सम्पत्ति का प्रश्न लगा हुआ है।

भारत के मुसलमानों ने भारत छोड़कर अरब के रेगिस्तानों में जा बसने के लिए इस्लाम धर्म को नहीं स्वीकार किया था। जब जन्म स्थान को छोड़ने का सवाल ही नहीं पैदा होता तो अलग देश बसाने का भी सवाल क्योंकर पैदा हो सकता है?

जब हम भारत के मुसलमानों के अपने राज पर विचार करते है तो यही सिद्ध होता है कि ऐसा कोई भी मुस्लिम राज इस्लाम धर्म के आधार पर ही बन सकता है। ऐसे किसी राज को सहयोग देने के लिए हिन्दू या अन्य किसी भी गैर-मुस्लिम जाति को कोई सैद्धांतिक आधार मिल ही नहीं सकता। अल्प संख्यकों की सुरक्षा या समृद्धि का ही प्रश्न नहीं है, बहुत बड़ा सैद्धांतिक प्रश्न भी है। यही कारण है कि लीगियों के अतिरिक्त, मुसलमानों के एक बहुत बड़े अंश ने भी लीगियों के पाकिस्तान का विरोध किया है। बङ्गाल का साम्प्रदायिक शासन तथा नवाखोली और पंजाब की धार्मिक बर्बरताओं ने इस विरोध को इतना

व्यापक और प्रचण्ड बना दिया है कि बङ्गाल और पंजाब के हिन्दू तथा सिख किसी भी दशा मे पाकिस्तानी व्यवस्था के साथ नही रहना चाहते। भारत की एक अखण्ड सत्ता को स्वीकार करने वाली काग्रेस जैसी राष्ट्रीय संस्था ने भी पाकिस्तान के पृथक्करण को इस मॉग को विवश होकर स्वीकार कर लिया है।

यहाँ तक तो हुई सैद्धान्तिक विरोध की बात। अब पाकिस्तान के प्रादेशिक पहलू को लेकर भी देख लेना चाहिये। इस संबंध में निम्नलिखित बातो को ध्यान मे रखकर ही आगे बढ़ना होगा—

(१) भारत को हिन्दुस्तान और पाकिस्तान मे बॉट दिया जाय, इसका मुख्य निर्णय भारतीयों के हाथ मे नहीं अंग्रेजों के हाथ में है। इसी लिए अब तक, इस क्षण तक (२६-५-४७ प्रात: ६ बजे तक) यह निर्णय नही हो पाया है कि पाकिस्तान बनेगा तो उसका राजनीतिक और भौगोलिक रूप क्या होगा। हम अब तक घोल-घपले मे पड़े हुए है और अनायास अनिश्चय-जनित सासतो को भोलेन के लिए विवश किये जा रहे है। इस अनिश्चय के आधार पर ही हमे समस्या का विवेचन करना है।

(२) पाकिस्तान की जो मूल प्रादेशिक योजना हमारे कायदे आजम ने पेश की थी, उसमे कुछ उनकी ही वृद्धि के प्रस्ताव के कारण और कुछ सम्बद्ध प्रांतों के गैर-मुस्लिमों की पाकिस्तान से पृथक्करण की मॉग के कारण, पाकिस्तान की कोई निश्चित रूप-रेखा हमारे सामने नही है।

(३) अंग्रेजों की ओर से भले ही पाकिस्तान की कोई भी

शकल बना कर खड़ी कर दी जाय और फिलहाल कांग्रेस भी उसे राजनीतिक कारणों से स्वीकार कर ले परन्तु चूँकि भारत का अधिकांश, तीन चौथाई, भाग पाकिस्तानी सिद्धांतों के विरुद्ध है, इसलिए वाइसराय की दो-चार दिन में होनेवाली घोषणा, कांग्रेस और लीग की स्वीकृति या अस्वीकृति—इत्यादि सभी बातो के बावजूद, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के प्रश्न को अंततः हिन्दू और मुसलमानों के मेल से ही हल करना होगा। आज हो या कल।

(४) अंग्रेज सरकार भारत में रहे या न रहे, आज या जून ४८ के पश्चात, हिन्दुस्तान या पाकिस्तान का अंतिम निबटारा हुए बिना हिन्दू और मुसलमानों की पारस्परिक सद्भावना पुनः स्थापित नहीं की जा सकती। बिना दोनों के पारस्परिक सहयोग और सद्भावना के देश में शांति और सुख की कोई स्थायी व्यवस्था हो ही नहीं सकती। इसलिए हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का अंतिम निर्णय अंग्रेजों की घोषणा या कांग्रेस और लीग की तात्कालिक स्वीकृति या अस्वीकृति से नहीं, देश की वास्तविक सुविधा और पारस्परिक समझौते से ही निर्मित होगा। भले आज कोई गलत चीज मान ली जाय, परंतु कल उसे उलट कर पुनः सही बनाना ही होगा।

अस्तु, हम देखते हैं कि पाकिस्तान के लिए मूलतः निम्नलिखित प्रान्तों की भी माँग की गयी थी:—

(१) उत्तरीय-पश्चिमीय सीमा प्रान्त (२) पंजाब (३) सिंध (४) बङ्गाल (५) आसाम।

(अब इन प्रान्तो के साथ ब्रिटिश बलूचिस्तान की ओर भी संकेत किया जा रहा है।)

ब्रिटिश कैबिनेट मिशन ने, जिसने भारतीय स्वतंत्रता की घोषणा की भी उपर्युक्त प्रांतो को पाकिस्तान का क्षेत्र मान कर इन्हे दो खण्डो मे बॉट दिया था। (बी) उत्तरीय-पश्चिमीय सीमा प्रांत, पंजाब और सिंध। (सी) आसाम और बङ्गाल। ये दोनो खण्ड कुछ निश्चित विषयो को छोड़ अन्य प्रत्येक रूप से सम्पूर्णतः स्वतंत्र रहेंगे। तथाकथित निश्चित विषय भारत के एक केन्द्रीय शासन के अधीन रहेंगे और इन पाकिस्तानी क्षेत्रो को भी इस दृष्टि से केन्द्र के साथ और केन्द्र के अधीन रहना होगा। उपर्युक्त खण्डो के अतिरिक्त शेष ब्रिटिश भारत को (ए) खण्ड मे रखा गया था। पाकिस्तान के इन दोनो (बी) और (सी) खण्डों को अपने-अपने समूह का अपना अपना सम्मिलित शासन-विधान बनाने तथा इन दोनो खण्डों का भी एक सम्मिलित विधान बनाने की स्वतंत्रता थी। यही थी कैबिनट मिशन की मूल घोषणा।

ब्रिटिश सरकार ने अपनी इस घोषणा को अभी रद्द नही किया है, हालांकि इन कुछ महीनों मे परिस्थितियाँ इतनी बदल गयी हैं कि सरकार की उपर्युक्त घोषणा अपने मौलिक रूप मे टिकी नहीं रह सकती। उसमे निश्चय ही परिवर्तन होगा। परंतु उन संभाव्य परिवर्तनों को हाथ मे लेने के पूर्व कैबिनेट मिशन की मौलिक घोषणा पर ही विचार करना होगा अन्यथा यह समझना कठिन होगा कि इस घोषणा मे क्योकर परिवर्तनों की माँग और आवश्यकताएँ उपस्थित हुई है।

पाकिस्तानी क्षेत्रों का अस्तित्व यदि हो सकता है तो उनके मुस्लिम बहुमत के आधार पर ही। दूसरी बड़ी शर्त यह हो सकती है कि सम्बद्ध क्षेत्रों की स्वयं केन्द्र से अलग होने और पाकिस्तानी वर्ग में शामिल होने की माँग होनी चाहिये। सीमा प्रांत में मुसलान ही मुसलमान है। परंतु सीमा प्रांत की मुस्लिम जनता को पाकिस्तानी सिद्धांतों में विश्वास नहीं है। वे भारत की एक भौगोलिक सत्ता के अकाट्य तथ्य को समझते हैं, उसमें विश्वास करते है और इसी लिए पाकिस्तानी क्षेत्र और प्रभावों से अलग रहना चाहते है। जनता ही नहीं चाहती तो आप एक टुकड़े को दूसरे से क्यों अलग करते हैं? अलग कर ही कैसे सकते हैं? केवल इसलिए कि जिना साहेब या उनके लीगी चाहते हैं? इसलिए आप जबरदस्ती करेंगे? जबरदस्ती चल नहीं सकती; साधनशील अंग्रेजी सरकार को भी अपनी जबरदस्तियों से हाथ धोकर अलग होने के लिए विवश होना पड़ रहा है, फिर भला लीगियों की (इसमें हम ब्रिटिश सहायता को भी शामिल कर लेते हैं) जबरदस्ती किस हद तक सफल होगी, इसमें भारी शंका है। यह तो हुआ शुद्ध आत्म-निर्णय का प्रश्न।

पाकिस्तान का दूसरा आधार है मुस्लिम बहुमत। इस दृष्टि से आसाम जैसे हिन्दू बहुमत वाले प्रांत को पाकिस्तान का अङ्ग मानना सरासर कुतर्क और राजनीतिक शरारत है। आसाम इन शरारतों का शिकार होना नहीं चाहता।

इस प्रकार पाकिस्तान का प्रादेशिक निर्माण तर्क-हीन और दोषपूर्ण मालूम होता है। इसमें संघर्ष और अशांति के बीज गड़े हुए हैं।

आसाम का जहाँ तक प्रश्न है, यह कहने में दोष नही कि इसे पाकिस्तानी क्षेत्र में जोड़ने की माँग या घोषणा भारत के विरुद्ध एक भारी राजनीतिक षड्यंत्र है।

खैर, बहुमत के आधार पर यदि एक प्रांत को सारे हिन्दुस्तान से अलग करके पाकिस्तान बनाया जा सकता है तो यह भी स्वीकार करना होगा कि किसी भी प्रांत की १००% आबादी में से यदि ४५% गैर-मुस्लिम है और वे शेष ५५% मुसलमानों के साथ नही रहना चाहते तो आप क्यो उन्हें मुसलमानो के अधीन ढकेलने की चेष्टा कर रहे हैं? ठीक यही बात आज बङ्गाल और पंजाब मे उत्पन्न हो गयी है। पाकिस्तानी किले में दरारे पड़ गये है। कैबिनेट मिशन की सारी योजना खटाई मे पड़ी सी मालूम हो रही है। उसमे परिवर्तन की आवश्यकता है और भारत को पुनः नये ढंग से बाँटने का प्रश्न उपस्थित है। पाकिस्तानी सपने फली-भूत होते नजर नहीं आते।

परंतु यह कोई उत्साहप्रद बात नहीं है। पाकिस्तान के टूटते हुए गढ़ों की पूर्ति नये गढ़ों के निर्माण से करने की चेष्टा हो रही है। भारत मे इस समय बँटवारे का ऊफान आया हुआ है। अब तक जिना ने ब्रिटिश भारत की सरहदो पर ही मुसलमानो के लिए 'होमलैण्ड' (वतन) बनाने की माँग की थी, अब वह कहते है कि देशी रियासतों मे भी हिस्सा लगना चाहिये। इस प्रकार सरहदों पर 'होमलैण्ड' और रियासतों मे 'पाकेट' तैयार होंगे। 'पाकेट' अर्थात् जेब बनकर हिन्दुस्तान के अंदर भी पाकिस्तान की पोल पैदा करने की कुचेष्टा हो रही है। अब तक केवल "होमलैण्ड" की ही बात थी। अब जिना साहेब

कहते हैं कि नहीं, पाकिस्तानी गुट में रियासतें भी शामिल हो सकती हैं। इसका मतलब यह कि राष्ट्र और होमलैण्ड की हद पार करके जिना साहेब, 'राज' (जिसे अंग्रेजी में 'स्टेट' कहते हैं) की मंजिल पर पहुँच रहे है। या यों कि पाकिस्तान के पीछे छिपी हुई असलियत घूँघट खोल रही है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि पाकिस्तान की माँग में राष्ट्रीय तथ्य या 'होमलैण्ड' की आवश्यकता की अपेक्षा एक पृथक एवं स्वतंत्र 'राज' की लिप्साएँ कार्य कर रही हैं। अब तक के रवइयों से साफ जाहिर है कि ब्रिटिश सरकार मुस्लिम राज की स्थापना में लीग का पूरा साथ दे रही है। अंग्रेजों की इस बात पर हम अविश्वास नहीं करते कि वे भारत छोड़ना चाहते हैं, परंतु हमें देखना तो यह है कि भारत छोड़ने में वे चालें कैसी चल रहे है।

बातों को एक-एक करके समझने के लिए कुछ बातों को दुहराना भी पड़ेगा। १६ मई '४६ को कैबिनेट मिशन ने भारतीय स्वतंत्रता की अपनी घोषणा प्रकाशित की थी। उस घोषणा के अनुसार देश की आजादी का नकशा तैयार करने के लिए एक विधान परिषद और एक मध्यकालीन सरकार की योजना थी। मध्यकालीन सरकार में भाग लेने के लिए अंतिम विधान निर्माण का उत्तरदायित्व लेना भी आवश्यक था। अंग्रेजों ने लीग को मध्यकालीन सरकार में तो घुसेड़ लिया पर विधान परिषद में शामिल होने के लिए उसे अब तक मजबूर नहीं किया गया। क्यों ? क्योंकि लीग भारत के लिए सम्मिलित विधान निर्माण के कार्य से बिल्कुल मुक्त रहना चाहती है। फिर भारत की सरकार में ही स्थान बनाये रखने का उसे क्या हक है ? परंतु हक या

नाहक, लीग का खूँटा अन्तरिम सरकार की छाती पर गाड़ रखा गया है। यह अन्याय और अनीति ही नहीं, कैबिनेट मिशन की योजना को रद्द कर देना भी है।

इस अनीति को एक कदम और आगे बढ़कर देखिये। एक लम्बे सलाह-मशविरे के पश्चात अन्तरिम सरकार में लीगियों को पाँच स्थान दिये गये। मुस्लिम लीग मुसलमानों की प्रतिनिधि संस्था है न? उसे मुस्लिम प्रतिनिधि चुनने थे। परंतु उसे एक हिन्दू (हरिजन) सदस्य भी चुन लेने की छूट दे दी गयी। यह सरासर देश के साथ धोखा और ज्यादती थी। इस हरकत ने साफ जाहिर कर दिया कि अंग्रेज लोग लीग को कॉंग्रेस का एक सबल समकक्षी बनाने पर तुले हुए थे। इन बातों को देखते हुए हम अंग्रेजों की (भारत छोड़ने की) नीयत में भले ही विश्वास कर लें, उनकी हरकतों में हमें विश्वास हो नहीं सकता। गाँधीजी ने इसीलिए रूटर के सम्वाददाता का उत्तर देते हुए साफ कह दिया है कि अंग्रेज आज ही हिन्दुस्तान छोड़ दें तो बेहतर होगा। जितनी ही अधिक वह यहाँ रहेंगे, उतनी ही अधिक शरारतें होंगी। गाँधी जी ने यहाँ तक कह दिया है कि भले ही सारे देश में अराजकता छा जाये, अंग्रेजों को भारत छोड़ना ही होगा।

खैर, हम कह रहे थे कि "पाकिस्तान" केवल मुस्लिम "राष्ट्र" के लिए अपने "होमलैण्ड" का ही प्रश्न नहीं था; इसके पीछे मुस्लिम "राज" की लिप्साएँ कार्य कर रही थीं। इस बात के लिए भी अंग्रेजों ने पहले से ही जमीन तैयार कर रखी थी। जैसा कि मैं स्पष्ट कर चुका हूँ, ब्रिटेश कैबिनेट मिशन की मूल योजना

में घोषित किया गया था कि अंग्रेजों का शासन समाप्त होते ही देशी रियासतें पूर्ण रूपेण स्वतंत्र हो जायेंगी, उन पर कोई सत्ता नहीं रह जायेगी; कहने का मतलब यह था कि अंग्रेजों के साथ ही उन पर से भारत की भी सत्ता समाप्त हो जायगी। भारत की सत्ता समाप्त होने का मतलब यह था कि रियासतें हिन्दुस्तान के साथ रहें या पाकिस्तान यानी मुस्लिम राज के साथ रहें। समय आते ही लीग के समान ही रियासतों को भी विधान परिषद् से अलग रखने की चाल चली जाने लगी है।

रियासतों के प्रश्न पर विचार करते समय हमें यह ध्यान में रखना होगा कि लीग ने अब तक रियासती प्रजा में कार्य नहीं किया है। लीग का कार्य क्षेत्र आद्योपांत ब्रिटिश भारत में ही रहा है क्योंकि इसे यहाँ सरकारी जाल से प्रत्येक उचित एवं अनुचित सहायता मिली है। रियासतों में ये सुविधाएं उपलब्ध नहीं थीं। इसलिए भारत से अलग होने की धारणा रियासती प्रजा की नहीं, रियासतों के सत्ताधीशों की ही हो सकती है। इस प्रकार हम सहज ही समझ जाते हैं कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की रियासती घटा-बढ़ी में जनान्दोलन नहीं, सरकारी कारगुजारियाँ ही प्रबल हो रही हैं।

हम देख चुके हैं कि लीग यथार्थतः जनता की सच्ची भावनाओं की प्रतीक है ही नहीं। यह मूलतः एक प्रतिक्रियावादी संस्था है। रियासतों में इसने कभी भूलकर भी जनता की आजादी का सवाल नहीं उठाया है। अमीर और नव्वाबों के हाथ में ही लीग की नकेल रही है, इसलिए जनता की स्वतंत्रता को नहीं, राजा और नव्वाबों के स्वेच्छाचारी शासन को प्रश्रय

देना ही लीग की जीवन गति है। अतएव इस युग में भी प्रजा पर भेड़-बकरियों के समान, स्वच्छंद और निर्द्वन्द्व सत्ता का स्वप्न देखनेवाले नव्वाब या राजों को अपने निखट्टू अस्तित्व के लिए पाकिस्तानी व्यवस्था मे बहुत बड़ी छूट नजर आने लगी है।

परंतु साथ ही साथ एक दूसरी शक्ति भी कार्य कर रही है। पाकिस्तान का आधार है मुस्लिम राष्ट्र। परिणामतः हिन्दू राजे पाकिस्तान में शामिल क्यो होगे ? अतएव हिन्दू राजे एक ओर तो हिन्दुस्तान की आजादी की लहर से घबड़ा रहे है, दूसरी ओर पाकिस्तान मे शामिल होने के लिए उनके पास कोई आधार नही है। इस प्रकार विवश होकर कई बड़ी-बड़ी हिन्दू रियासतें विधान परिषद् मे शामिल होकर हिन्दुस्तान के साथ आ खड़ी हुई हैं, परंतु मुस्लिम रियासते अब भी विधान परिषद् से अलग ही है। इस स्थिति में भी बहुत जल्द परिवर्तन होनेवाला है; बहुत जल्द रास्ता साफ होने जा रहा है। फिलहाल परिस्थितियाँ अनिश्चित है, फिर भी हमे जो समझने की बात है वह यह कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की भावनाएँ अंग्रेजी 'सूत्रों के सहारे ब्रिटिश भारत से बढ़कर रियासतो मे भी जा उलझी हैं और यहाँ भी वही बात है; ब्रिटिश घोषणा या जनता के अपने बल पर, जैसे भी आवश्यक और सम्भव होगा, आज या कल, अंततः यहाँ भी हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की समस्या को सुलझाना होगा।

यह तो हुआ पाकिस्तान की प्रादेशिक माँग का वैचारिक पहलू। अब इसके भौतिक रूप को भी समझना होगा। हमने

देखा है कि ब्रिटिश भारत में पाकिस्तान के दो मूल खण्ड निर्णीत हुए थे—

(१) उत्तरीय-पश्चिमीय सीमाप्रांत, पंजाब और सिध।

(२) आसाम और बङ्गाल।

इन दोनों का एक सम्मिलित मुस्लिम राज बनेगा। परंतु आज के युग मे भी किसी भी राज को अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए उसे सैनिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं व्यावसायिक दृष्टि से समर्थ होना अनिवार्य है। इन दोनों खण्डों की अन्य तीसरे खण्ड अर्थात् हिन्दुस्तान के साथ सांस्कृतिक परस्परता को छोड़कर एक बड़ी भारी आर्थिक निर्भरता भी है। अव्वल तो यह कि सीमा प्रांत और आसाम इन पाकिस्तानी खण्डो मे शामिल नहीं होते और यदि हम इसे ज्यों का त्यों मान भी लें तो हम देखते हैं कि सीमा प्रांत और सिध आर्थिक दृष्टि से अपना बोझ स्वयं नहीं सँभाल सकते। बङ्गाल में केन्द्रीय सहायता के अभाव में प्रांतीय सुधार की लाखों छोटी-छोटी बातें भी रुकी हुई हैं। इसके अतिरिक्त इन दोनों का व्यावसायिक जीवन हिन्दुस्तान कहे जानेवाले तीसरे खण्ड पर ही निर्भर है। हम नहीं समझते कि क्योंकर हिन्दुस्तान अपने खून से एक नये पाकिस्तान को मोटा बनाना स्वीकार करेगा? रेल, सड़क, तार, जहाज—ऐसी हजारों बातें हैं जो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की भौमिक स्थिति में अलग और स्वतंत्र रह ही नहीं सकते। काम चलाने की भले ही कोई तरकीब कर ली जाये, परंतु वह जो कुछ होगा बिल्कुल अस्थायी होगा और इसीलिए एक सम्मिलित स्थायी योजना का होना अनिवार्य होगा।

आजकल राज्यों की स्वरक्षा के लिए सबल सेनाओं की आवश्यकता होती है। सिंध, सीमा प्रान्त और बङ्गाल के सरकारी आय और कोष को देखते हुए कोई भी कह सकता है कि ऐसी किसी भी स्वतन्त्र सेना रखने का इनके पास रत्ती भर भी सामर्थ्य नहीं है। यदि सेना सम्बन्धी हिन्दुस्तान के साथ मिलकर कोई व्यवस्था नहीं होती तो अधिकाधिक यही होगा कि अंग्रेजी सेनाएँ पाकिस्तान में अपना गढ़ स्थापित करे।

एक भारी बात तो यह है कि पूरब और पश्चिम के दोनो पाकिस्तानी खण्डों का सम्पर्क कैसे स्थापित होगा? जैसा कि जिना साहेब का ख्याल है, हिन्दुस्तान की छाती पर से सड़क निकाली जायगी? जैसा कि पण्डित जवाहरलाल ने अभी (२५-५-४७) नैनीताल में कहा है यह बिल्कुल सिड़ीपन की बात है। सरदार पटेल ने ठीक ही कहा है (२६-५-४७) कि दो पाकिस्तानी खण्डों के बीच सम्पर्क स्थापित करने के लिए हिन्दुस्तान की छाती पर से रास्ता मांगना ही सिद्ध करता है कि जिना को अपने पाकिस्तान में विश्वास नहीं है। ये सारी बातें ऐसी है जिससे पाकिस्तान बन भी जाय तो चल नहीं सकता। पाकिस्तान को चलाने के लिए या तो उसे हिन्दुस्तान से मिलना पड़ेगा या बाह्य शक्तियो का आश्रय लेना होगा। भारत भूमि पर बाह्य शक्तियों के अड्डों का मतलब होगा हिन्दुस्तान की आजादी में हस्तक्षेप। पण्डित जवाहरलाल ने बिल्कुल स्पष्ट शब्दों में साफ कर दिया है (२५-५-४७) कि हम ऐसा हर्गिज नहीं होने देंगे। सरदार पटेल ने इसी बात को यों कहा है कि पाकिस्तान बन जाय परंतु उसे अपनी पर-राष्ट्र नीति का

करना होगा ताकि वह हिन्दुस्तान के खिलाफ न पड़े। अर्थात भारत में विदेशी हस्तक्षेप स्वीकार नहीं होगा। सारांश यह कि पाकिस्तान के रहते हुए हिन्दुस्तान भी आजाद नहीं हो सकता। अर्थात् आजादी की समस्या को सुलझाने के लिए पाकिस्तान के प्रश्न को हल करना ही होगा।

मैं इस बात को मानता हूँ कि अँग्रेजों का जोर खतम हो जाने पर हमारा सफर आसान हो जायगा, लेकिन अच्छा होता कि लीगी भाई अपने भविष्य को समझ कर ही अपनी वर्तमान कार्यवाहियों का सञ्चालन करते। अच्छा होता कि वे अपनी कारगुजारियों से गैर-मुसलमानों के दिल में ऐसा जहर न बोते जिसका खमियाजा उन्हें खुद आगे चलकर उठाना पड़े।

हो सकता है कि अभी हाल में इनसानियत के मुँह पर जो इतना कालिख पोता गया है केवल इसलिए कि हिन्दू स्वयं मुसल-मानों से आजिज आकर पाकिस्तान को स्वीकार करके किस्से को खतम कर देने पर मजबूर हो जायें। परन्तु यहाँ पाकिस्तानियों का हिसाब गलत साबित हुआ है। जुल्म की हद नहीं होती; शुरू तो कर दिया गया लेकिन वह इस तरह काबू के बाहर हो गया कि अब हिन्दू और सिक्ख पाकिस्तानी प्रदेशों को भी तोड़-फोड़ कर अलग हो जाना चाहते हैं। बङ्गाल और पञ्जाब को मुस्लिम और गैर-मुस्लिम आधार पर बाँट देने पर लोग तुल गये हैं। यदि ऐसा हुआ तो बेचारा पाकिस्तान तो और भी बे-दम हो जायगा।

जिना साहेब भले ही इस कमजोरी को दूर करने के लिए मुस्लिम रियासतों को अपने पाकिस्तानी गुट में मिला लेना चाहें,

परन्तु इससे तो उनकी मुसीबतें दूर होने के बजाय बढ़ जायेगीं। हिन्दुस्तान के नक्शे पर नजर डालिये। इनमें कितनी मुस्लिम रियासतें नजर आ रही है ? ये सारी की सारी हिन्दू रियासतों से घिरी हुई हैं। इन मुस्लिम रियासतों का पाकिस्तानी हुकूमत से भौमिक सम्बन्ध क्योंकर निर्द्वन्द्वता पूर्वक चल सकता है ?

इन मुस्लिम रियासतों के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण बात ध्यान में रखने की यह है कि ये केवल अपने शासकों के कारण ही हिन्दू या मुस्लिम कही जा रही है। परन्तु वह वक्त बहुत नजदीक है जब निरंकुश राजे और नव्वाबों का अन्त हो जायगा। अधिक से अधिक ये लोग अपनी प्रजा की इच्छा पर निर्भर करनेवाले विगत काल के स्मृति मात्र शेष रह जायेंगे। ऐसी दशा में जो रियासतें आज मुस्लिम कही जा रही है वे अपने हिन्दू बहुमत के कारण हिन्दुस्तान के साथ ही नजर आयेगी और इस प्रकार देशी राजों के आधार पर विस्तार एवं बल प्राप्त करनेवाला आज का पाकिस्तान कल अपने आप छिन्न-भिन्न हो जायगा।

इस प्रकार हम पाकिस्तान को जिस पहलू से भी देखते हैं, वह हिलता डोलता नजर आ रहा है। वास्तव में पाकिस्तान की कोई निर्दोष कल्पना हो ही नहीं सकती। अतएव सच्चे मुसलमानों का कर्तव्य है कि पाकिस्तानी नारों पर मरने-मारने के पहले खुले दिल से गौर करें। ईमानदारी से सोचनेवालों को कोई धोखा नहीं दे सकता। धोखा एक आदमी को बार-बार दिया जा सकता हैं। एक आदमी या सब आदमियों को कई बार भी धोखा दिया जा सकता है। परन्तु सब लोगों को हर बार, सदा, धोखा नहीं दिया जा सकता। मतलब यह कि यदि पाकिस्तान सचमुच अच्छी चीज है तो सारे हिन्दू एक मुँह से

उसे भले ही बुरा कहते रहें, वह बुरा नहीं हो सकता। हिन्दू लोग केवल अपनी मतलब भरी दलीलों से आपको धोखे में रखकर आपको पाकिस्तान से मुनकिर नहीं बना सकते। आपका पाकिस्तान यदि निर्दोष है तो हिन्दुओं के कुतर्क और चालबाजियों, हिन्दुओं के जोर और दबाव, के बावजूद भी वह सही बना रहेगा। इसलिए मुसलमानों का पहला फर्ज है कि वे हिन्दू और मुसलमान के भेद से अलग होकर पाकिस्तान के मसले पर स्थानीय विद्वानों के साथ सच्चे नागरिकों के समान संघटित रूप से विचार परामर्श करके अपना स्वतन्त्र मत कायम करें। पाकिस्तान पर जगह-जगह, ऊँचे दर्जे के वाद-विवादों (debates) और अध्ययन की आवश्यकता है।

रोशनी से उल्लू और चमगादड़ दूर रहते हैं। चोरी और राहजनी के लिए ही अँधेरे की आवश्यकता होती है। सच्चाई और सच्चे कामों के लिए प्रकाश की आवश्यकता होती है, तर्क और विवेक से बल मिलता है। इसलिए प्रत्येक मुसलमान का फर्ज है कि पाकिस्तान के नाम पर इन्सानियत को तलाक देने के पहले खुद पाकिस्तान की असलियत और मुमकिनात (सम्भावनाओं) को समझ ले। अविद्या से अंधकार में किया हुआ काम खुदकुशी (आत्म हत्या) से भी ज्यादा दिलसोज (हृदय विदारक) और गमगीन होता है।

हम मुसलमानों से कुछ नहीं चाहते। चाहते केवल यही हैं कि वे अपने ही पाकिस्तान पर सच्चे विद्वानों के साथ मिल कर गौर करें, वरना केवल लीगी सरदारों की ललकार पर किये हुए काम हिन्दुस्तान में मुस्लिम कौम को कमजोर बना देंगे, इस्लाम के पाकदामन में काले धब्बे बन जायेंगे।

केवल जोर और जुल्म से पाकिस्तान कायम हो नहीं सकता, इसके लिए तर्क और विवेक की भी आवश्यकता है। दुनिया में कोई भी राज जोर और जुल्म के सहारे न चला है न चलेगा। नेपोलियन की हुकूमत खतम हो गयी। हिटलर और उसकी नाजी ताकत बुरी तरह मिट्टी मे मिल चुकी है। क्यों ? क्योंकि इनके पीछे न्याय और तर्क का सम्बन्ध नहीं था।

शैतान आपको भुलावे दे रहा है। आवश्यक है कि आप फौरन होशियार हो जायें। आपको यदि सचमुच अपने पाकिस्तान की चाह है तो ईमानदारी से इस पर गौर कीजिये, सोचिये और समझिये।

१६

इस अध्याय मे हम पाकिस्तान सम्बन्धी कुछ महत्वपूर्ण बातों पर विचार करेंगे :—

पाकिस्तान का अस्तित्व "दो राष्ट्र"—हिन्दू और मुसलमान—के विभाजन से ही कायम होता है। बङ्गाल के पूर्वी भाग में एक प्रकार से मुसलमानों की ठोस आबादी है, उसी प्रकार पश्चिमीय और उत्तरीय भाग मे हिन्दुओ की ठोस आबादी है। इस प्रकार हिन्दू और मुसलमान दो स्पष्ट एवं पृथक् क्षेत्रों में बँटे हुए हैं और इनकी जन संख्या का अनुपात लगभग ५५-५८%—मुसलमान—और ४५-४२% – हिन्दू है।

अतएव हम देखते है कि कुल को साथ रखने से मुस्लिम बहुमत वाला बङ्गाल वास्तव मे हिन्दू और मुसलमानो के स्पष्टतः दो अलग-अलग क्षेत्रो से ही निर्मित होता है और इन दोनों

क्षेत्रों के विस्तार और जन-संख्या में विशेष अंतर नहीं है। अतः बङ्गाल को दो टुकड़ों—हिन्दू और मुसलमान मे बाँट देने की प्रबल माँग उठ रही है। लीग ने बङ्गाल को हिन्दुस्तान से अलग करके पाकिस्तान की माँग की, बङ्गाल के हिन्दुओं ने पाकिस्तान से अलग हो जाने का निश्चय कर लिया।

परंतु लीग के शहीद बाबा मियाँ सुहरवर्दी ने इसे मूर्खता बताना शुरू कर दिया है। आप कहते हैं कि नहीं, बिल्कुल गलत बात है। "बङ्गाल बङ्गालियों का है", "बङ्गाली जाति की एकता को नष्ट नहीं किया जा सकता।" ऐसे ही अनेकों तर्क दिये जा रहे हैं।

अब कायदे आजम से पूँछने की आवश्यकता है कि यदि बङ्गाल बङ्गालियों का है तो क्या हिन्दुस्तान हिन्दुस्तानियों का नहीं हो सकता? कवायदे आजम से यह भी पूँछने की आवश्यकता है कि हिन्दू और मुसलमान मिलकर एक जाति कैसे बन सकती है? या तो दोनों "दो राष्ट्र" है या "दो राष्ट्र" नहीं है। "दो राष्ट्र" होने से हिन्दू और "एक बङ्गाली जाति" दोनों नहीं बनाया जा सकता, "दो राष्ट्र" नहीं होने से पाकिस्तान पैदा नहीं होता। अजीब घोल-घपला है यह पाकिस्तान का।

यही दशा पंजाब की है। पंजाब के हिन्दू और सिक्खों ने ठीक बङ्गाल के ही आधार पर पाकिस्तान से अलग हो जाने का निर्णय किया है। इस माँग के उपस्थित होते ही लीगी सरदारों ने कहना प्रारम्भ कर दिया है कि पंजाब के हिन्दू और सिक्ख सदियों से साथ रहे हैं, वे जीवन के कितने ही मुस-

दुख एक साथ पुश्त-दर-पुश्त से झेलते आये है, उन्हें काट-काट कर अलग करना मूर्खता होगी।

यह भी अजीब गोरख-धन्धा है। पाकिस्तान की माँग के लिए कहा जाता है हिन्दू-मुसलमान एक हो ही नही सकते पंजाब और बङ्गाल के विभाजन का सवाल उठते ही उन्हें अभेद्य और अविभाज्य बताया जाता है।

इन बातों से स्पष्ट हो जाता है कि पाकिस्तान की कल्पना किसी तर्क, नीति या सिद्धांत पर नहीं, केवल "जबरदस्ती का ठेंगा सिर पर" है। जिस बात के पीछे कोई तर्क नहीं, कोई सिद्धांत नहीं, वह बहुत दिन तक, बहुत दूर तक चल नही सकती। एक न एक दिन उसका अंत होगा, और अवश्य होगा।

मै पिछले अध्यायों मे स्पष्ट कर चुका हूँ कि पाकिस्तान के पीछे और कुछ नहीं, केवल भारत के स्थायी बँटवारे की चिताएँ प्रचण्ड हो उठी है। हम जब सीमा प्रांत की वर्तमान स्थिति पर ध्यान देते हैं तो बात बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है। सीमा प्रांत के लीगी आन्दोलन का कारण बताया जा रहा है सरकारी अत्याचारों के विरुद्ध लड़ाई। परंतु इस लड़ाई का आघात सर-कार पर नहीं हो रहा है, केवल हिन्दू और सिक्ख बर्बाद किये जा रहे है। सीमा प्रांत की सरकार हिन्दू या सिक्खो की नहीं, मुसलमानों की ही है। फिर यह हमला हिन्दुओ पर क्यो हो रहा है? क्योंकि इन उत्पातों के पीछे छिपी हुई शक्तियो का एक खास मकसद यह है कि हिन्दू और मुसलमानो के बीच एक अमिट रेखा खींच दी जाये।

सीमा प्रांत के दंगाइयो को अंग्रेज गवर्नर द्वारा खुलेआम

मंत्रिमण्डल के सिर पर चढ़कर प्रश्रय मिल रहा है। सीमा का राजनीतिक विभाग सीधे गवर्नर के हाथ में है और उसीकी छत्र-छाया में यह वीभत्स काण्ड चलाया जा रहा है। मकसद यह है कि कांग्रेस मंत्रिमण्डल को किसी प्रकार शीघ्रातिशीघ्र समाप्त करके सीमा प्रांत को हिन्दुस्तानी गुट से अलग कर रूस के विरुद्ध एक "आड़" (बफर स्टेट) खड़ी की जा सके। सीमा प्रांत के मंत्री, सीमांत गाँधी तथा काँग्रेस के मंत्री ने प्रमाण-पूर्वक इस रहस्य भरी चाल का भण्डाफोड़ कर दिया है।

अतएव, यह समझने की अब अधिक आवश्यकता नहीं कि हिन्दुस्तान के बीच सारा पाकिस्तानी आयोजन केवल अंग्रेजों की स्वार्थ-रक्षा का एक दूसरा उपाय है जो अंग्रेज और अंग्रेजी शासन के बल पर ही चल रहा है। सिंध प्रांत में अलावख्श के राष्ट्रीय मंत्रि मण्डल को बर्ख्वास्त करके लीगी मंत्रि-मण्डल की स्थापना करना अंग्रेज गवर्नर और अंग्रेजी सरकार का ही काम था। पंजाब में युनियनिस्ट - मंत्रि मण्डल पर दबाव डालकर टूट-फूट जाने के लिए विवश करना अंग्रेज गवर्नर और अंग्रेजी सरकार का ही काम था। बङ्गाल में कृषक प्रजा पार्टी के मंत्रि-मण्डल को बर्ख्वास्त करके लीगी मंत्रि मण्डल की स्थापना करना अंग्रेज गवर्नर और अंग्रेजी शासन का ही काम था। लीग बङ्गाल में "सीधा कदम" (डाइरेक्ट एक्शन) उठाने जा रही थी; उसने १६ अगस्त ४६ को "सीधा कदम" उठाया और कलकत्ता कई दिन तक पाप और पतन में भस्मीभूत होता रहा, अब भी दशा में सुधार नहीं हुआ है। बङ्गाल के अंग्रेजी गवर्नर और अफसरों को इन सबकी पहले और पीछे, बराबर, रत्ती-रत्ती

खबर रही है, परंतु गवर्नर ने लीगी मंत्रि-मण्डल को बिल्कुल नहीं रोका है और आज सीमा प्रांत में भी वही कुचक्र चल रहा है। इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि सारे पाकिस्तान के पीछे अंग्रेजी शासन का भयंकर षडयंत्र चल रहा है।

परंतु इसी बात के दो और पहलू हैं—एक हिन्दुस्तान के लिए, दूसरा मुस्लिम लीग के लिए। हिन्दुस्तान के लिए यह कि अंग्रेजी रोग का प्रकोप कम होते ही पाकिस्तानी खुराफातें अपने आप क्षीण हो जायेंगी। लीग के लिए यह कि अंग्रेजी शासन के बल पर खड़ी होनेवाली योजना एक दिन उत्पीड़क आत्म-ग्लानि का कारण बनकर रहेगी। अतएव बुद्धिमत्ता इसी में है कि धागे को इतना न खींचा जाये कि वह टूट जाये और फिर उसे जोड़ने की समस्याएँ उत्पन्न हो जायें। लीग के दिल में यदि सचमुच मुस्लिम वफादारी की भावना है तो उसका फर्ज है कि बेचारी मुस्लिम जाति को झूठे वादों से गुमराह न किया जाये। मुस्लिम कौम की भलाई अंग्रेजी शासन से नहीं, हिन्दुस्तान के वाशिन्दों से मिलकर ही की जायेगी। आतंकवाद से कुछ काम भले बन जायें, कोई स्थायी व्यवस्था नहीं हो सकती।

जिना साहेब और लीगी सरदारों को समझना चाहिये कि हिटलर और हिटलरी ताकतों का भी अंत में बुरा ही परिणाम रहा। हिटलरी चालों का अंत हिटलरी ढंग से ही होता है, अतः नाजीवाद से प्रेरणा प्राप्त करनेवालों को नाजीवाद के अंत पर भी नजर रखनी चाहिये।

भारत का भौगोलिक अथवा राजकीय दृष्टि से प्रांतीय विभाजन हो सकता है, परंतु हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के

के आधार पर कोई भी, किसी भी रूप में विभाजन हो, वह सर्वथा अव्यवहार्य्य होगा। देश की एक भौगोलिक सत्ता, एक केन्द्रीय व्यवस्था को माने विना, संघर्ष का अन्त हो ही नहीं सकता।

पाकिस्तान और हिन्दुस्तान को मान लेने से, जैसा कि जिना साहेब कहते हैं यह भी प्रश्न उठ सकता है कि पाकिस्तान को अरक्षाजनक या असुविधाजनक समझकर हिन्दुओं को हिन्दुस्तान में हटना पड़े। उसी प्रकार संभव है, हिन्दुस्तान से मुसलमानों को पाकिस्तान में जाना पड़े। जन-परिवर्तन की यह कल्पना भी नाजीवाद की देन है और हमारे मानस-पटल पर एक घृणास्पद लहर उत्पन्न करती है, फिर भी, जैसा कि मैं कई अव्यवहार्य्य एवं अतार्किक बातों को मानकर समस्या पर दोनों पहलू से विचार करता आया हूँ, यदि इस बात को भी हम मान लें तो नतीजा क्या होगा?—

अभी हाल में एक समाचार मिला है कि बङ्गाल के मेहतर मुस्लिम आघातों से ऊबकर हिन्दुस्तान में चले आना चाहते हैं। इसका मतलब यह होगा कि लीगी सरदारों को अपने मुस्लिम "राष्ट्र" में तत्काल मेहतरों का एक वर्ग उत्पन्न करना होगा। कितने पाकिस्तानी इस बोझ को ढोने के लिए तैयार हैं।

एक दूसरा समाचार है कि कई बड़े बैंकों ने अपना कारोबार लाहौर (पाकिस्तान) से हटाकर दिल्ली (हिन्दुस्तान) में कायम करने का निश्चय किया है। क्योंकि उन्हें पाकिस्तानी व्यवस्था में साम्प्रदायिक आघातों की सारी शंका उत्पन्न हो रही है। ढाई अरब की पूँजी और उसपर टिका अरबों का व्यापार-व्यवसाय पाकिस्तान से हिन्दुस्तान को कूच कर जाना चाहता

है। क्या पाकिस्तानी भाइयों ने ऐसी ही असंख्य और अनंत परिस्थितियों का सामना करने की तैयारी कर ली है?

आपको मालूम होगा कि हजारों मुसलमानों को भड़काकर बिहार से डेरा कूच कर जाने की सलाह दी गयी थी। बङ्गाल की लीगी सरकार ने भी इन शरणार्थियों को पहले तो बड़े-बड़े सपने दिखलाये परंतु अब वह इनकी कोई भी उचित व्यवस्था करने मे असमर्थ सिद्ध हो रही है और परिणामतः देश छोड़ जानेवाले भोले-भाले लोग पुनः बङ्गाल से बिहार लौट रहे है।

ये सारी बाते केवल उस व्यापक समस्या का सूत्रपात करती हैं जो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में बँट जाने पर उत्पन्न होनेवाली है। अतः आवश्यक है कि हम ईमानदारी से विचार करें और हिन्दू-मुस्लिम प्रश्न को ऐसा जटिल न बना दें जिसकी लपेट में पड़कर हमारी भोली-भाली जनता को पश्चाताप एवं आत्म-पीड़ा की यातनाएँ झेलनी पड़ें।

जिना साहेब ने अभी हाल में बर्मा के मुसलमानो को सलाह दी है कि वे अपने को बर्मियों के साथ मिलाकर चलें। यही सलाह हिन्दुस्तान में भी लागू होनी चाहिये। इसी में कल्याण है।

नीचे एक त्रिकोण है—
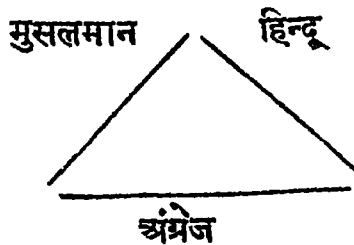
इस त्रिकोण की दोनों भुजाएँ अलग-अलग हैं क्योंकि दोनो अंग्रेजों के आधार पर खड़ी हैं। इस आधार को निकाल दीजिये। दोनों भुजाएँ अपने आप मिल जायेंगी। ईमानदारी का यही तकाजा है कि इस आधार को निकाल कर देखें कि हिन्दू मुसलमान मिलते हैं या नहीं। मैं कहता हूँ कि मिल जायेंगे।

अतः प्रत्येक मुसलमान का फर्ज है कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के हल के लिए, हिन्दू और मुसलमानों की भलाई के लिए, दिल में ईमान रखकर आलीशान महलों में मौज करने वाले लीगी सरदारों की जोश व खरोश की वातो में अपने भविष्य को बर्बाद न करें। कत्ल और लूट पाट का एक दिन अंत होगा ही। उस वक्त तो हमें मजबूर होकर अमन और चैन के रास्ते अख्तियार करने ही पड़ेंगे। इसलिए बेहतर है कि हम अभी से होशियार हो जायें। अब भी बहुत कुछ नहीं खोया है।

मुसलमान भाइयों को यह भी सोच रखना चाहिये कि अंग्रेजों की घोषणाओं से हमारी तकलीफें दूर नहीं होंगी। हमें अपनी मुसीबतों का इलाज स्वयं करना पड़ेगा। इस लिए मैं एक बार फिर पिछले अध्याय की सलाह को दुहराता हूँ कि आप और कुछ मत कीजिये, कॉंग्रेस या राष्ट्रवादी मुसलमानों की भी बात मत मानिये, परंतु इतना तो कीजिये ही कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के प्रश्नों पर गम्भीरता पूर्वक, महल्ले-महल्ले, अध्ययन और विद्वानों के साथ वाद-विवाद प्रारम्भ कर दीजिये। जिना साहेब या लीगी सरदारों के वक्तव्यों को पढ़ लेने से ही बात समझ में नहीं आयेगी। आपको पाकिस्तान के सम्बन्ध में मुस्लिम और गैर-मुस्लिम—सबकी राय पर गौर करना होगा। दही को मथ

कर ही मक्खन तैयार होता है। यदि सचमुच पाकिस्तान कोई काबिल गौर चीज है, तो विचारों के मन्थन से ही, उसकी नीव मजबूत होगी।

अंत मे, प्रत्येक मुसलमान का फर्ज है कि निम्नलिखित प्रश्नो का उत्तर देकर ही आगे बढ़े—

(१) क्या आप मुसलमान है ?

(२) इसलाम आपको दीन और मजहब के बारे मे क्या शिक्षा देता है ?

(३) इसलाम आपको मुल्क और पड़ोसियों के बारे में क्या बतलाता है ?

(४) आपका मजहब गैर-मजहब के साथ कैसे बर्ताव की शिक्षा देता है ?

(५) गैर-मजहब वालों से आप (यानी मुसलमान) कैसे बर्ताव की उम्मीद रखते है ?

(६) क्या आप "नेशन" या "राष्ट्र" का सही-सही मतलब समझते है ?

(७) 'नेशन' या 'राष्ट्र' के सही-सही मतलब को समझने के लिए आपने किन-किन पुस्तको का अध्ययन किया है ? किन-किन विद्वानों से उस मतलब को समझने की कोशिश की है ? उन विद्वानो में कितने गैर-लीगी और गैर-मुस्लिम हैं ?

(८) क्या आप समझते हैं कि हिन्दू और मुसलमान दो अलग-अलग राष्ट्र है ?

(९) क्या इन राष्ट्रों के लिए दो देश अर्थात हिन्दुस्तान और पाकिस्तान बनाना पड़ेगा?

(१०) हिन्दुस्तान और पाकिस्तान बन जाने के पश्चात आप किस देश मे पड़ेंगे ?—हिन्दुस्तान में या पाकिस्तान में ?

(११) आप यदि पाकिस्तान में हैं तो क्या हिन्दुस्तान में बसने वाले मुसलमानो से आपका कोई सम्बन्ध, कोई रिश्तेदारी है ? क्या आपको खुद हिन्दुस्तान से कोई तिजारती सिलसिला रखना होगा ? आपके पाकिस्तान मे बसने वाले कितने मुसलमानो का हिन्स्दुतान के मुसलमानों से सम्बन्ध या रिश्तेदारी हो सकती है ? कितने मुसलमानों को हिन्दुस्तान के साथ सिलसिला जारी रखना होगा ?

(१२) क्या आपके पाकिस्तान में बनने वाली सरकार बजात खुद इतनी मजबूत और खुशहाल है कि हिन्दुस्तान या किसी भी गैर-मुल्क की सहायता या सहयोग के बिना पाकिस्तान वालों की मुकम्मल हिफाजत और तरक्की का बन्दोबस्त कर देगी ?

(१३) पाकिस्तान की तरक्की के लिए आप हिन्दुस्तान से मदद लेना चाहते है या अंग्रेजों से ? इन दोनो की मदद का फर्क आप समझते है ?

(१४) आपके मौजूदा तौर-तरीके हिन्दुस्तान वालों के मेल-मुहब्बत पर कैसा असर डालेंगे ?

(१५) आप यदि हिन्दुस्तान मे पड़ते है तो क्या आप समझते है कि हिन्दुस्तान में ही आबाद रहने में आपकी भलाई है ? क्या ? आप हिन्दुस्तान छोड़कर पाकिस्तान जाने का इरादा कर रहे हैं ? क्यों क्या इस तरह आप अपनी माली हालत में सुधार होने की आशा रखते हैं ? आपके अतिरिक्त कितने और मुसलमान होंगे जो आपकी ही तरह हिन्दुस्तान से पाकिस्तान मे जाकर अपनी

हालत मे सुधार करने की फिकर मे है ? क्या आपकी पाकिस्तान में बनने वाली सरकार मे इतनी ताकत है जो हिन्दुस्तान से आने वाले सब मुसलमानों की हिफाजत और खुशहाली का पूरा-पूरा प्रवन्ध कर दे ?

(१६) क्या आपको मालूम है कि बिहार (हिन्दुस्तान) छोड़ कर वहुत से मुसलमान पाकिस्तान (वङ्गाल) मे बसने के लिए पहुँचे थे और पाकिस्तानी सरकार की बद-इन्तजामी और तंग-दस्ती के कारण बेचारे इन भोले-भाले और बहकाये हुए मुसलमानों को दुख और पश्चाताप के साथ अपने बाप-दादों के घर को वापस लौटना पड़ा ?

(१७) क्या आपको पाकिस्तान मे बसाकर खुशहाल बना देने का वादा करने वाले आपके लीगी सरदार लोग अपने ऐश व इशरत, अपनी रियासत और तिजारत के मजों को छोड़कर पाकिस्तान मे जा बसने के लिए तैयार है ?

(१८) हिदुस्तान और पाकिस्तान की स्थापना हो जाने के पश्चात् गरीब मुसलमानों की हालत में कितना सुधार होगा ?

(१९) पाकिस्तान की चौहद्दियाँ क्या है ? पाकिस्तान में कितने मुल्क, कितने सूबे, कितनी रियासतें होगी। इनका आपसी रास्ता कहाँ से होगा ? वह रास्ता कायम कैसे होगा ? क्या हिन्दुस्तान वाले हिन्दुस्तान के बीच से इन रास्तो को गुजरने देंगे ?

(२०) हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के लिए जो आपने जंग शुरू की है उसमे आपके लीगी सरदार और लीडरों ने लेक्चर-बाजियो के अतिरिक्त कितना हिस्सा लिया है ?

(२१) आपके साथ मिलकर उन्होने कितने मन्दिर तोड़े

हैं ? कितने घर बर्बाद किये हैं ? क्या इस प्रकार के कामों की वे खुलेआम आपको सलाह देते हैं ? जिस बात को वे लोगों के सामने बुरी बतलाते है उसी को करने के लिए आपको वे चुपके से सलाह देते है—इसका मतलब ?

(२२) आपको हिन्दुस्तान में ही बने रहना है ? आपके मौजूदा तौर तरीके ऐसे तो नहीं है जो हिन्दुस्तान के लोगो और सरकार के दिल में आपकी तरफ से बद-गुमानी पैदा कर रहे हों ?

(२३) मौजूदा दंगो से आपको क्या मिला ? स्थायी रूप से आपको क्या मिला जो आप और आपके आल-औलाद की खुशी और खुशहाली का कारण बने ?

(२४) क्या आप समझते हैं कि हिन्दुस्तान मे बसने वाले मुसलमानों का पाकिस्तानी सरकारों द्वारा काम चलेगा ?

(२५) क्या आप जानते है कि भारत या इण्डिया कहे जाने वाले देश की बहुत सी ऐसी बात हैं जिन पर देश के कई टुकड़ों की हँसी-खुशी का सम्मिलित आधार है और इसी लिए इन बातों का केवल सम्मिलित संचालन ही हो सकता है जैसे पश्चिमीय घाटों की हाइड्रो एलेक्ट्रीसिटी या दामोदर घाटी की योजनाएँ। फिर हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी राज्यों की सम्पूर्ण स्वतंत्रता का मतलब ही क्या ? ऐसे ही रेल, तार, जहाज आदि सम्बन्धी हजारों ऐसी बातें हैं जिन पर भिन्न-भिन्न टुकड़ों का मनमानी राज होने से संघर्ष और अराजकता उत्पन्न होगी। ऐसी संघर्ष और अराजकता उत्पन्न करने वाली नीति मे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के मुसलमानों की हालत में कितना सुधार होगा ?

ऐसे ही और भी बहुत से प्रश्न हैं जिनका आपको

आपके मुस्लिम भाइयों को, उत्तर देना होगा और उन सारे उत्तरों को एक साथ रखकर ही हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की शकल तैयार होगी। इस लिए आप में से प्रत्येक का फर्ज है कि उपर्युक्त प्रश्नों का उत्तर प्रत्येक व्यक्ति से फर्द-न-फर्द न, महल्ले वार इकट्ठा करके करके ही कोई सामूहिक निर्णय करें।

—:o:—

हिंदुस्तानी

१७

हम विह्वलतापूर्वक आँखें लगाये हुए रास्ता देख रहे थे कि विश्व का नरमेध समाप्त हो और हमें निजात मिले। दीन, दलित, शोषित और शासित, अपने भूखे-प्यासे, रोगी और चिंतित स्वजनों को छोड़कर, दूर-दराज, जावा के जङ्गलों तथा इटली की खाइयों को हम एक समान अपने खून से भरते जा रहे थे ताकि हमारे देश पर जर्मनी या जापान की खूनी परछाईं न पड़ने पाये। हमें भूलकर भी स्मरण न हुआ कि हम हिन्दू हैं या मुसलमान। दुश्मनों ने हमारी हिन्दुस्तानी शकल को ही पहचाना था; हमें रह-रहकर हिन्दुस्तान की याद आ जाया करती थी। पास से दम तोड़ते हुए साथी को आखिरी दिलासा देकर हम जख्मी-दिलों से धीरे-धीरे कह उठते थे—"भाई मैं जिन्दा रहा तो घर लौटकर तुम्हारे बाल-बच्चों की खबर लूँगा। तुम अब दुनिया की फिकर छोड़ो।" सारी मुसीबतों के बावजूद हमें हँसी-खुशी हिन्दुस्तान लौटने की उम्मीदें घेरे हुए थीं।

देश की दशा दिनों-दिन गिरती जा रही थी। हरे-भरे गाँवों कर हवाई अड्डा बना दिया गया। रत्ती-रत्ती जमीन पर फौजी ताना-बाना फैल गया। विद्युत के प्रकाश से जग-मग

ज्योतिर्मान रहनेवाले भव्य नगरो का चिराग गुल हो गया। कलकत्ता जैसे आलीशान शहरो मे भी विदेशी सैनिको ने जो हमारी ही छाँह में दम लेकर दुश्मनों से लड़ने जाने के लिए टिके हुए थे, हमारे ही घरों में घुसकर हमारी बहन-बेटियों की लाज लूट ली। फिर भी हम घबड़ाये नहीं।

हमारी परेशानियाँ बढ़ती जा रही थीं। हमारे इस कङ्गाल देश की बची-बचायी दौलत भी विदेशो मे जाने लगी; रोटी और धोती की तंगदस्ती से चित्त व्याकुल होने लगा; नाहक नवजवानो का खून होते देखकर हमने आखिर पूछा ही कि यह सब किसके लिए? मजबूर होकर हमे अंग्रेजो से कहना पड़ा कि आप अपने इङ्गलैण्ड को वापस जाइये, हमारे भारत को छोड़ दीजिये, इसे वर्बाद मत कीजिये। अंग्रेजों ने इसे बर्दाश्त नही किया। और हमने भी '४२ की अंग्रेजी बर्बरता का हौसले के साथ सामना किया—कितने घर हिन्दुओं के टूटे, कितने मुसलमानो के? इसका कहीं ठीक-ठीक, अलग-अलग हिसाब है? अलग-अगल हिसाब की सोची ही किसने? वे मालिक थे, हम गुलाम थे, हम देशी थे, वे विदेशीथे, हम हिन्दुस्तानी थे, वे अंग्रेज थे। बस इतना ही हमारे लिए काफी था।

बङ्गाल के नर-कङ्काल ने भरे-पुरे घरों को भी हड़प लिया। गाँव के गाँव वीरान हो गये। कलकत्ते की गलियाँ हमारी लाशों से पट गयीं—इसमे कितने हिन्दू थे, कितने मुसलमान थे? कमबख्त भूख को तो सिर्फ एक ही पहचान थी: हिन्दुस्तानी। हम कीड़े-मकोड़ों की तरह मर-मर कर सड़ने लगे, फिर भी हम मौत से एक-एक करके, स्त्री-बच्चे, बूढ़े-जवान, लड़ते जा रहे थे।

हवा बदली; हमने आशा की कि खोये हुओं को भूल कर अपने उजड़े हुए घरों को हम फिर से बसायेंगे।

जल सेना, थल सेना, नभ सेना, पुलिस—सबने व्यक्त कर दिया कि हम हिन्दुस्तानी हैं, अंग्रेजों के रक्त-शोषक शिकंजों से मुक्त होना चाहते है। जय हिन्द के नारे देश भर में गूँज गये। हमारी उम्मीदों में जोर पैदा हुआ। हम फूले नहीं समाते थे, तेज पाँव रखते हुए आगे बढ़ने लगे।

परंतु अफसोस! बदकिस्मती ने हमारा साथ अभी नहीं छोड़ा था। मरती हुई गुलामी ने एक बार फिर फड़-फड़ाकर हमें पकड़ लिया। और हम अपनी सारी अकल को ही खो बैठे। हमारी आँखों के सामने एक बार फिर अँधेरा छा गया है। हम आज अपनों को ही गैर समझ बैठे हैं। युद्ध के खूनी दलदल और अकाल की घातक परिस्थितियों में खायी हुई कस्मों को भूलकर हम आपस में ही लड़-मरने पर उतर आये हैं। हमारे हारे हुए दुश्मन एक बार फिर सिर उठाकर पूछने लगे हैं: तुम क्या हो? हिन्दुस्तानी हो? पाकिस्तानी हो?

मालूम होता है कि हमारी हिन्दुस्तानियत कहीं खो गयी है।

१८

पिछले अध्यायों को पढ़कर आपने समझ लिया होगा कि पाकिस्तान एक बिल्कुल ना-मुमकिन चीज है। देश को अंग्रेजी घोषणाओं द्वारा टुकड़ों में बाँट कर भले ही हिन्दुस्तान और

पाकिस्तान का नाम दे दिया जाये, पर ये बनावटी बातें बहुत दिन तक नहीं चलने पायेगी। हिन्दुस्तान सदा हिन्दुस्तान ही रहेगा और इसके निवासी भी हिन्दुस्तानी ही रहेंगे। और जब तक हमारी हिन्दुस्तानियत की अखण्ड सत्ता निर्विघ्न रूप से स्थापित नहीं हो जाती, हमारी आजादी की लडाई भी समाप्त नहीं होती। सन '४८ के बाद भी कितने ही और सन् ईस्वी क्यों न बीत जायें हम अपनी हिन्दुस्तानियत के लिए लड़ते जायेंगे। हमें धोखा नहीं खाना चाहिये, अभी हमे बहुत कुर्बानियाँ करनी है।

अब सवाल तो यह होता है कि यदि हमारी हिन्दुस्तानियत का तकाजा इतना बड़ा है तो इस समय हम उसकी नियति (मियार) से इतने नीचे क्योंकर जा पड़े हैं?

अन्तरिम सरकार के भूतपूर्व सदस्य सैयद अलीजहीर ने २५-४-४७ को असोशियटेड प्रेस को इस सम्बन्ध मे बड़ा ही महत्व पूर्ण वक्तव्व देते हुए सारी परिस्थिति का एक मर्मातक चित्र खीचा है। मैं उनके विचारो से पूर्णतः सहमत हूँ। नीचे की कुछ पंक्तियों मे उस वक्तव्य का पर्याप्त अंश मिल जायगा।

भारत के वर्तमान दंगे और रक्त-पात केवल साम्प्रदायिक मत-भेदों के कारण है, सो बात नही। इसके पीछे तीन-चार बहुत बड़ी शक्तियाँ कार्य कर रही है:—

(१) सबसे पहले तो अन्न, वस्त्र, तथा जीवन की अन्य अनेको छोटी-बड़ी चीजों की कमी अथवा अभाव के कारण सारे देश में विचित्र उलझने पैदा हो गयी है। कदम-कदम पर कन्ट्रोलों और सरकारी भ्रष्टाचारों ने लोगों के अभावपूर्ण जीवन को और भी असह्य बना दिया है। लोग जीवन से ऊब से रहे है।

मलाई दफ्तरों या सरकारी अफसरों के आगे-पीछे धक्के खाते रहने वाले असंतुष्ट प्राणियों की संख्या और यातनाएँ, दिनो-दिन बढ़ती जा रही है। लोग, विशेषतः लीगी सरदारों को छोड़कर, मुसलमान, इन उत्पीड़क परिस्थितियों से बिल्कुल ही ऊब गये है। प्रांतो मे जनता के ही प्रतिनिधियों का शासन चल रहा है, केन्द्र में भी राष्ट्रीय सरकार है और मजा यह कि हमारी मुसीबतें घटने के बजाय बढ़ती ही जा रही है। परिणामतः राजकीय कार्यों से जनता का विश्वास उठ गया है, वैधानिक उपायों में उनको भरोसा नहीं रहा। जिसकी जहाँ सींग समाती है, वहीं घुसेड़ देने मे उसे कोई सङ्कोच नहीं होता। और वर्तमान दुर्घटनाओं को उसी नियति-हीन एवं अराजक मनोवृत्ति से बहुत बड़ी प्रेरणा मिल रही है। समाज के निखट्टू एवं दुराचारियों को लूट-खसूट के लिए प्रोत्साहन मिल रहा है।

(२) गत महायुद्ध ने विश्व के आर्थिक ढाँचे को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। उन्हीं अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियो के दबाव मे पड़कर भारतीय-समाज की भी गति भंग हो गयी है। सामाजिक वैषम्य एक अमिट विस्तार को प्राप्त हो रहा है। स्वार्थपरता, घुसखोरी, भ्रष्टाचार, ईर्ष्या, द्वेष, युद्ध और संघर्ष की भावनाएँ प्रबल हो उठी हैं। धींगा-मुश्ती का साम्राज्य छाया हुआ है। यहीं लीगी या कम्युनिस्ट बहकाओं को प्रेरणा मिल रही है।

(३) युद्ध समाप्त हो जाने के कारण हजारों-लाखों सैनिक छोड़ गये हैं। अब तक ये ऊँचे दर्जे का जीवन बिता रहे थे। चाय, बिस्कुट, मक्खन, टोस्ट, साबुन, तौलिया, रेडियो, मोटर लारी और वेश्याएँ—इच्छानुसार सब मिल जाया करता था।

आज ये लोग बेकार हो गये हैं। अतः कुछ तो रोजी की आवश्यकता, कुछ मजों की चाट—रक्त-पात और विध्वंस मे सिद्धस्त लोगों का दल अपनी सारी विनाशक योग्यता का इन दंगों में उपयोग करने लगा है। इन्होंने जर्मन और जापानी जुल्मों का साक्षात किया है, भारत में आकर इन्होंने उसे पाशविकता की हद से भी आगे बढ़ा दिया है, क्योंकि इसमें रोजी और मजे की पूर्ति के साथ ही "मजहब" की सिद्धि के भी मंत्र भर दिये गये है।

(४) एक महत्व-पूर्ण कारण यह है कि लोग वर्तमान और भविष्य के सम्बन्ध मे अनिश्चित से हो गये हैं। उन्हें सरकारें बदलती हुई नजर आ रही है, सामाजिक ढाँचे टूटते हुए दिखलायी पड़ रहे है। एक विचित्र घोल-घपला, एक विचित्र भय ने उन्हें घेर लिया है। परिणामतः लोग संज्ञा-हीन (Confused) होकर अपने चारों ओर हाथ मारने लगे हैं।

(५) जहीर साहेब का कहना है कि इन सबसे अधिक खतरनाक बात तो यह है कि कट्टर दकियानूस अंग्रेज अब भी देश की छाती पर बैठे हुए है। सरदार पटेल ने अभी अभी अपने एक महत्व-पूर्ण वक्तव्य मे कहा है कि सारे रोग की जड़ है अंग्रेजों का शासन-सूत्र अर्थात् हुकूमत की लगाम को पकड़ कर निर्दल नेता बन जाना। मै सरदार पटेल के वक्तव्य के बहुत पूर्व, इस पुस्तक के प्रारम्भ मे, लिख चुका हूँ कि अपनी निष्पक्षता की ढोल पीटते हुए सरकार हमे शान्ति का पाठ पढ़ाती है, परन्तु हम कमबख्त ऐसे हैं कि लड़ने से बाज ही नहीं आते।

वास्तव मे बात ऐसी ही है। यदि अंग्रेज लोग सचमुच

ईमानदार हैं तो उन्हें चाहिये कि इस निष्पक्षता के ढोंग को त्याग कर एक ओर हो जायें। जो कुछ उन्हें कहना या करना हो कर डालें, व्यर्थ के पचड़ों को छोड़ कर उन्हें अपना अन्तिम निर्णय देना ही होगा। "आज जिना से नवीं मुलाकात २॥ घंटे," "आज जिना से दसवीं मुलाकात ३॥ घंटे"। यह सब है क्या ? इन मक्कारियों को छोड़ कर उन्हे एक रास्ता अख्तियार कर लेना चाहिये, एक फैसला कर देना चाहिये। यदि उनमे इसकी हिम्मत नहीं है तो उन्हें मैदान से बिल्कुल अलग हो जाना चाहिये। हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे को समझ कर खुद फैसला कर लेंगे जब तक शक्ति अंग्रेजों के हाथ में रहेगी और वे स्वयं कोई मार्ग निर्धारित नहीं करेंगे, बल्कि उस शक्ति का हमें अलग रखने में प्रयोग करेंगे, तो ये दोनों कभी एक नहीं हो सकते। शक्ति को अपने हाथ में रखकर अंग्रेजों का निर्दल नेता बनना ही शरारत की जड़ है।

इसी बात को लक्ष्य करके गाँधी जी ने साफ-माफ कह दिया है कि १२-१३ महीने (जून '४८ तक) की मियाद तो बहुत लम्बी है, अंग्रेजों का यहाँ एक-एक दिन शरारत से भरा हुआ है।

खैर, मुख्य बात यह है कि परिस्थितियों ने विस्फोटक रूप धारण कर लिया है और इनका सफलता पूर्वक शमन करने के लिए हमें इनके मौलिक कारण को समझते हुए कार्य करना होगा।

मैं कह चुका हूँ कि भारत का राजनीतिक वातावरण इस समय अत्यंत तरल है, दशाएँ सुबह-शाम बदल रही हैं। जनता को दिशा-भ्रम हो गया है। उचित-अनुचित का निर्णय करना कठिन हो रहा है। भारत प्रकृतितः अविभाज्य है, इसलिए

पाकिस्तान के अप्राकृतिक प्रस्ताव को कोई भी सच्चा हिन्दुस्तानी स्वीकार नहीं कर सकता। कैबिनेट मिशन के १६ मई '४६ के प्रस्तावों को स्वीकर करके कॉंग्रेस ने एक प्रकार से पाकिस्तानी मंसूबों को प्रोत्साहन दे दिया है। परन्तु साथ-साथ कॉंग्रेस ने यह भी कहा है कि यदि पाकिस्तान बनाया गया अर्थात् भारत का जिना साहेब की मांगो के अनुसार धार्मिक आधार पर बटवारा किया गया तो पंजाब और बङ्गाल को भी उसी आधार पर बॉट देना होगा। भले ही ऐसा निर्णय देने के लिए परिस्थितियो ने ही कॉंग्रेस को विवश किया है, भले ही कॉंग्रेस का निर्णय शर्तों के साथ बँधा हुआ है, और यह भी ठीक हो सकता है कि इस प्रकार के पूर्ण बटवारे से ही भारत की अक्षुण्ण एकता पुनः स्थापित होगी फिर भी भारत के बटवारे का नाम लेना ही अप्राकृतिक बात है और इसी लिए शरत बाबू ने कॉंग्रेस से असंतुष्ट होकर कार्य-समिति से पद त्याग कर दिया। जमायतुल-उलमा के लखनऊ वाले अधिवेशन मे कॉंगेस की इसी बात को लेकर "अराष्ट्रीय" तक कह डाला गया है। फारवर्ड ब्लाक ने भी ऐसा ही कहा है। हिन्दुस्तान और हिन्दुतानी के समान ही पाकिस्तान और पाकिस्तानी चेत्र मे भी घोल-घपला चल रहा है: जिना साहेब के दो-राष्ट्र वाले सिद्धान्त के विरुद्ध बङ्गाल प्रांत के लीगी सरदार मियॉ सुहरवर्दी ने बङ्गाल को हिन्दू-मुसलमानों का एक समान स्वतन्त्र राज बना देने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी है। बङ्गाल की हिन्दू-जनता एक स्वर से कह रही है कि बङ्गाल को विभक्त करके हिन्दुओं का केन्द्राधीन एक स्वतंत्र प्रांत बना दिया जाय। जिना साहेब कहते है कि यदि पाकिस्तान उन्हीं की मॉगों

के अनुसार स्वीकार नहीं किया गया और यदि बङ्गाल और पंजाब को विभक्त कर दिया गया तो अन्य प्रांतों को भी इसी प्रकार बाँटना होगा। उनका कहना यह है कि, उदाहरणतः, संयुक्त प्रांत के मेरठ, बरेली, मुरादाबाद आदि जिलों को मुस्लिम बहुमत क्षेत्र होने के कारण मुसलमानों का एक नन्हा-सा अलग प्रांत बना देना होगा। उसी प्रकार आसाम से सिलहट और साचर को निकाल कर बङ्गाल में मिला देना होगा।

ऐसी दशा में एक साधारण मनुष्य का संज्ञा-हीन हो जाना आश्चर्य-जनक नहीं हो सकता।

मैं लिख चुका हूँ, जैसा कि राजेन्द्र बाबू ने अभी ही श्री-राघवाचार्य्य के मूर्ति उद्घाटन समारोह पर कहा है, भारत की अपनी एक अखण्ड भौगोलिक सत्ता है, इसकी अपनी आर्थिक, सामाजिक, एवं सांस्कृतिक विशेषताएँ हैं। अतः यह एक देश है और एक ही रहेगा। इसे कोई बाँट नहीं सकता। आज भले ही अंग्रेज लोग इसे काट-काट कर टुकड़े कर दें, और कांग्रेस भी हिन्दुस्तान से खुराफात की जड़ अर्थात् अंग्रेजों को पूर्णतः निर्मूल करने के लिए, फिलहाल इस बँटवारे को मान ले, परंतु भारत प्रकृतितः अविभाज्य है और इसे अविभाज्य रखना होगा। बँट जाने पर भी इसे पुनः एक बनाना होगा। हमारी सच्ची स्वतंत्रता की वही चरम सीमा है और उसकी सफल सिद्धि के लिए हमें अंत तक लड़ते जाना होगा। हमारी सारी कुर्बानियों का वही एक मात्र लक्ष्य है। आज या जब तक भी आवश्यक हो, जितना भी आवश्यक हो, हमें सहर्ष बलि देनी होगी। आज हमारे सामने जो राजनीतिक चालें चली जा रही हैं वे हमारी आजादी की

लड़ाई पर केवल पर्दा डाल देनें की कुचेष्टाएँ मात्र हैं। इन घोल-घपलों में उलझ कर हमें स्वातंत्र्य पथ से विरत हो जाने की आवश्यकता नहीं।

परंतु यह स्मरण रखने की आवश्यकता है कि हमारा प्रत्येक पग खतरे से भरा हुआ है। प्रतिक्रियावादी आजादी के विरुद्ध जी खोल कर अपनी अंतिम लड़ाई लड़ लेना चाहते है। देशी और विदेशी—सारी प्रतिक्रियावादी शक्तियाँ एक साथ मिलकर हमारे विरुद्ध खड़ी हो रही है। पतोन्मुख ब्रिटिश राज की असमर्थता का लाभ लेकर अनेको दल और अनेको वर्ग अधिकार प्राप्त कर लेने की तरकीबें कर रहे है। इन सबसे हमें मोर्चा लेना है, इनके बीच से ही हमे अपना रास्ता निकालना है। हमारे चारों ओर खाइयाँ हैं, शत्रु सिर उठाये हुए खड़े है। इन सबके सिर पर पाँव रख कर हमें पूर्ण स्वतंत्रता की ओर बढ़ जाना है और सम्भवतः, यदि अंग्रेजों ने भारत छोड़ने मे हीले-हवाले किये तो, एक बार फिर हमें लोहा लेना पड़े। इस लिए हमे धोखा नहीं खाना चाहिये; अपनी शक्ति को इस प्रकार काम में लेना चाहिये कि वक्त आने पर फिर भी हमारे लिए उसका स्रोत पूर्ववत बहता हुआ मिले।

इस समय अपार धीरज और एक अडिग संघटन की आवश्यकता है। सच्चे नेतृत्व की उससे भी अधिक आवश्यकता है।

१६

मुगल साम्राज्य क्षीण और पतित हो रहा था। जगह-जगह नव्वाब और सूबेदार दिल्ली की हुकूमत से स्वतन्त्र होकर अपनी सत्ता कायम करते जा रहे थे। शासन सूत्र अस्त-व्यस्त हो चला था। चारो ओर मनमानी और अराजकता छायी हुई थी। गरीवी और लूट-पाट, जवरदस्ती और धींगा-मुश्ती के बीच पड़ी हुई जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी।

आज भारत की ठीक वही दशा है। ब्रिटिश साम्राज्य पतित हो रहा है। दिल्ली की सत्ता डोल गयी है। सीमा प्रान्त के गवर्नर और 'पोलिटिकल डिपार्टमेण्ट' अंग्रेजों की घोषित नीति के विरुद्ध ऐसी देश-द्रोही कार्य्यवाहियाँ कर रहे हैं मानो उन पर वाइसराय या अन्तरिम सरकार का कोई केन्द्रीय शासन है ही नहीं। बङ्गाल के गवर्नर 'वाल डान्स' का मजा ले रहे हैं जब कि कलकत्ते और पूर्वीय बङ्गाल में धन-जन को पशुता पूर्वक विनष्ट किया जा रहा है। भारत की अखण्ड सत्ता को नष्ट करके पाकिस्तान का जबरदस्ती एक स्वतंत्र राज स्थापित कर देने की चालें चली जा रही हैं। बङ्गाल की प्रान्तीय सरकार आसाम प्रान्त पर आक्रमण कर रही है, परन्तु इसमें हस्तक्षेप करनेवाला कोई नजर नहीं आ रहा है। आसाम और सीमा प्रान्त को जबरदस्ती पाकिस्तानी घेरे में जकड़ने की चेष्टा हो रही है, परन्तु ये दोनों इस घातक घेरे के बाहर ही रहना चाहते हैं। निजाम रियासत में दक्षिणीय पाकिस्तान कायम करने की चेष्टा हो रही है। बङ्गाल के हिन्दू और पंजाब के सिक्ख लीगी सरकारों से उब

कर अब बिल्कुल स्वतन्त्र हो जाना चाहते है—पंजाब और बङ्गाल प्रान्तों को तोड़ कर दो के चार प्रान्त बनाने की माँग पेश कर दी गयी है। दूसरी ओर बङ्गाल को हिन्दुस्तान और पाकिस्तान से भी अलग, एक स्वतंत्र राज बना देने की बात हो रही है। सिंध भी पंजाबी प्रभुत्व के अन्तर्गत पाकिस्तानी गुट में शामिल नही होना चाहता। सिन्ध को एक बिल्कुल स्वतन्त्र राज घोपित कर देने की तैयारियाँ हो रही हैं। और अब सीमा प्रान्त को भी स्वतन्त्र राज बना देने को माँग पेश कर दी गयी है। देशी राज्यो मे भी कुछ हिन्दुस्तान के साथ, कुछ पाकिस्तान के साथ और कुछ बिल्कुल स्वतन्त्र हो जाना चाहते है। ब्रिटिश ब्लोचिस्तान, कलात, मनीपुर—सब स्वतन्त्र होना चाहते है। कोई कहता है हम हिन्दुस्तान मे रहेंगे, कोई कहता है हम पाकिस्तान मे रहेंगे, कोई कहता है हम स्वतन्त्र होगे। और इनमे से कई भारतीय सत्ता से बिल्कुल पृथक् राष्ट्र संघ के स्वतन्त्र सदस्य बनना चाहते है। चारो ओर 'नैशनल गार्ड्स' के रूप मे लीग की सशस्त्र सेना का निर्माण हो रहा है। पंजाब की व्यापक कृषि और व्यापार नष्ट-भ्रष्ट हो चुका है। 'रोजगार-हाल' ठप हो रहे है। हमारा जीवन और हमारी इज्जत, दोनों खतरे मे हैं। पुलिस और सेना की सत्ता निर्मूल सी प्रतीत हो रही है। नयी-नयी संस्थाएँ, नये-नये दल, शासन और शक्ति को हथियाने के लिए आगे बढ़ रहे है।

ऐसी दशा में हमारा परम कर्तव्य यह है कि हम एक सुदृढ़ संघटन और एक सुनिश्चित प्रोग्राम लेकर कार्य करें अन्यथा हम बँटवारो का विवेचन ही करते रहेंगे और सारा खेल खतम

हो जायगा। मै बार-बार कह चुका हूँ कि हमें भारत की एकता का लक्ष्य स्पष्ट रूप से सामने रखकर आगे बढ़ना होगा। जब हमारा लक्ष्य हमारे सामने स्पष्ट है तो हमें वर्तमान परिस्थितियों से घबड़ाने की भी कोई असाधारण आवश्यकता नहीं रह जाती। भले ही आज देश के टुकड़े कर दिये जाये, भले ही हिन्दुस्तान और स्वतन्त्र राज्य कायम हो जायें, परन्तु, अन्ततः हमें एकता स्थापित करनी ही होगी और **वह एकता ही हमारी स्वतन्त्रता होगी।**

इसलिए हमारी लड़ाई ब्रिटिश सरकार की घोषणा अथवा लीग और कांग्रेस के वर्तमान समझौतो से ही समाप्त हो जायगी, सो बात नहीं। हमने आज तक जो इतने प्राण गँवाये है क्या इसी लिए? क्या हमने जो कुर्बानियाँ की है इसी लिए कि भारत को काट-काट कर छिन्न-भिन्न कर दिया जाये? हम उन वीरों की आत्माओं को क्या उत्तर देंगे जिन्होने भारत की एक स्वतन्त्र सत्ता के लिए हँसते हुए फाँसी के फंदों में अपना गला लटका दिया था? हम उन माँ-बहनों को क्या मुँह दिखलायेंगे जिन्होंने देश की स्वतन्त्रता के लिए अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया? क्या हम उन्हें स्वतन्त्रता के नाम पर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के नकली बबुए दिखला कर धोखा देंगे?

हर्गिज नहीं, हो नही सकता। हम मर मिटेंगे, जो मर गये उनके लिए अपने बच्चो को भी मर मिटने की सलाह देते जायेंगे और कहते जायेगे कि हिन्दुस्तान को आजाद और एक करके ही दम लेना। यही हमारी परम्परा रही है और इसी को चरितार्थ करना हमारा परम कर्तव्य होगा।

परंतु इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए आज हमें अपार शक्ति

और एक सुदृढ़ संघटन की आवश्यकता है। एक ऐसे संघटन की आवश्यकता है जो समस्त भारत को एक सूत्र मे बाँधकर आगे बढ़ा सके। एक ऐसे संघटन की आवश्यकता है जिसमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, सिक्ख, पारसी, बौद्ध या जैन—सभी एक साथ खड़े होकर भारत की स्वतंत्रता, भारत की एकता, के लिए लड़ सकें। एक ऐसे संघटन की आवश्यकता है जिसे देश का बच्चा-बच्चा अपनी ही संस्था समझे, जिससे छोटे-बड़े, अमीर-गरीब सभी पथ प्रदर्शन प्राप्त कर सके, शक्ति और संरक्षण का लाभ ले सके।

और आज, इस दुर्दिन मे भी, हमारी कांग्रेस हमारे अभिलाषाओं की तृप्ति के लिए, हमारे उद्देश्यों की पूर्ति के लिए, हमारे नेत्रों के सम्मुख विद्यमान है। निस्संदेह परिस्थितियों के प्रभाव ने इसमें दोष उत्पन्न कर दिए है, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि कांग्रेस हमारे पवित्र संकल्पो के लिए बिल्कुल कुपात्र बन गयी है। कांग्रेस इस समय कुछ भी हो, वह अब भी भारतीयता की प्रतीक है। उसी ने हमे लड़ना सिखाया है, और उसी की छत्र छाया मे खड़े होकर हम लड़ते जायेगे, उस दिन तक, उस क्षण तक लड़ते जायेगे, जब तक हम भारत की अखण्ड सत्ता को कायम नहीं कर लेंगे।

कांग्रेस मे कितनी हस्तियाँ आयीं और कितनी हस्तियाँ गयीं। जो इसकी धारा के खिलाफ पड़ा उसे टूट-फूट कर अलग हो जाना पड़ा। एक से एक महान व्यक्तित्व को कांग्रेस ने यों हीं छोड़ दिया मानो वे कुछ थे ही नहीं। उसी प्रकार हम आगे भी बढ़ेंगे। जवाहर या राजेन्द्र बाबू ही क्यो न हो, यदि वे

हमारे लक्ष्य के प्रतिकूल खड़े होंगे तो हम उन्हें भी छोड़ कर आगे बढ़ जायेंगे। हमने इतना सब कुछ गँवाया है केवल अपने नेताओं को खुश करने के लिए नहीं। कांग्रेस का अस्तित्व व्यक्तियों के उत्थान-पतन से नहीं, आदर्श की शुद्धता से ही स्थितिभूत हुआ है। यही कारण है कि आज कुछ कांग्रेस जनों को पथ च्युत देखकर हम घबड़ाते नहीं।

कांग्रेस अब भी सबल है, पथ भ्रष्ट नहीं हुई है। इस समय हमें उसी से सच्चा पथ-प्रदर्शन मिल सकता है। हमें बिल्कुल गलती न करनी चाहिये कि कांग्रेस की नीति गलत हो गयी है। जो लोग ऐसी बातें करते हैं उनसे पूछिये कि फिर सही नीति क्या है? जब तक वे सही नीति निर्धारित नहीं करते उन्हें किसी नीति को गलत कहने का भी अधिकार नहीं है।

सच है हमें इस समय कांग्रेस के रवइये से संतोष नहीं हो रहा है परन्तु यह असंतोष है क्यों? सबसे पहले तो हमें अपने दिल को ही टटोल कर देखना होगा कि आखिर हम चाहते क्या हैं? यही न कि भारत स्वतंत्र और अखण्ड हो। गांधी जी बार-बार कह रहे हैं कि पाकिस्तान अनिवार्य नहीं। राजेन्द्र बाबू अब भी कहते जा रहे हैं कि भारत एक है और एक रहेगा, पाकिस्तान बना भी तो वह टिकेगा नहीं। यही तो हमारा लक्ष्य है। फिर कांग्रेस को हम पथभ्रष्ट क्योंकर मान लें? राजेन्द्र बाबू ने साफ साफ कह दिया है कि यदि हम फिलहाल लीग और अंग्रेजों की कुछ बात मान नहीं लेते तो दशा और भी भयानक हो जायेगी। आप इस "फिलहाल" शब्द को समझिये। कांग्रेस उद्देश्य च्युत नहीं हुई है, वह केवल आकाश में ऊपर उड़नेवाले

पक्षी के समान उड़ने के पहले दब रही है। "फिलहाल" वह जो कुछ कर रही है वह केवल विदेशी सत्ता से गला छुड़ाने के लिए ही है। कांग्रेस कहती है अंग्रेजों से कि बाबा तुम्हें जो कुछ करना है, करके टलो तो। आखिर यही नीति समाजवादियों की भी तो हैं। वे भी तो यही कहते है कि सारी खुराफात की जड़ इन अंग्रेजों से पहले किसी प्रकार पिण्ड छुड़ाया जाय—हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, वे भी कुछ बना कर हटे। अक्सर लोग यही कहते है कि अंग्रेज लोग यों नहीं हटेंगे। नहीं हटेंगे तो करेंगे क्या ? मान लिया नहीं हटते तो क्या हमने भी लड़ने से कसम खा ली है ? वक्त आयेगा तो हम फिर लड़ कर इन्हें हटायेंगे। अब तक लड़ कर ही हम उन्हें यहाँ तक लाये है। वक्त आने पर हम उन्हें यहाँ से भी आगे ढकेल देंगे। वक्त आने तो दीजिये। फिलहाल तो अंग्रेज अपनी सारी चाल और अड़ंगेबाजियों के बावजूद कमजोर ही पड़ते जा रहे हैं। '४२ के बाद भी हम ऐसी ही निराशाजनक मनोवृत्ति धारण कर बैठे थे, परंतु कांग्रेस फिर उठी और आज '४२ की स्थिति से बहुत आगे है। उसी प्रकार कांग्रेस फिर वक्त आने पर आगे बढ़ेगी। यदि आप इस बात को नहीं मानते, यदि आप अपने ही पिछले इतिहास से आँखें फेरे हुए है, तो आप ही कहें कि कांग्रेस को वर्तमान परिस्थितियों मे क्या करना चाहिये ? क्या हिन्दू सभा वाले, क्या समाजवादी दल, क्या जमाग्रतुल-उलमा—कोई भी यह कहने को तैयार है कि कांग्रेस प्रान्तीय और केन्द्रीय शासन से अलग होकर सत्याग्रह या सशस्त्र विद्रोह प्रारम्भ कर दे ? सब से पहले तो यह कि विद्रोह किसके विरुद्ध ? अंग्रेज लोग विस्तर

बाँध रहे हैं, फिर लड़ना किससे, बगावत किसके खिलाफ ? भले ही अंग्रेज लोग अड़ंगेबाजियाँ कर रहे हैं, परंतु अब वे पुराने ढंग से हुकूमत नहीं कर रहे हैं। आपको ही उल्लू बना कर आपस में ही लड़ा रहे हैं। लड़ना ही होगा तो आपको अपने ही आपसे लड़ना होगा। और वक्त आया तो हम लड़ेंगे भी, परंतु अभी तो उस नयी लड़ाई के लिए हमें नयी तैयारियाँ करनी हैं।

बस, बात यही है। हम दलीलें बहुत कर रहे हैं, नुक्ता-चीनी में भी बाजी मार ले जाना चाहते हैं, परंतु काम कुछ नहीं हो रहा है, भविष्य के लिए हम रत्ती भर भी तैयारी नहीं कर रहे हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि कांग्रेस की राजनीति में उसके मौलिक उद्देश्यों में कोई दोष नहीं आया है। फिर भी हमें कुछ कांग्रेसजनों के व्यवहार से असंतोष हो रहा है। क्यों ? क्योंकि ये मिलकियत मिलने के पहले ही मालिक बन बैठे हैं, ये यानी ये कांग्रेसवाले। मैं कई नेताओं को देखता हूँ जो कांग्रेसी सरकार होने के कारण अपने को एक प्रकार का नया हाकिम मान बैठे हैं। उनके यहाँ रोज दरबार लगता है, आमद-रफ्त का बाजार गर्म रहता है। छोटे-बड़े कांग्रेस कार्यकर्ताओं को भी मैं पुलिस और अफसर बना हुआ देख रहा हूँ, पुलिस और अफसर भी उसी पुराने ढंग के, घुसखोरी और धौंसबाजी के लिए। मैं देख रहा हूँ कि कई कांग्रेसवाले सरकारी पदों या मदों से फायदा उठाने के लिए कुत्तों के समान आपस में ही लड़ रहे हैं। दल के अन्दर दल बन रहे हैं। वह कौनसा कुकृत्य है जो आज ये कांग्रेसवाले नहीं कर रहे हैं ? पुलिस की मुखबिरी करने वाले

इन कांग्रेसियों को मै जानता हूँ। मै अच्छी तरह जानता हूँ उन खद्दर-धारी पदाधिकारियों को जो तुच्छ से तुच्छ बात के लिए सरासर जालसाजी पर तुले हुए है, धोखा देही मे शामिल है, पुलिस को घूस दे रहे है, दिला रहे हैं। आज भी देश मे चोरबाजार और रक्त शोषण गर्म है। इनमे डुबकी लगानेवाले छोटे-बड़े सभी कांग्रेसजनो को मै भलीभाँति जानता हूँ। और ये कांग्रेसवाले ही आज कह रहे है कि कांग्रेस की नीति गलत है।

वास्तव मे कांग्रेस की नीति नहीं कांग्रेस के कार्यकर्ता ही भ्रष्ट हो गये हैं। क्यो ? पहले तो यह कि आज कई कांगेस वाले उन गोरों और अधगोरों के समान बन गये हैं जो केवल सुफेद चमड़ा और ईसाई मजहब होने के कारण अपने को हिन्दुस्तान का हाकिम समझा करते थे। आज शासन कांग्रेस के हाथ मे है और कांग्रेस मजहब का दम भरनेवाले कुछ खद्दरधारी लोग अपने को हिन्दुस्तान का हाकिम मान बैठे है। ये लोग खुद गुमराह हैं और दूसरो को भी गुमराह कर रहे है। दूसरी बात यह है कि कांग्रेस अब राज-यंत्र को लेकर प्रजा के वास्तविक उद्धार पर आ बढ़ी है। परिणामतः जमीदारी के गुलछर्रे उड़ाने वाले खद्दरधारी कांग्रेसजनो को बुरा लग रहा है और वे कांग्रेस को बुरा बताकर अन्दर-अन्दर से ही कांग्रेस की जड़ को खोद रहे है। बाहर से अछूतोद्धार की डींग मारनेवाले जनेऊधारी कांग्रेसियों को यह गवारा नही हो रहा है कि हरि-जनों को उनकी बराबरी में खड़ा कर दिया जाय। वे नहीं चाहते कि कांग्रेस 'मन्दिर प्रवेश बिल' आदि तरीकों से समाज का समीकरण करे।

इन गुमराह लोगों ने ही सबसे बड़ा घोल-घपला उत्पन्न कर रखा है। हिन्दुस्तान की कसम खाने वाले ये कांग्रेसी ही हमारी हिन्दुस्तानियत के सबसे बड़े शत्रु हो रहे है। ये लोग अपनी कमजोरी को छिपाने के लिए हिन्दू सभा, जमींदार वर्ग, चोर बाजार वाले, नफाखोर और पूँजीपतियों के हथियार लेकर आगे आ रहें है और काना-फूसी कर रहे है कि कांग्रेस हिन्दुओं की शत्रु है, ये लोग कह रहे है कि कांग्रेस मुसलमानों को अनुचित प्रोत्साहन दे रही है।

मै पूछता हूँ कि क्या कांग्रेस मुसलमानों को छोड़ दे ? फिर तो आप वही जिना की "दो राष्ट्र" वाली पाकिस्तानी नीति पर आ जाते है। मैं पूछता हूँ कि क्या कांग्रेस सिक्ख, ईसाई, पारसी—सबको छोड़ कर अलग हो जाय ? हो नहीं सकता। कांग्रेस किसी एक जाति, किसी एक सम्प्रदाय की चीज नहीं। वह शुद्ध राष्ट्रीय संस्था है, उसे सब के हितों का, सब की हँसी-खुशी का ख्याल रखना ही होगा। भले ही कांग्रेस में एक भी हिन्दू न रहे—भले ही कांग्रेस में एक भी मुसलमान न रहे, कांग्रेस को अन्त तक हिन्दुस्तान मात्र के लिए हिन्दू-मुसलमानों का एक समान, अपने ही दो बच्चों के समान, ख्याल रखना होगा। कांग्रेस उन मुसलमानों की मृत आत्माओं के प्रति कभी विश्वासघात नहीं कर सकती जिन्होंने केवल कांग्रेस के लिए, केवल कांग्रेस के नाम पर, अपना धन, जन, अपना प्राण—सब उत्सर्ग कर दिया। यदि कांग्रेस ऐसा करती है तो वह कांग्रेस नहीं, वह एक हिन्दुस्तान और एक हिन्दुस्तानियत की पुजारिन नहीं, कोई दूसरी ही चीज होगी।

मै उन लोगो को आगाह कर देना चाहता हूँ जो यह सोच बैठे है कि कांग्रेस हिन्दू-मुसलानों की हवा मे उखड़ जायगी। इसकी जड़ को हमने अपने खून से सींच-सींच कर पाताल तक पहुँचा दिया है। वह सहज ही उखड़ नही सकती। इसलिए बेहतर है कि हमारे भूले हुए भाई सचेत हो जाये ताकि उन्हें आगे चलकर निराशा और आत्मग्लानि न हो। उन्हें आँखें खोलकर देखना चाहिये कि अभी हाल मे दो स्थानों पर चुनाव हुआ है—बलिया मे और आसाम मे। बलिया मे बिहार का हिन्दू प्रभाव कार्य कर रहा था। परन्तु हिन्दू सभा के विरुद्ध कांग्रेस उम्मीदवार तीन गुने वोट से चुना गया है। आसाम मे लीगी प्रभाव कार्य कर रहा था। लीग ने आठ स्थानो पर चुनाव लड़ा। उनमे से लीग के सालारे-सूबा को लेकर सात स्थानों मे करारी हार खानी पड़ी है। आप समझते है इसका मतलब? मतलब यही है कि कांग्रेस हिन्दुस्तान की प्राण-वायु है, उसे जनता त्याग नही सकती और इसलिए अच्छा होगा कि हम अपने दुष्प्रचारों को छोड़कर, अपनी गलत नुकताचीनियो को छोड़कर अपने आपको सुधार ले, फिर कांग्रेस के सारे दोष अपने आप दूर हो जायेंगे। यदि आप अपने को सुधार कर सही रवइया नही अख्तियार करते तो कांग्रेस आपको छोड़कर आगे बढ़ जायगी। देश को एक सुदृढ़ राष्ट्रीय संघटन की इस समय सख्त जरूरत है जो हिन्दू-मुसलमानों की विभाजक भावनाओ से अछूता रहकर, अंग्रेजी या लीगी, किसी भी देश-द्रोही शक्ति को कुचलते हुए सारे देश को स्वतन्त्र भारत का फल प्रदान कर सके। और इसके लिए कांग्रेस ही एक मात्र समर्थ संस्था है।

कांग्रेस हिन्दू और मुसलमान, दोनों की एक समान अपनी संस्था है। और-जो शुद्ध हिन्दुस्तानियत के जामे में आयेगा, हिन्दू हो या मुसलमान, वही कांग्रेस के साथ चल सकता है। अव्वल तो हमे सारी बात को शुद्ध हिन्दुस्तानी दृष्टिकोण से ही देखना चाहिये, हिन्दू और मुसलमान के अलग-अलग पैमाने से नहीं। परन्तु यदि कही कुछ छोटी-मोटी बातो में विरोधाभास उत्पन्न भी होता हे तो हमें यह देखना होगा कि हमारी मुख्य—एक स्वतन्त्र भारत, एक आजाद हिन्दुस्तान की लड़ाई वाली—बड़ी बात से उसका कहाँ तक सम्बन्ध है। यदि कोई विशेष महत्व नहीं रखती तो हमे छोटी-छोटी बातों को छोड़कर उस बड़ी बात, उस एक हिन्दुस्तान की बात पर नजर रखकर ही आगे बढ़ते जाना होगा। हमें इन गलत प्रचारों पर कान नहीं देना चाहिये कि किदवई साहेब मुसलमान हैं और इसलिए अन्दर ही अन्दर मुसलमानों को भरती करके अपना पाया मजबूत कर रहे हैं, मुस्लिम लीगियों के साथ हमदर्दी रखते हैं। आपको यह समझना चाहिये कि इस समय कांग्रेस लीग की ही नहीं सारी संघटित शक्तियो के विरुद्ध खड़ी है; कितने 'ही ढुलमुल-यकीन मुस्लिम नेता और वे नेता जो अपनी हस्ती रखते थे, कांग्रेस से अलग होकर लीग मे जा मिले हैं। यदि किदवई साहेब की भी वही बात हुई तो उन्हें भी अधिक से अधिक कांग्रेस को छोड़ कर लीग में शामिल हो जाना होगा और कांग्रेस भी लीगियों की संख्या १०० जा के बजाय १०१ मान लेगी, परन्तु कांग्रेस की शक्ति में कोई कमी नहीं आ सकती। मेरा मतलब यह कि हमें इन तुच्छ बातों पर कान न देकर अपने मुख्य लक्ष्य से च्युत

नहीं होना है। आज ऐसी ही बहुत सी कानाफूसियो को इस गर्ज से विस्तार दिया जा रहा है कि कांग्रेस वालो को पतित करके कांग्रेस की ताकत को तोड़ दिया जाय। हमे दुश्मनो की इन हरकतो से होशियार रहना चाहिये।

उधर मुसलमानो का भी फर्ज है कि कांग्रेस के साथ रह कर, शुद्ध हिन्दुस्तानियत के लिए ही जिये-मरे। यदि वे ऐसा नहीं करते तो वे अपने कौल और ईमान के साथ धोखा करेंगे। ऐसे धोखेबाजो को कांग्रेस से बे-मुरव्वती के साथ निकाल बाहर करना होगा, उससे अधिक खतरा उन्हे अन्दर पाल रखने मे है। मुझे विश्वास है कि आप हिन्दुस्तानियत के लिए कांग्रेस की शुद्धता को कायम रखने मे रत्ती भर भी संकोच या भय नहीं खायेंगे। हिन्दुस्तानियत की शुद्धता और कांग्रेस की शुद्धता—दोनो एक ही बात है। इसके लिए हमे प्रत्येक खतरा उठाने के लिए तैयार रहना चाहिये, इसके लिए हम कितनी भी कुर्बानियाँ क्यों न करते जायें, वह थोड़ी ही रहेंगी।

इसी सिलसिले में हमे कांग्रेस और कांग्रेस सरकारों के बारीक भेद को भी समझ लेना चाहिये। कांग्रेस ने अपने कुछ प्रतिनिधियों को शासन सूत्र सँभालने के लिए नियुक्त कर रखा है। यदि इनमें कुछ दोष है भी तो केवल इसी हद तक कि हम अपने प्रतिनिधियो की कार्य्यवाहियों पर कड़ा नियन्त्रण नहीं रख रहे है। कांग्रेस सरकारो की कमजोरियो को लेकर हम सम्पूर्ण कांग्रेस को दोषी नहीं ठहरा सकते, कम से कम हम यह तो कह ही नहीं सकते कि कांग्रेस के उद्देश्य ही दोषपूर्ण हैं।

मैं कांग्रेस सरकारों की हिमायत नहीं कर रहा हूँ। मै स्वयं

भी उनसे असंतुष्ट हूँ। इसीलिए मैं बहुत पहले ही लिख चुका हूँ कि कांग्रेस सरकारों को ठीक रास्ते पर रखने के लिए कांग्रेस के संघटन को ही शुद्ध और सुदृढ़ बनाना होगा ताकि इन्हें (सरकारों को) कड़े नियंत्रण मे रखा जा सके। कांग्रेस संघटन का मतलब है कांग्रेस जन और इन कांग्रेसजनों से बनी हुई कांग्रेस कमेटियाँ।

इन बातों के अतिरिक्त मुख्य प्रश्न तो यह है कि आखिर आज चारों-ओर कांग्रेस से लोगों के इतना असंतोष क्यों उत्पन्न हो रहा है ? इसके दो बड़े कारण हैं:—

(१) कांग्रेस सरकारों की कमजोरियाँ। कांग्रेस सरकारें कमजोर क्यो पड़ रही है ? सबसे पहले तो यह कि सारा सरकारी ढाँचा वही अंग्रेजों की खड़ी की हुई चीज है जो देश के दमन और शोषण से ही पलती और बढ़ती रही है। उसी को लेकर कांग्रेस सरकारें इस समय कार्य कर रही हैं। गाड़ी वही है, केवल घोड़े बदल गए हैं। इसी लिए लुढ़क-लुढ़क कर, अटक-अटक कर, हचके खाते हुए चल रही है। सरकारी ढाँचे को बदले बिना काम चलेगा नहीं, परंतु अभी यह होता नहीं। इस ढाँचे को तोड़-फोड़ कर अपना नया ढाँचा बनाने के लिए कुछ प्रतीक्षा और करनी होगी। नीचे से ऊपर तक एक शुद्ध सरकारी ढाँचा खड़ा करने में समय लगेगा, कुछ और भी राजकीय शक्तियाँ प्राप्त करनी होंगी, समय और शिक्षा की आवश्यकता पड़ेगी। अभी तो कांग्रेस सरकारें अंग्रेजी गवरनरों के अधीन ३५ के भारत कानून के अनुसार ही कार्य कर रही हैं।

कुछ बातें ऐसी हैं जिनके लिए कांग्रेस क्या कोई भी सर-

कार विवश हो जायेगी। भोजन या ऐसी ही अन्य जीवनावश्यकताओ के प्रश्न को ही लीजिये। विदेशो से बराबर आयात हो नहीं रहा है, जो हो रहा है उसके विरुद्ध पूँजीपतियो का विश्व व्यापी कुचक्र चल रहा है, कृषि और व्यापार नष्ट किये जा रहे है, लाखो टन गल्ला साम्प्रदायिक दंगो मे जला कर खाक कर दिया गया। ऐसी दशा मे बेचारी आधी-अधूरी कांग्रेस सरकारे करे तो क्या करे ? आप अपना ही अलग-अलग हिसाब मत लगाइये। जरा सरकारी दिक्कतो को भी समझिये।

एक दूसरी बात भी है—हमे आज परमिट नही मिला, इसलिए कांग्रेस सरकार को कोसने लगे, आज हमारे एक आदमी को नौकरी नहीं मिली इसलिए कांग्रेस सरकार को निकम्मी कहने लगे। इसी प्रकार लोग छोटी-छोटी बात को लेकर कांग्रेस को बुरी साबित करने की चेष्टा कर रहे है। भाई, इन छोटे-छोटे रोजमर्रा की वैयक्तिक दिक्कतो को लेकर हम सम्पूर्ण कांग्रेस या कांग्रेस सरकारो को नही तौल सकते। तौलना चाहिये भी नहीं। कांग्रेस या कांग्रेस सरकारो के सामने इस समय देश की और भी बड़ी बड़ी समस्याएँ है जिन्हें इन छोटी-छोटी बातो से पहले हल करना होगा। फिलहाल हमे इन दिक्कतो को हँस-खेल कर झेल लेना चाहिये।

कुछ लोग कहते हैं आज मुसलमानो का काम जितनी आसानी से हो जाता है, हिन्दुओ का उतनी आसानी से नहीं होता। इसमे क्या देश भर मे फैली हुई साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार या सरकारी ढाँचे की ही कमजोरियों का दोष मुख्य नही है ? फिर आप अकेली कॉंग्रेस या कॉंग्रेस सरकारों पर ही क्यो पिल पड़ते है ?

आप यह हर्गिज न भूलें कि इस समय परिस्थितियाँ बड़ी ही विस्फोटक हैं। अंग्रेजों का रवइया ऐसा है कि भारत छोड़ने के पहले भारत में अनेकों देश द्रोही शक्तियों को जन्म देते जा रहे हैं। ब्रिटिश भारत या मुसलिम रियासतों में पाकिस्तानी शक्तियाँ खड़ी होती जा रही है। देश को रक्त-पात, अराजकता, और गृह-युद्ध के भँवर में फँस कर नष्ट-भ्रष्ट हो जाने से बचाने के लिए आप काँग्रेस या कॉंग्रेस सरकारों को कमजोर मत बनाइये। यथा सम्भव आप इन काँग्रेस सरकारो को हिन्दू-मुसलमान भावनाओ के प्रभाव में बँट कर निःस्वत्व हो जाने से बचाते चलिये।

(२) दूसरी बात है सचमुच काँग्रेस सरकारो का गलत तरीका। आज वे हिन्दू-मुस्लिम राजनीति या दीर्घ कालीन सुधारों में इस कदर फँस गयी है कि उन्हें नागरिक जीवन की आवश्यकताओं की ओर पर्याप्त रूप से ध्यान देने का अवसर ही नहीं मिल रहा है। वे चाहती है कि देश भर में इङ्गलैण्ड और अमेरिका के समान विशाल कारखाने खड़े करके देश को सम्पन्न बनाया जाय। परंतु कारखाने तो आज बनते नहीं, और लोगों का दुख भी नहीं दूर हो रहा है॥

इन सारी बातों के बावजूद हम देख रहे है कि हमारे सच्चे नेतृत्व और सुदृढ़ संघटन को आवश्यकता की पूर्ति के लिए कॉंग्रेस ही एक मात्र राष्ट्रीय संस्था है। उसी को लेकर हमें कार्य करना है। वही हमारी आजादी और एकता का साधन बन सकती है। उसकी कमजोरियों को दूर करके उसे सबल बनाइये न कि उसे बिल्कुल मिटा ही दीजिये।

—:०:—

३०

इस बात से कोई इन्कार नहीं कर सकता कि यदि देश का उद्धार हो सकता है तो केवल कॉंग्रेस के द्वारा। परंतु स्वयं कॉंग्रेस को देश के सन्मुख कुछ व्यावहारिक कार्य-क्रम रखना होगा। कुछ काम तो अवश्य हो रहा है, परंतु बिल्कुल आधे-अधूरे दिल से। नतीजा यह है कि कॉंग्रेस की वास्तविक शक्ति बढ़ने के बजाय घटती-सी जा रही है। अग्रसरता कॉंग्रेस के हाथ से निकल कर लीग के हाथ में जा पड़ी है। यदि कॉंगेस को जीवित रहना है तो इसे तुरत चेत जाना चाहिये। समय पाकर दशा अपने-आप ठीक हो जायेगी, यह बिल्कुल निकम्मी बात है। कॉंग्रेस का फर्ज है कि यदि देश की वह जिम्मेदारी लेती है तो देश को सही रास्ते पर ले चलना होगा, देश को शक्तिशाली और समर्थ बनाना होगा और देश की सुरक्षा की सम्पूर्ण व्यवस्था करनी होगी। इसके लिए एक विस्तृत आयोजन की आवश्यकता है और फिर उस आयोजन को विधिवत व्यवहार में लाने की आवश्यकता है।

सब से पहले तो कॉंग्रेस सरकारों को समझना होगा कि वर्तमान दंगों को देश की आर्थिक दुरावस्था से ही बल प्राप्त हो रहा है। उदाहरण के लिए आप वस्त्र व्यवसाय को ही लीजिये। मुसलमानों का एक बहुत बड़ा अंश मोमिन कहलाता है, मोमिन अर्थात् जुलाहे। मोमिन लोगों में अब भी राष्ट्रीय भावना विद्यमान है। वे कॉंगेस का साथ भी दे रहे हैं। परंतु अफसोस तो यह है कि बेचारे ये मोमिन ही सबसे अधिक परेशान है क्योंकि

सूत का अभाव तथा वस्त्रोत्पादन की दिक्कतों ने इन्हें लाचार कर दिया है, इनकी रोजी मारी गयी है। मोमिन जाति इस समय अशान्त और उद्विग्न है। इस अशान्ति और उद्विग्नता का लीग को भर-पूर लाभ लेने का मौका मिल रहा है। परंतु बात इन मोमिनों तक ही नहीं समाप्त हो जाती। वस्त्राभाव के कारण सारा देश विह्वल है। कॉग्रेस सरकारों को स्थापित हुए आज डेढ़ वर्ष हो गये, परंतु हमारे वस्त्र की समस्याएँ सुलझने के बजाय उलझती ही गयी है। नतीजा यह हो रहा है कि हिन्दू और मुसलमान, दोनों आजिज हैं, आतुर है, काँग्रेस सरकारों से उनका विश्वास उठता जा रहा है, वे काँग्रेस से विमुख हो रहे हैं। मतलब यह कि काँग्रेस हिन्दू और मुसलमान, दोनों को खोती जा रही है। इस प्रकार काँग्रेस की शक्ति का भीषण ह्रास हो रहा है। इन व्याकुल परिस्थितियों मे कोई ठोस कार्य नहीं किया जा सकता। अशान्त और आतुर प्राणियों को लेकर शत्रु का सामना करना असंभव है। विश्व-व्यापी जारशाही का पतन रूसी सेनाओं के पतन से प्रारम्भ हुआ। रूसी सेनाओं का पतन जीवनावश्यकताओं के अभाव के कारण हुआ था। अब आप ही समझ सकते हैं कि यह वस्त्र की समस्या काँग्रेस को किस खंदक पहुँचा देना चाहती है।

कुछ नेताओं ने, या स्वयं कॉग्रेस सरकारों ने, लोगों को थोड़ा बहुत सूत दिलाने की चेष्टाएँ अवश्य की हैं, परंतु इससे क्या इतने बड़े देश का सवाल हल हो सकता है? हर्गिज नहीं। अतः आवश्यक है कि देश को चिंता मुक्त करने के लिए, यंत्र को चल देने के लिए, निराश और विमुख होकर काँग्रेस से दूर जा रहनेवालों को पुनः काँग्रेस और परिणामतः राष्ट्र की एक सुदृढ़

शक्ति बना देने के लिए, कॉंग्रेस और कॉंग्रेस की सरकारें तत्परता पूर्वक, ईमानदारी के साथ वस्त्र की समस्या को सबसे पहले हाथ में ले।

परंतु यह सब होगा कैसे ? इङ्गलैण्ड और अमेरिका से कपड़े मँगा कर बँटवाने से ? अव्वल तो इतनी पर्याप्त मात्रा में बाहर से झट-पट कपड़े मिल जाना ही असंभव है। इसके अतिरिक्त देशी मिलें भी कोयले, मजदूर समस्या तथा विदेश से आने वाले कल-पुर्जों के अभाव अथवा अन्य अनेक कारणों से हिन्दुस्तान की वस्त्र समस्या को सम्पूर्णतः हल करने मे असमर्थ सिद्ध हो रही हैं। देश में झट-पट नये कारखाने खड़ा कर देना भी असम्भव है। मिलें बन कर चलने भी लगें फिर भी मोमिन लोगो की समस्या तो उनसे हल होती ही नही।

ऐसी दशा मे हमारे लिए एक मार्ग रह जाता है चर्खा और कर्घा। चर्खो द्वारा जुलाहो की सूत समस्या आसानी से हल की जा सकती है। चर्खा-संघ की व्यावहारिक सफलता इसके लिए एक सुन्दर प्रमाण है। चर्खा-संघ ने जो कुछ भी किया है वह अधिकांशतः अपने ही बल पर। यदि कॉंग्रेस सरकारें भारत की वस्त्र समस्या को चर्खे द्वारा हल करने पर उतर आयें तो देश में एक नयी जान, एक नयी शक्ति उत्पन्न हो जाये। यह कार्य 'गॉंव हुकूमत बिल' से भी अधिक महत्वपूर्ण है। इसमें समाज का पुनर्निर्माण तथा हिन्दू-मुस्लिम समस्या का अचूक हल छिपा हुआ है। देश की आर्थिक एवं साम्प्रदायिक समस्याओ के तात्कालिक हल के लिए कॉंग्रेस सरकारो को अपने समाजवादी सपनो को फिलहाल छोड़ कर तुरत चर्खे और कर्घे को हाथ मे उठा लेना

चाहिये। कॉंग्रेस जो मुसलमानों के साथ "मास कॉन्टैक्ट" अर्थात् जन सम्पर्क की रट लगाती आ रही है, उसका शुद्धतम रूप चर्खे और कर्घे के द्वारा स्थापित हो सकता है। घर-घर चर्खे और गाँव-गाँव कर्घे स्थापित करके हम हिन्दू-मुसलमानों को व्यावहारिक सम्पर्क में खड़ा कर देंगे।

वस्त्र के पश्चात भोजन की भी समस्या इसी दृष्टिकोण से हाथ मे ली जा सकती है। आज चारों ओर अन्न के लिए हाहाकार मचा हुआ है। निस्संदेह 'ग्रो मोर फूड' (अधिक अन्न उत्पन्न करो) का प्रचार हो रहा है, परंतु खाद्याभाव में कोई विशेष अन्तर नहीं दीख रहा है। गाँवों मे फसलें कटती हैं और सरकारी लोग अन्न वसूलने पहुँच जाते हैं। अन्न के प्रश्न को हल करने का यह तरीका नहीं है। इस प्रश्न को ग्राम पञ्चायतों द्वारा ही हल करना चाहिये। गॉव के पूरे भोजन भर को छोड़ कर ही गॉव वालो से अन्न मांगना चाहिये। यह मॉग व्यक्तिगत रूप से नहीं, पञ्चायतों से ही की जानी चाहिये। एक निश्चित हद कायम कर देनी चाहिये और उसके ऊपर पंचायतों को अन्न सरकार के हवाले कर देने के लिए वाध्य करना चाहिये। गॉव की भोजन समस्या हल करने का यही एक मात्र मार्ग है। आज हम देख रहे हैं कि गवों में शहरों से भी अधिक अन्न की मँहगी है। जिन लोगों के पास अपने खेत नहीं हैं या इतने थोड़े हैं कि खाने भर को पूरा अन्न नहीं होता, वे भूखों मर रहे हैं। गॉव की भोजन समस्या हल करना वर्तमान साम्प्रदायिकता को नष्ट करने का प्रथम उपाय है। कॉंग्रेस तथा सरकार को इस प्रकार आत्म-तृप्त जनता का वांछित बल प्राप्त हो जाता है।

परंतु इसी के साथ यह भी आवश्यक हो जाता है कि पंचायतों को अधिकाधिक अन्न उत्पन्न करने के लिए उन्हें साधन-युक्त भी बनाना होगा। ये सारे काम केवल 'गॉव हुकूमत बिल' पास कर देने से नहीं होगे। सरकार को इसमे सक्रिय भाग लेना होगा। अन्न के आधार पर पंचायतों को सजीव और सक्रिय बना देने से गॉव वालो का पारस्परिक सम्बन्ध दृढ़ होगा और परिणामत. साम्प्रदायिक द्वेष मे कमी होगी।

एक बात ध्यान मे रखने की यह है कि यदि हम पंचायतों को केवल बाहरी मालों की "डिस्ट्रब्युटिंग एजेन्सी" (वितरण शाखाएँ) बनाये रखेगे तो पंचायत वालो मे पारस्परिक ईर्ष्या और द्वेष उत्पन्न होगा। प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने स्वार्थ को देखेगा और उन सब मे अनिवार्यत: संघर्ष शुरू हो जायेगा। अतएव सिद्धान्त यह होना चाहिये कि गॉव की आवश्यकताओं की पूर्ति गॉव वाले यथा सम्भव स्वयं करे। उन्हें शहर, सरकार या लाइसेन्सदारो की ओर मुंह उठाये नही बैठे रहने देना है। उदाहरण के लिए मिट्टी के तेल को ही लीजिये। आज गॉवों में मिट्टी के तेल के अभाव मे चिराग नहीं जल रहे है। सुना है परमिटो पर तेल दिलाने के लिए स्वयं कांग्रेस-जन गॉव वालों से घूस ले रहे है। शहरो से जो मिट्टी का तेल भेजा जा रहा है वह पूरा नहीं पड़ता। चारो ओर असंतोप फैला हुआ है। चाहिये यह कि गॉवों में सरसो या रेंड़ी पैदा करायी जाये और वहीं घानियों द्वारा तेल पैदा कराया जाये। इस प्रकार लोगों को उद्योग-धन्धे भी मिलेगे और उनकी जीवनावश्यकताएँ भी पूरी होंगी। स्वावलम्बन और सम्पन्नता का उदय होगा।

आज के दंगों मे हम देख रहे है कि उत्पादन और व्यापार के साधनों पर विशेष रूप से आघात हो रहा है। बाहर से माल का आयात-निर्यात ठप हो जाया करता है। ऐसी दशा में गाँवों को स्वावलम्बी बनाने का अर्थ है कि हम प्रजा की रक्षा कर रहे हैं। यह रक्षा सेना और सिपाहियों को दौड़ाते रहने से कम महत्वपूर्ण नहीं है।

इसी प्रकार अन्य हजारों बातें हैं जिनके द्वारा हम अनुमान कर सकते है कि स्वतंत्र और एक बनाने के लिए कैसे नेतृत्व, कैसे संघटन और कैसे कार्य-क्रम की आवश्यकता है। यदि हमें सचमुच कुछ करना है तो हमें सचमुच जनता के जीवन को हाथ मे लेना होगा। यह नहीं कि हम मुस्लिम लीग की भयोत्पादक तैयारियों की आलोचना-प्रत्यालोचना करने में ही समय व्यतीत करते जायें।

मै देख रहा हूँ कि लोग घबड़ाये हुए से हैं; कह रहे हैं कि "हाय-हाय, पाकिस्तानी लोग सीमा और पंजाब, आसाम और बङ्गाल, दक्षिण में हैदराबाद से हिन्दुस्तान को घेर कर मार डालना चाहते हैं," कह रहे हैं कि "जगह-जगह लीगियों की सबल तैयारी हो रही है, हथियार बन रहे है।" परंतु मैं इन लोगों से पूछता हूँ कि आप इन पाकिस्तानी तैयारियों के खिलाफ स्वयं कौनसी तैयारी कर रहे हैं? मै मान लेता हूँ कि लोगों से चर्खा छीन कर आप उनके हाथ में बन्दूकों के कुन्दे पकड़ा देंगे। परंतु क्या आपको मालूम है कि उन बन्दूक पकड़ने वालों के दिमाग और पेट की क्या दशा है? क्या आपने सोचा है कि उन बन्दूक धारी स्वयं-सेवकों को रसद भी चाहिये, सामाजिक बल भी

चाहिये, पारिवारिक निश्चितता भी चाहिये ? लीगियों को तो पाकिस्तानी बिहिश्त या 'नैशनल गार्ड्स' के हथियारों, पौशाकों या तन्ख्वाहों का प्रलोभन दिया जा रहा है, परंतु हिन्दुस्तानियों का तो वही अपना पुराना हिन्दुस्तान रहेगा। इन्हें कौन-सा प्रलोभन आप दे रहे हैं ? कहने का मतलब यह कि हिन्दुस्तानियों को झूठे स्वप्न नहीं, जीवन के सच्चे सुख और सच्ची व्यवस्था का ही सबसे बड़ा प्रलोभन हो सकता है, उसी से उन्हें अपनी स्वतंत्रता और सम्पन्नता पर आक्रमण करनेवालों के विरुद्ध लोहा लेने के लिए प्रेरणा मिल सकती है। गत युद्ध ने ठीक यही बात जर्मनी के विरुद्ध रूसियों के पक्ष में एक अभेद्य दीवार बनी थी।

देश के वर्तमान साम्प्रदायिक दंगों मे सेना से मुक्त सैनिकों का स्पष्ट भाग नजर आ रहा है। इस समय हम कोई भी योजना बनायें यदि इन बेकार सैनिकों को किसी रचनात्मक कार्य मे व्यस्त नहीं कर रखते तो मुझे शंका है कि देश मे शीघ्र शांति और सुव्यवस्था स्थापित हो सके।

मेरी अपनी सलाह है कि इन सैनिकों को सड़क और गाँवों के पुनर्निर्माण तथा ग्रामोद्योगों में भिन्न-भिन्न कार्यों की विभिन्न एवं सुनिश्चित मात्रा के बदले कम से कम उनकी जीवनावश्यताओं भर के लिए पैसे देकर तुरंत कार्य में लगा देना चाहिये। यहाँ हिन्दू-मुसलमान, आजाद हिंद या गैर आजाद हिंद का भेद नहीं। ध्यान केवल यह रहे कि बेकार सैनिक सकार बने और उनके निश्चित कार्य या उत्पादन के लिए उन्हें निश्चित रकम मिलती रहे। इन कार्यों मे नगर निर्माण और ग्रामोद्योगो को ही प्रामुख्य मिलना चाहिये। यदि यह व्यवस्था ग्राम-पंचायतों द्वारा करायी

जाय तो बड़ा ही अच्छा हो। लेन-देन का आधार सहयोगी सिद्धान्तों पर हो तो सुन्दर परिणाम मिलेगा।

इस प्रकार यही नहीं कि हम विघातक शक्तियो को रचनात्मक साँचे में ढाल देंगे, बल्कि यह भी कि सैनिकों और नागरिकों से पारस्परिक सम्पर्क स्थापित करके हम साम्प्रदायिक विष को 'मार' (antidote) भी तैयार कर देंगे।

रचनात्मक कार्य के सम्बन्ध में कॉंग्रेस के रचनात्मक-विभाग, स्वराज्य-भवन, प्रयाग से परम उपयोगी सहायता और सलाह ली जा सकती है।

मैंने इस पुस्तक के अंत में, इसका अगला अध्याय "पुस्तक लिख चुकने के पश्चात" के नाम से जोड़ा है। वहाँ मैंने स्वयं-सेवक दल की आवश्यकता का भी उल्लेख किया है। वहीं हिंसा और अहिंसा के पहलुओं को भी समझा जा सकेगा, परंतु यहाँ इतना तो कह ही देना है कि अब कोरे मजहबी नारे लगा देने और तलवार की धार दिखला देने से ही देश स्वतंत्र और सुरक्षित नहीं हो जायेगा। अब तो एक सच्चे कार्य-क्रम को लेकर कर्म-क्षेत्र में उतरना पड़ेगा।

मैंने कहा है कि कॉंग्रेस सरकारें है क्या? कॉंग्रेस के कुछ चुने हुए प्रतिनिधि ही तो हैं? कॉंग्रेस सरकारों में जो भी दोप हैं, उनके लिए मैं स्वयं कॉंग्रेस को उत्तरदायी समझता हूँ। इसी लिए मैंने कॉंग्रेस सरकारों की कार्य्यवाहियों की आलोचना करना व्यर्थ समझा है और स्वयं कॉंग्रेस को ही निर्दोप और सबल बनने की सलाह दी है। मैंने कहा है कि कॉंग्रेस को निर्दोप और सबल बन कर अपनी सरकारों को कड़े नियंत्रण में रखना होगा। सारे

रोग की यही मूल औषधि है। कॉंग्रेस सरकारों की एक-एक बातें की अलग-अलग हम कब तक आलोचना करते रहेंगे? हम कब तक देखते रहेंगे कि कॉंग्रेस सरकार ने यह बात गलत की, यह रास्ता गलत अख्तियार किया। हम तो इन सरकारों की सारी नीति और सारी हरकतों को सुशासित और सुव्यवस्थित कर देना चाहते हैं। हम जानते हैं कि किसी नीति या किसी बात की व्यावहारिक सफलता उसके कार्य-क्रम पर ही निर्भर करती है और इसी लिए मै कहता हूँ कि कॉंग्रेस को चाहिये कि तुरत अपनी सरकारो को रचनात्मक 'प्रोग्राम' को तत्परता पूर्वक कार्य रूप देने के लिए वाध्य कर दे। इसी मे पाप का प्रायश्चित और पुण्य का संचय, दोनो है। यही कॉंग्रेस तथा कॉंग्रेस सरकारों की नीयत की खरी कसौटी है।

अंत मे यह भी कह देना आवश्यक है कि ४८ के पश्चात, जैसा कि कई लोग सोचते है; कॉंग्रेस विघटित नहीं होने जा रही है। सम्पूर्ण स्वतंत्रता मिल जाने पर भी देश को सुखी और सम्पन्न बनाने के लिए कॉंग्रेस को जीवित रहना होगा। कॉंग्रेस के भावी जीवन का रास्ता इस वर्तमान 'प्रोग्राम' से ही शुरू होता है।

—:o:—

पुस्तक लिख चुकने के पश्चात्

पुस्तक लिख चुकने के पश्चात् कुछ घटनाएँ घटी है, कुछ विचार आये है, कुछ समाचार मिले हैं जिन्होंने मूल विषय के पुष्टीकरण में सहायता प्रदान की है। मैं यहाँ उनमें से कुछ-एक का फुटकर रूप से उल्लेख कर देना आवश्यक समझता हूँ ताकि सारी परिस्थिति से हम परिचित रहें और अपना मार्ग निर्धारित करने में हमें सुविधा हो।

(१) मन्दिर—प्रसिद्ध समाजवादी नेता, साने गुरु ने पंढरपुर के विठोबा मन्दिर में हरिजन प्रवेश के लिए सफलतापूर्वक आमरण अनशन किया है। (११-५-४७)। मन्दिर प्रवेश से समाजवादी कार्यक्रम का सम्बन्ध स्थापित करने मे यह एक हर्ष-प्रद उदाहरण है। समाजवादी दल को इस पर ध्यान देना होगा।

(२) पीस कॅमिटी—बरेली के जिला पीस कॅमिटी के मन्त्री साम्प्रदायिक विष-वमन के अभियोग में गिरफ्तार कर लिए गये हैं (९-५-४७)। इस समाचार को पीस कॅमिटियों के सम्बन्ध में मेरी पंक्तियों के साथ रखकर पढ़िये और समझिये।

जिन्ना साहेब था जिसको भूखे-प्यासे, दीन-दरिद्र लोगों के दुख का सचमुच ख्याल है, उसे चाहिये कि वालकेश्वर या चौरंगी को आलीशान इमारतों से निकलकर रोगी और मुहताज लोगों के जीवन में समा जाये। अब कोरी पीस कॅमिटियों से काम नहीं चलेगा। बङ्गाल और पंजाब में प्रभावशाली लोगों की

पीस कँमिटियाँ बनी हुई है परन्तु आग बुझती नहीं दीख रही है। इस समय झूठे फतवों की नही, सच्चे फकीरो की आवश्यकता है।

(३) पाकिस्तान—मैंने पाकिस्तान के विभिन्न पहलुओ पर विचार किया है। इस सम्बन्ध में जमायतुल-उलमा की केन्द्रीय समिति के अध्यक्ष पद से भाषण करते हुए (९-५-४७) मौलाना मदनी ने एक बार पुनः हमारा ध्यान निम्नलिखित बातो की ओर खींचा है—

(अ) कांग्रेस के जन्म (सन् १८८४ ई०) के बहुत पूर्व से ही (१८५७ ई०) हिन्दू-मुसलमानों ने हिन्दुस्तान की आजादी के लिए एक साथ खून बहाया है।

(ब) हिन्दू-मुसलमानों का इतिहासिक विरोध अंग्रेजो का ही कुकृत्य है जिसे इतिहास की झूठी और गढ़ी हुई पुस्तकों से ही बल दिया गया है।

(स) पाकिस्तान हिन्दू या हिन्दुस्तान के लिए ही नही, मुसलमानों की एकता के लिए भी घातक है। भारत के ९ करोड़ मुसलमान हिन्दुस्तान और पाकिस्तान मे लगभग आधे-आध बँट जायेंगे।

जिना साहेब ने इस सम्बन्ध मे जन-परिवर्तन की सलाह दी है। क्या आप सोचते हैं कि ४-५ करोड़ मुसलमानों को सिन्ध और बंङ्गाल जैसे जिना साहेब के पाकिस्तानी सूबे अपनाकर उनके सुख-समृद्धि की व्यवस्था करने को तैयार है ? वही बङ्गाल जो अपने बिहारी शरणार्थियों की भी व्यवस्था नहीं कर सका। वही रेगिस्तानी सिन्ध जो केन्द्र का ही मुँह देखता आया है।

स्मरण रखने की बात यह है कि बङ्गाल को पूर्वी-पश्चिमीय भागों में बाँट कर हिन्दू और मुसलमानों को अलग कर देने की बात चल रही है। फिर तो वङ्गाल का रहा-सहा सामर्थ्य और भी नष्ट-भ्रष्ट होने को दीख रहा है। ऐसी दशा में लीग का पूर्वीय पाकिस्तान, जैसा कि डा० राममनोहर लोहिया (पूना ९-५-४७) कहते हैं, छः महीने भी नहीं चल सकता।

(द) इसी लिए वङ्गाल के विभाजन की माँग से परेशान होकर लीग के प्रान्तीय सरदार मियाँ सुहरावर्दी कहते हैं हिन्दू-मुसलमान, एक हैं, सदियों से साथ जिये-मरे हैं। अतः वङ्गाल अविभाज्य है।

सुहरावर्दी साहेब ने साफ-साफ कह दिया है (११-५-४७) कि वङ्गाल को हिन्दुस्तान और पाकिस्तान, दोनों से सम्पूर्णतः स्वतन्त्र और अलग कर देना चाहिये क्योंकि वङ्गालियों (हिन्दू और मुसलमान दोनों) को दो राष्ट्र के सिद्धान्त में न तो विश्वास है और न यह मान्य ही है।

शरत् बाबू भी वङ्गाल के विभाजन के विरुद्ध हैं।

किसी निर्णय पर पहुँचने के पूर्व दो-तीन प्रश्नों पर विचार कीजिये—

(i) बङ्गाल ने, जैसा कि सिन्ध ने भी, केन्द्र से आर्थिक सहायता ली है और लेता रहा है। केन्द्र से अलग होकर पाकिस्तान में मिल जाने पर, यह सहायता नहीं मिलेगी। फिर ?

(ii) केन्द्र से अलग और पाकिस्तान से भी अलग, सम्पूर्णतः स्वतन्त्र हो जाने पर पाकिस्तानी सहायता से भी हाथ धोना पड़ेगा।

(iii) यदि भारत का हिन्दुस्तान और पाकिस्तान मे बटवारा हुआ और परिणामत: बङ्गाल को हिन्दू-मुस्लिम भागों मे बाँट दिया गया तो बेचारे आधे पाकिस्तानी बङ्गाल की क्या दशा होगी ?

(iv) बङ्गाल यदि बिल्कुल स्वतन्त्र राज बन जाता है, जैसा कि बङ्गाल को विभाजन से बचाने के लिए चेष्टाएँ हो रही है, तो केन्द्र से उसका जो कुछ भी सम्बन्ध रहे, हिन्दुओ को सन्तुष्ट रखने के लिए कैसे भी प्रयत्न किये जायें, एक बात तो होगी ही और वह यह कि जिना का पाकिस्तानी घेरा कमजोर अवश्य पड़ जायगा। जमायतुल-उलमा के प्रधान मन्त्री मौलाना हफीजुर्रहमान ने पाकिस्तान को बिल्कुल समाप्त कर देने के लिए बङ्गाल और पंजाब के हिन्दू और मुसलमानों को एकता के सूत्र में बाँध कर, इन दोनों प्रान्तों को सम्पूर्णत: स्वतन्त्र राज बना देने की सलाह दी है।

परन्तु दूसरी ओर बङ्गाल के विभाजन के विरुद्ध, बङ्गाल को स्वतन्त्र राज बनाने की चेष्टाओं को एक प्रभावशाली दल लीग और अंग्रेजों का सम्मिलित षड्यन्त्र बताता है। बङ्गाल के प्रभावशाली हिन्दू नेता डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने साफ-साफ कह दिया है कि स्वतन्त्र बङ्गाल, समाजवादी प्रजातन्त्र, इत्यादि सारी बातें हिन्दुओं को धोखा देने के लिए लीगी चाल है। पाकिस्तान के किसी भी रूप मे स्थापित होने पर बङ्गाल को हिन्दू और मुस्लिम प्रान्तों मे बाँटना ही पड़ेगा। स्वतन्त्र बङ्गाल की प्रस्तावना को वे राष्ट्रीयता के विरुद्ध बताते है।

(४) मुस्लिम लीग और हिंसक तैयारी— काशी के दंगे के सम्बन्ध मे खबर थी कि लीग वालों ने मोटर लारी खरीदी है,

हथियार इकट्ठा किये हैं, तथा पठानों के आगमन का भी समाचार था।

परन्तु अब इस सूचना की आश्चर्यजनक पुष्टि प्रान्तीय असेम्बली के अध्यक्ष एवं देश के वयोवृद्ध माननीय नेता श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन ने की है। टण्डनजी अपने अकाट्य प्रमाणों के बल पर कहते है कि प्रान्त मे लीग बड़ी तेजी से हथियार इकट्ठा कर रही है तथा जन-बल का चिन्ताजनक रूप से संघटन कर रही है। बाहर से पठानों को मजदूर या ठेकेदारों के रूप मे लाया जा रहा है।

इसी प्रकार दिल्ली को पाकिस्तानी सूबा बना देने की माँग के साथ ही दिल्ली के टेलीफोन को लीगियों के हाथ में सौंपा जा रहा है और कुछ पत्रों ने इसे भयंकर आशंका का कारण और "सीधे कदम" (डाइरेक्ट एक्शन) की प्रारम्भिक तैयारी माना है।

इस समय (२८-५-४७) हवा बड़े जोरों से गर्म है कि संयुक्तप्रांत मे भी लीग और बंगाल पंजाब के समान ही रक्तपात और बर्बरता पर उतारू है। अमृत बाजार पत्रिका ने कांग्रेस मंत्रिमण्डल को चुनौती देकर कहा है कि प्रयाग मे कैसी तैयारियाँ और अफवाहें चल रही हैं, मंत्रीगण प्रयाग मे जाकर स्वयं देख सकते हैं। गुड़गाँव में मेवाती मुसलमानों का सशस्त्र एवं रण-सज्जित आक्रमण इन्हीं बातों का सूत्रपात कर रहा है।

निस्संदेह परिस्थितियाँ गंभीर हैं और हमें इनका दृढ़ता पूर्वक सामना करना होगा। अब हमें इन बातों को कांग्रेस मंत्रियों की नेक-नियती पर नहीं छोड़ बैठना है। केवल नेक-नियती से क्या हुआ है हम खूब जानते हैं। इसी लिए हम समझ सकते

हैं कि कोरी नेक-नियती से आगे क्या होगा। अतः हमें अब अपनी सरकारों की लगाम को अपने हाथ में लेना होगा।

भारत आजाद होना चाहता है और आज़ादी के दुश्मन भरपूर अपनी कुचेष्टा मे तल्लीन हो गये हैं। उनके लिए यह अंतिम मौका है, वह किसी पाप-पुण्य से बाज नहीं आयेंगे। अतएव आवश्यक है कि हम भी इनके दुष्प्रयासो को सदा के लिए समाप्त कर दे। परन्तु यह जबानी जमा-खर्च से नहीं, काम करने से ही होगा।

मैं बहुत सी सलाहे दे चुका हूँ। महल्ले कमिटियो की भी योजना आपके सामने रखी है और उन कमिटियो के प्रसंग मे पहरेदार और स्वयं सेवकों का भी उल्लेख किया है। आप इन दोनों विषयों पर सतर्क और सावधान होकर विचार करे। जो कुछ भी आप करें योजना पूर्वक करें।

परंतु पहरेदार या स्वयं सेवक दल—इन दोनों को मुकम्मल ट्रेनिंग देनी होगी,—सशस्त्र भीड़ का क्योकर सामना करना, आतताइयों के बीच घिरे हुए प्राणियों की रक्षा करते हुए क्योंकर सुरक्षित स्थान पर पहुँचा देना, पेट्रोल आदि परम दाहक पदार्थों से चलनेवाले अग्निकाण्डो को कैसे विनष्ट करना, इत्यादि ऐसी अनेको बातो है जिनकी नियमित रूप से शिक्षा मिले बिना काम नहीं चलेगा।

प्रत्येक क्षेत्र मे एक-एक समर्थ स्वयं सेवक दल खड़ा कर देना चाहिये। हमे कार्य करना है, मजाक नहीं। यहाँ झण्डे लेकर सड़को पर फेरी लगाने की आवश्यकता नही है, पशुबल पर विजय प्राप्त करने की बात है। वैसी ही आपकी तैयारी, वैसा

हीं आप में सामर्थ्य होना चाहिये। इन तैयारियों में अधिक दिन लगाने की आवश्यकता नहीं। समय तेजी से बीत रहा है, काम भी उसी रफ्तार से करना होगा।

एक बात और समझ लेने की है। अंग्रेजों की किसी घोषणा से ही यह दंगे समाप्त हो जायेंगे, सो बात नहीं। इनके पीछे अधिकार प्राप्ति की लिप्साएँ छिपी हुई है। अब तो ये दंगे आये हैं, इन दंगो के लिए व्यापक संघटन खड़ा किया गया है—यह सब "छू-मंतर" से नहीं समाप्त होगा। बहुत दिन से आप लोग आजादी के नारे लगाते आये है। आजादी आ रही है, परंतु उसकी बलाएँ आगे ही आगे आ पहुँची हैं। स्मरण रहे कि इन बलाओं को यथा स्थान भेज चुकने के पश्चात ही आप आजादी का स्वागत कर सकेंगे।

इन बातों को यदि आप नहीं समझ सकते तो आपके हाथ में बन्दूक की नली पकड़ा देने से भी आप कुछ नहीं कर सकेंगे। यह कोरी दलील नही, बिल्कुल अनुभव की बात है।

सुनिए! इधर मैंने देखा है कि हिन्दू मुसलमनों के दंगों के साथ ही अनेकों लोग सिक्ख धर्म में प्रवृत्त होकर कृपाण धारण करने लगे हैं। तीन चार दिन हुए मैं एक स्थान से गुजर रहा था। लोग प्रातःकालीन कुल्ला-दातुन के लिए एकत्र थे। उनमें से कई लोग इन नये सिक्खों को लक्ष्य करके मजाक उड़ाते हुए कह रहे थे—"ये सब घास फूस है। नयी बस्ती में दाढ़ी और जटा बढ़ाये हुए एक दर्जन से ऊपर सिक्ख थे। हमला होते ही अपनी तलवारों को पकड़े हुए ऐसा भगे कि उनका फिर कहीं पता ही नहीं लगा।"

सुना आपने ? कुछ समझ में आया ? केवल हथियार-हथियार चिल्लाने से आप बहादुर नहीं बन जायेंगे। बहादुरी के लिए दिल चाहिये।

(५) मुस्लिम रियासतें और पाकिस्तान—मैं देशी रियासतों में पाकिस्तानी चक्र का उल्लेख कर चुका हूँ। इनमें निजाम और कलात के सम्बन्ध मे विशेष रूप से सावधान रहने की आवश्यकता मालूम हो रही है।

निजाम पुनः अपने पुराने वैभव का स्वप्न देखने लगे है। १६ मई '४६ की ब्रिटिश घोषणा से उन्हें प्रोत्साहन भी मिल रहा है। पहले तो अंग्रेजों की प्रभु-सत्ता समाप्त होते ही यह भारत सरकार से सम्पूर्णतः स्वतंत्र राज बन जाने की चिंता मे है

परन्तु समझने की बात यह है कि निजाम राज में हिन्दू प्रजा का ही बहुमत है। हिन्दू प्रजा कभी पाकिस्तान के पक्ष में नहीं हो सकती। आज भले ही निजाम को पाकिस्तान का अङ्ग बना दिया जाये, शीघ्र ही इस दशा में परिवर्तन होगा।

भारत की स्वतन्त्र एकता स्थापित करने मे हमे निजाम रियासत पर विशेष रूप से ध्यान रखना होगा।

उसी प्रकार कलात की रियासत भी ब्रिटिश-प्रभु सत्ता से स्वतंत्र होकर अंग्रेजो को अपने बेंचे हुए क्षेत्र पुनः वापस माँग रही है। इस क्षेत्र मे क्वेटा का सैनिक अड्डा भी है। कलात के पीछे भी लीगी प्रभाव कार्य कर रहा है, इसे हम जानते है। और इसी दृष्टि से हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के सैनिक सूत्रो के पारस्परिक सम्बन्ध को भी हमे समझना होगा।

प्रजा मण्डलों को इस दिशा में रत्ती भर भी शिथिलता नहीं

दर्शानी चाहिये। जय प्रकाश जी ने ठीक ही कहा है कि हमारी लड़ाई का अन्तिम मोर्चा साम्प्रदायिकता और रियासतों के डोड़ों पर ही स्थापित होगा।

एक नयी चाल—इधर वार-बार सुनाई पड़ रहा है कि बङ्गाल और पंजाब के विभाजन अथवा सीमा प्रान्त के पाकिस्तान या हिन्दुस्तान में रहने के प्रश्न पर सम्बद्ध क्षेत्रों में मत गणना होनी चाहिये।

बङ्गाल और पंजाब का प्रश्न बिल्कुल निराला है। यहाँ हिन्दू और सिक्खों का अपना बहुमत क्षेत्र है और ये लोग लीगी साम्प्रदायिकता का कटु अनुभव कर चुके है। यदि निर्णय सम्बद्ध प्रान्तों के सम्बद्ध क्षेत्र के बहुमत पर किया गया तो परिणाम निश्चित ही है। मत गणना का दूसरा कोई रूप हो भी नहीं सकता, अर्थात् यह नहीं कि मुस्लिम बहुमत प्रान्तों की कुल मत गणना पर हिन्दू या सिक्ख प्रदेशों का भाग्य निश्चित किया जाय।

परन्तु सीमा प्रान्त का प्रश्न इन दोनों से भिन्न है। वह मुस्लिम बहुमत प्रान्त है और मुस्लिम लीग के पाकिस्तानी घेरे में रहना नहीं चाहता। उधर अंग्रेजों की सारी शक्ति, गजनी तक विभाग का सम्पूर्ण षड़यन्त्र, लीग को सारी बर्बरता और सारा दुष्प्रचार—सारा प्रतिक्षण जी तोड़ कर इस चेष्टा में हैं कि पठानों की राष्ट्रीय भावना और स्वातन्त्र्य वृत्ति को साम्प्रदायिकता के विषैले साँचे में ढाल दिया जाय। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के प्रश्न को लेकर ही यहाँ चुनाव लड़ा जा चुका है और पासा पाकिस्तान के विपक्ष में रहा था। परन्तु आज सारी शक्तियां

राष्ट्रीयता के विरुद्ध उलट पड़ी हैं। ऐसे अशान्त वातावरण में वहाँ कोई सही मत गणना हो भी कैसे सकती है? जब तक अंग्रेजी गवर्नर और अंग्रेजी अफसर हटा न दिये जायें, जब तक वर्तमान राजनीतिक विभाग को हटा न दिया जाय, किसी सच्ची मत गणना की सम्भावना नहीं। ऐसी मत गणना का प्रस्ताव रखना या उसे स्वीकार करना सरासर अनुचित होगा।

इसके अतिरिक्त मुख्य बात तो यह है कि मत गणना होगी किस बात के लिए? पाकिस्तान के लिए? कैसा पाकिस्तान? उसकी सीमाएँ क्या होंगी? उसकी आर्थिक रूप रेखा क्या होगी? राजस्व, रेल, तार, हवाई जहाज, सेना इत्यादि का जब तक स्पष्ट चित्र न हो, हम जनता से किस बात के लिए मत माँगे? पाकिस्तान का स्पष्ट चित्र खड़ा किये बिना पाकिस्तान के लिए मत माँगना अन्याय ही नहीं, एक भयंकर मजाक होगा।

अतः हमे इन मत गणनाओ के प्रश्न पर सुदृढ़ और सावधान रहना चाहिये।

भारतीय सेना—धीरे-धीरे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का रूप निखरता आ रहा है। पाकिस्तान का अर्थ यदि मुसलमानों का, हिन्दुस्तान से बिल्कुल अलग, अपना स्वतन्त्र राज है तो इसका यह भी अर्थ होता है तो एक देश का निवासी दूसरे देश की सेना मे भरती नहीं हो सकता। इसका मतलब यह कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की दो अलग-अलग सेनाएँ होगी जिसमे अपने ही देश के निवासी सैनिक बन सकेंगे। इस प्रकार भारत की वर्तमान सेना को दो टुकड़ो मे बाँट देना होगा,—पञ्जाब के मुसलमान पाकिस्तानी सेना मे चले जायेंगे तो सिक्ख

आदि हिन्दुस्तानी सेना में। इस प्रकार जिना साहेब को यह भी सोचना होगा कि इतनी बड़ी सेना रखने का उनमें सामर्थ्य है ?

दूसरी बात—सेना के विभाजन मे देश एवं देशवासियों के आधार पर, गुण और साधनों का अधिकांश भाग हिन्दुस्तान के हाथ लगेगा तो पाकिस्तान को सिपाही ही सिपाही हाथ लगेंगे। इन सिपाहियों को खूराक ही नहीं, अफसर और सञ्चालक भी ढूंढ़ने पड़ेंगे।

क्या जिना साहेब ने पाकिस्तान के इन पहलुओं पर विचार किया था ?